कुरुक्षेत्र के संस्कृत साहित्यकारों की पाण्डुलिपियों का

सर्वेक्षणात्मक अध्ययन

(KURUKṢETRA KE SAṀSKṚTA SĀHITYAKĀROṀ KĪ PĀṆḌULIPIYOṀ KĀ SRVEKṢAṆĀTMAKA ADHYAYANA)

MASTER OF PHILOSOPHY

उपाधि हेतु प्रस्तुत लघुशोधप्रबन्ध

शोधनिर्देशक

डॉ. सुधीर कुमार

शोधार्थी

सतीश कुमार

.

विशिष्ट संस्कृत अध्ययन केन्द्र

जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय

नई दिल्ली-110067

2016

विशिष्ट संस्कृत अध्ययन केन्द्र

जवाहर लाल नेहरु विश्वविद्यालय

नई दिल्ली- 110067

Date 25.7.16

सोमवार

CERTIFICATE

This Dissertation entitled **"कुरुक्षेत्र के संस्कृत विद्वानों की पाण्डुलिपियों का सर्वेक्षणात्मक अध्ययन"** Submitted by Satish Kumar to Special Centre for Sanskrit Studies, Jawaharlal Nehru University, New Delhi-110067 for award of degree of Master of Philosophy (M.Phil.) is an original work and has not been submitted so far or in full, for any other drgree or diploma of any university or institution. This may be placed the examiner for evaluation of award of the degree of Master of Philosophy.

PROF. GIRISH NATH JHA

(CHAIRPERSION)

PROF. GIRISH NATH JHA
Chairperson
Special Centre for Sanskrit Studies
Jawaharlal Nehru University
New Delhi-110067, INDIA

DR. SUDHIR KUMAR

(SUPERVISOR)

Dr. Sudhir Kumar
Associate Professor
Special Centre for Sanskrit Studies
Jawaharlal Nehru University
New Delhi-110067

विशिष्ट संस्कृत अध्ययन केन्द्र

जवाहर लाल नेहरु विश्वविद्यालय

नई दिल्ली- 110067

DECLARATION

I declare that the dissertation entitled **"कुरुक्षेत्र के संस्कृत विद्वानों की पाण्डुलिपियों का सर्वेक्षणात्मक अध्ययन"** submitted by me for the award of degree of MASTER OF PHILOSOPHY, is an original research work and has not been submitted so far in part or in full, for any other degree or diploma in any other institute or university.

SATISH KUMAR

Research Student

Special Centre for Sanskrit Studies

Jawaharlal Nehru University

New Delhi-110067

विषयानुक्रमणिका

कृतज्ञता ज्ञापन।

संकेताक्षरसूची।

प्रथम अध्याय :-

हरियाणा प्रदेश का परिचय एवं कुरुक्षेत्र जनपद की सारस्वत पृष्ठभूमि। **1-20**

1.1 हरियाणा प्रदेश का नामकरण। 1-5

1.2 कुरुक्षेत्र जनपद का नामकरण। 5-6

1.3 हरियाणा प्रदेश के मण्डल। 6-7

1.3.1 अम्बाला मण्ड़ल की सारस्वत पृष्ठभूमि। 7-12

1.3.2 रोहतक मण्ड़ल की सारस्वत पृष्ठभूमि। 12-16

1.3.3 हिसार मण्ड़ल की सारस्वत पृष्ठभूमि। 16-17

1.3.4 गुडगाँव मण्ड़ल की सारस्वत पृष्ठभूमि। 17-19

1.4 पाण्डुलिपि का अर्थ 19-20

द्वितीय अध्याय :-

वैदिक साहित्य का परिचय एवं कुरुक्षेत्र जनपद में उपलब्ध पाण्डुलिपियाँ। **21-67**

2.1 वेद का अर्थ एवं परिचय। 21-23

2.1.1 वेद की पाण्डुलिपियाँ। 23-30

2.2 वेदाङ्ग का अर्थ एवं परिचय। 30-32

2.2.1 वेदाङ्ग की पाण्डुलिपियाँ। 32-55

2.3 आयुर्वेद का अर्थ एवं परिचय। 55-57

2.3.1 आयुर्वेद की पाण्डुलिपियाँ। 57-67

तृतीय अध्याय :-

लौकिक साहित्य का परिचय एवं कुरुक्षेत्र जनपद में उपलब्ध पाण्डुलिपियाँ। 68-88

3.1 साहित्य का अर्थ एवं परिचय। 68-70

3.2 साहित्य की पाण्डुलिपियाँ। 70-88

चतुर्थ अध्याय :-

दर्शनशास्त्र का परिचय एवं कुरुक्षेत्र जनपद में उपलब्ध पाण्डुलिपियाँ। 89-107

4.1 दर्शन का अर्थ एवं परिचय। 89-90

4.2 दर्शन की पाण्डुलिपियाँ। 90-95

4.3 विविध विषयक पाण्डुलिपियाँ। 95-107

उपसंहार। 108-110

परिशिष्ट। सन्दर्भ-ग्रन्थ सूची।

संकेताक्षर सूची :-

ऋ.	ऋग्वेद।
का.	कादम्बरी।
का.मी.	काव्यमीमांसा।
च.सं.	चरक संहिता।
पा. शि.	पाणिनीयशिक्षा।
भा. पु.	भागवत पुराण।
भा.द.	भारतीय दर्शन।
तै.सं.	तैत्तिरीय संहिता।
मु.उप.	मुण्डकोपनिषद्।
म. स्मृ.	मनुस्मृति।
सु. सं.	सुश्रुत संहिता।
सं सा.ह.यो.	संस्कृत साहित्य को हरियाणा का योगदान।
श्री. गी.	श्रीमद्भगवद्गीता।
वा.	वामनपुराण।
वा.	वायुपुराण।
वे.र.	वेद रहस्य।

वै. सा. सं.	वैदिक साहित्य एवं संस्कृति।
वै.वा.इति.	वैदिक वाङ्गमय का इतिहास।
वै.चि.धा.	वैदिक चिन्तन की धाराएँ।
ह.च.	हर्षचरित।
ह. अ.	हमारे अतीत।
ह. सां. वि.	हरियाणा की सांस्कृतिक विरासत।
ह.सं.क.	हरियाणा : संस्कृति एवं कला।
ह. पु.सं.स.लो.	हरियाणा : पुरातत्त्व, संस्कृति, साहित्य एवं लोकवार्ता।

प्रथम अध्याय

1.1 हरियाणा प्रदेश का नामकरण :-

भारतवर्ष का प्राचीन इतिहास, संस्कृति और परम्पराएँ मुख्यतः देववाणी संस्कृत भाषा में समुपलब्ध होती हैं। यह स्वीकार किया जाता है कि संस्कृत साहित्य के अखण्ड़ भण्ड़ार के एक विस्तृत एवं महत्वपूर्ण भाग की रचना भारतवर्ष के हरियाणा प्रान्त में हुई थी। 'हरियाणा प्रदेश' साक्षात् यौधेयपरम्परा, सम्पन्नता एवं ज्ञानपरम्परा का मुख्य केन्द्रबिन्दु रहा है। विद्वानों के लिए यह विचारणीय विषय है कि 'हरियाणा' शब्द कब अस्तित्व में आया, परन्तु इसमें किञ्चित् भी सन्देह नहीं है कि वैदिक काल से ही हमें हरियाणा प्रदेश की विद्वत्परम्परा, सांस्कृतिक सम्पन्नता, आर्थिक प्रभुता के साक्ष्य समुपलब्ध होते हैं, जिससे यह स्वीकार करने में कोई सन्देह नहीं है कि यह प्रदेश वैदिक संस्कृति का मुख्य केन्द्र रहा है। वेदों की प्रामाणिकता स्वीकार करने वाले विद्वान् यह स्वीकार करते हैं कि वेदों में लौकिक इतिहास नहीं है परन्तु वेदों में उपलब्ध विविध नामों के आधार पर विद्वानों ने विविध साधनों, प्रदेशों, नदियों का नामकरण किया।

हरियाणा प्रदेश का नामकरण कैसे हुआ ? इस सम्बन्ध में अनेक साक्ष्य ग्रन्थों में उपलब्ध होते हैं, कई हजार वर्ष पूर्व ही इस क्षेत्र का नामकरण हो चुका था। हरियाणा प्रदेश पंजाब प्रान्त से अलग होकर सन् 1966 में अलग राज्य बना तो इसका अर्थ यह नहीं है कि हरियाणा इससे पहले नहीं था। एक विस्तृत भू-भाग को प्राचीन काल में हरियाणा कहते थे। धरनीधर नामक विद्वान् के कहा है कि-

"पालम्ब ग्रामपूर्वे तु कुशुम्भ ग्रामपश्चिमे।

हरिबाणक भूरेषा सर्वस्यादिवद्विनी"॥[1]

[1] . *हरियाणा की सांस्कृतिक विरासत*, पृ.-7

अर्थात् पालम (दिल्ली) से लेकर कुसंभ (कोहन, पटियाला) गाँव तक हरियाणा का विस्तार था। दिल्ली का भाग भी इसमें आता था। दूसरी ओर यमुना नदी इसकी सीमाओं का निर्धारण करती थी।

हरियाणा शब्द की व्युत्पत्ति 'हरि' अथवा 'हर' तथा 'यान' शब्दों के योग से हुई है। इस प्रकार इसका अर्थ हुआ- हरि या हर का यान। स्पष्ट है कि प्राचीन काल में इस भू-भाग में, लोग देव उपास्य होने के कारण, हरि (विष्णु) अथवा हर (शिव) का भक्ति-यान विचरता होगा। संभवतः इसी कारण इस क्षेत्र का नाम 'हरियाना' अथवा 'हरयाना' पड़ा, जो कालान्तर में 'हरियाणा' अथवा 'हरयाणा' हो गया। हिसार जिला की ***"बन्दोबस्त रिपोर्ट"*** के अनुसार लोक विश्वास एवं किंवदन्तियों के आधार पर 'हरियाणा' शब्द की व्युत्पत्ति के तीन कारक स्वीकार किए जाते हैं-

क. हरि के अवतार परशुराम के द्वारा क्षत्रियों के प्राण हरणे की भूमि।

ख. अयोध्या के राजा हरिश्चन्द्र के इस प्रान्त में परिभ्रमणार्थ आकर जंगलों को आबाद करने से इसका नाम हरिआना > हरियाना > हरियाणा बना।

ग. महाभारत के युद्ध में श्रीकृष्ण और उनकी सेना सर्वप्रथम इसी प्रदेश में आने के कारण यह हरिआना > हरियाना > हरियाणा कहलाया।[2]

स्वामी ओमानन्द सरस्वती जी ने 'हरियाणा' नामकरण का प्रादुर्भाव ऋग्वेद में स्वीकार किया है **"ऋजमुक्षण्यायने रजतं हरयाणे।रथं युक्तमसनास सुषामणि"॥**[3] यहाँ पर यह शब्द राजा के विशेषण के रूप में प्रयुक्त हुआ है। जिसका अर्थ है- सदा यान चलता रहता है जिसका। उस काल में 'यान' शब्द रथ आदि वाहनों के लिए प्रयुक्त होता था। महर्षि मनु ने ***"मनुस्मृति"*** में जो 'ब्रह्मावर्त' प्रदेश कहा है वह भी इसी भूभाग को इंगित करता है। यह प्रदेश सरस्वती एवं दृषद्वती (घग्घर) इन दो नदियों के मध्य स्थित है – **"सरस्वतीदृषद्वत्योर्देवनद्योर्यदन्तरम्।तं देवनिर्मितं देशं ब्रह्मावर्त प्रचक्षते"॥**[4]

---

[2] . *बन्दोबस्त रिपोर्ट*, पृ.-4

[3] . *ऋग्वेद*, 6/2/25/2

[4] . *मनुस्मृति*, 2/17

पंडित गिरीशचन्द्र अवस्थी ने **'हरियाणे नित्यकालमेवाभिप्रस्थितयानम्'** कहकर यह सिद्ध किया है कि जिस राजा का सदैव रथ चलता रहता था, इससे उस राजा का नाम 'हरयाण' पड़ गया।[5] कालांतर में 'हरयाण' राजा के नाम पर इस प्रदेश का नाम 'हरयाण' पड़ा, जो बाद में 'हरियाणा' के नाम से प्रसिद्ध हुआ। दिल्ली के पास स्थित 'सारबन' नामक गाँव से 14वीं शताब्दी के अन्तिम भाग का एक शिलालेख दिल्ली संग्रहालय में रखा है। इसमें महुम्मद बिन तुगलक कालीन शिलालेख के तृतीय श्लोक में स्पष्ट रूप से हरियाणा देश को पृथ्वी पर 'स्वर्ग के समान' बताया गया है और यहाँ की ढिल्लिका (दिल्ली) नामक पुरी तोमरवंश द्वारा निर्मित बताई गई है-**"देशोऽस्ति हरियानाख्यः पृथिव्यां स्वर्गसन्निभः। ढिल्लिकाख्या पुरी तत्र तोमरैरस्ति निर्मिता"॥**[6]

दिल्ली के पालम गाँव के तालाब से संवत् 1337 का अर्थात् उपरोक्त शिलालेख से 47 वर्ष पुराना शिलालेख मिला है। बलबन कालीन इस शिलालेख में 'हरियाणा' के लिए 'हरियानक' शब्द का प्रयोग किया गया है-**"अभोजितोभरैरादौ चौहाणैस्तदनन्तरम्।हरियानक भूरेषा शकेन्द्रैः शास्यतेऽधुना"॥**[7] अर्थात् 'हरियानक देश' पर प्रारम्भ में तोमरों ने और बाद में चौहानों ने राज किया तथा अब शक इस पर शासन कर रहे हैं। इससे यह ज्ञात होता है कि हरियाणा शब्द 'हरियानक' का परिवर्तित रूप है।

सरस्वती सिंचित हरियाणा प्रदेश पुरातन समय में हरियाली एवं धनधान्य से परिपूर्ण रहा होगा। इसका नाम 'हरिधान्यक' और 'बहुधान्यक' भी प्राप्त होता है। हरिधान्यक का अर्थ है- 'हरितिमा एवं धनधान्य से भरा हुआ' तथा बहुधान्यक का अर्थ है- 'अत्यधिक धनधान्य वाला'। इस प्रकार पं. राहुल सांकृत्यायन ने कहा है कि 'हरिधान्यक' शब्द अपभ्रंशित होकर हरिहानक > हरिआन > हरियान > हरियाना > हरियाणा बना है।[8]

---

[5] . *हरियाणा : संस्कृति एवं कला*, पृ. 2

[6] . *हरियाणा : संस्कृति एवं कला*, पृ. 3

[7] . *हरियाणा : संस्कृति एवं कला, पृ. 3*

[8] .*हरियाणा : पुरातत्त्व, इतिहास, संस्कृति, साहित्य एवं लोकवार्ता*, पृ.-59

कवि श्रीधर रचित पार्श्वनाथ चरित पुराण के उद्धरण से ज्ञात होता है कि हरियाणा की प्रसिद्ध नगरी दिल्ली थी-**"हरियाणए देसे असंख गामे गामियाणा, जणि अववरय काम परचक्क विहट्टणु सिरि संघट्टणु जो सुखैणा परिगणयं।रिउरुति रावट्टणु विउलु पवट्टणु दिल्ली नामेण जिमिणियं।जहिं असिवर तोडिउ रिउ कपालु। णरणाहु प्रसिद्धं अणंभ वालु,णिरुदलवाडुंय हम्मीर वीरु बंहियण विदं पवियण्य वीरु"॥**[9]

जैनकवि पुष्पदन्त ने 'हरियाणा' शब्द का उल्लेख अपने ग्रन्थ ***"महापुराण"*** में किया है कि **'अखलिअ परिपालिअ हरियाणाअ'**।इस प्रदेश में कई विस्तृत हरियाली युक्त वन थे, इनमें से 'हरिया वन' नामक प्रसिद्ध विशाल जंगल था। जब इस जंगल को काटकर लोग बसे लगे, तो इस प्रदेश को 'हरियावन' कहने लगे, जो कालान्तर में हरियाअन > हरियान > हरियाना > हरियाणा बन गया।[10] डॉ. ओमप्रकाश भारद्वाज ने अपने लेख `***Vedic sites of Haryana'*** में लिखा है कि- **"Haryana is grographically conteriminous with the ancient land of Kurushtera which had the region of Srughna (Sugh) or present Jagadhari as its northern portion, Khandara or Delhi in the South, the raarus or the desert of Rajputana in the west and the valley of the Ghaggar vedic Saraswati in the north.**

The heartland of Haryana, the tract bounded by the Sasaswati and the Drishadwati or the Ghaggar and the river bed which the Western Yamuna canal now the famous law book of Manu designated it Brahmavarta.''[11]

हरियाणा प्रदेश की पावन धरती योगियों की तपोभूमि, तपस्वियों की तपोभूमि एवं कवियों की काव्यभूमि भी रही है। सरस्वती नदी का प्रवाह इस धरा पर कभी नहीं रुका। स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद हरियाणा प्रदेश को 1 नवम्बर 1966 को स्वतन्त्र राज्य बनाया गया, इससे पहले यह प्रदेश पंजाब के अन्तर्गत आता था। सीमांकन के विषय में यही कहना अधिक सार्थक होगा कि सरस्वती तथा दृषद्वती नदियों के मध्य का क्षेत्र प्राचीन हरियाणा का प्रमुख क्षेत्र है। इसी क्षेत्र में वैदिक एवं प्राचीन साहित्य की रचना हुई।

---

[9] . *संस्कृत में हरियाणा का योगदान*, पृ.-7

[10] . *Haryana Wikipediya*

[11] . *संस्कृत साहित्य को हरियाणा का योगदान, पृ.*-11

हरियाणा के नामकरण के साथ-साथ हरियाणा के तत्कालीन वन, नदी, पर्वत, देश, स्थान आदि पर भी संक्षेप में विचार करना आवश्यक है। ***"वामनपुराण"*** के अनुसार सात पवित्र वनों का नाम उल्लेख किया गया है जो कुरुक्षेत्र में हैं- **"काम्यकं च वनं पुण्यं तथाऽदिति वनं महत्। व्यासस्य च वनं पुण्यं फलकी वनमेव च॥ तत्र सूर्य वनं स्थानं तथा मधुवनं महत्। पुण्य शीतवनं नाम सर्व कल्मष नाशनम्"॥**[12] ***"वामनपुराण"*** में ही कुरुक्षेत्र प्रदेश की नौ नदियों का नामोल्लेख इस प्रकार किया गया है-**"सरस्वती नदी पुण्य तथा वैतरणी नदी। अपगा च महापुण्य, गंगा मंदाकिनी नदी,मधुस्रुवा, वासुनदी, कौशिकी पापनाशिनी,दृषद्वती महापुण्य तथा हिरण्यवती नदी"॥**[13] नदियों एवं वनों के नामों के साथ-साथ हरियाणा के अनेक स्थानों के नाम भी वैदिक साहित्य भरपूर मात्रा में उपलब्ध होते हैं।

1.1 कुरुक्षेत्र जनपद का नामकरण-

हरियाणा प्रान्त के 21 जनपदों में कुरुक्षेत्र जनपद का विशेष महत्त्व प्राचीन काल से रहा है, नूतन प्रदेश बनने के समय कुरुक्षेत्र जनपद के अन्तर्गत कैथल, करनाल, जीन्द एवं पानीपत के क्षेत्र आते थे। इसका क्षेत्र 48 कोस में विस्तृत था। कुरुक्षेत्र जनपद का भी एक विशेष इतिहास रहा है। इस जनपद की धरा पर महाभारत का युद्ध हुआ तथा मध्यकालीन भारत में पानीपत के तीनों युद्ध इसी धरा पर लड़े गए। ***"श्रीमद्भगवद्गीता"*** के प्रथम श्लोक में इस जनपद को धर्मक्षेत्र कहा गया है- **"धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः। मामकाः पाण्डवाश्चैव किमकुर्वत सञ्जय"॥**[14] ***"श्रीमद्भागवत्"*** के 22वें अध्याय में एक कथा है कि महाराज संवरण की रानी तप्ती के गर्भ से कुरु नामक राजा का जन्म हुआ। कुरु ने पुरु राजाओं के नाम को बहुत उज्ज्वल किया। कालान्तर में पुरुवंश का नाम 'कौरव' पड़ गया। जरावस्था में महाराज कुरु ने न केवल समस्त पृथ्वी का भ्रमण किया प्रत्युत सरस्वती में स्नान कर महादेव के वृषभ तथा धर्मराज के पाण्डुक महिष को हल में जोतकर पृथ्वी को जोता। भगवान् विष्णु ने कुरु की परीक्षा ली और उस जोते गए स्थान को इच्छानुसार **'धर्मक्षेत्र'** का नाम दिया-**"यावदेतन्मया कृष्ट धर्मक्षेत्रं तदस्तुवः।**

---

[12] . *वामनपुराण,* 34/4-5

[13] . *वामनपुराण*, 34/6-8

[14] . *श्रीमद्भागवद्गीता, 1/1*

स्नातानां च मृतानां च महापुण्य फलं त्विह॥उपवासश्च दानं च स्नानं जाप्यं च माधव। होमयज्ञादिकं चान्यच्छुभं वाऽप्यशुभं विभो॥ त्वत्प्रसादाद्धृषिकेश शंखचक्रगदाधर। अक्षयं प्रवरे क्षेत्रे भवत्वत्र महाफलम्॥

तथा भवान् सुरैः सार्द्ध सभं देवेन शूत्मिना।वसात्र पुण्डरी काक्ष मन्नाभव्यञ्चकेऽच्युत"॥[15] अर्थात्- हे माधव! जितनी दूरी पर्यन्त इस क्षेत्र में मैंने हल चलाया है, उतनी दूरी तक यह 'धर्मक्षेत्र' हो जाए। यहाँ स्नान करने वालों को महापुण्य नामक फल मिले। आपकी कृपा से यहाँ उपवास, व्रत, दान, जप, स्नान, हवन और यज्ञादि शुभ कर्म और अशुभ कर्म भी अक्षय हो। हे पुण्डरीकाक्ष! आप सर्व देवताओं सहित इस स्थान में निवास करें। भगवान् ने 'ऐसा ही हो' कहकर कुरु को आशीर्वाद दिया और तदन्तर यह क्षेत्र 'कुरुक्षेत्र' नाम से कहा जाने लगा। मनु ने ब्रह्मावर्त/कुरुक्षेत्र का सीमांकन करते हुए लिखा है कि-**"सरस्वती दृष्द्वत्योर्देवनद्योर्यन्दन्तरम्। तं देवनिर्मितं देशं ब्रह्मावर्तं प्रचक्षते॥ तस्मिन् देशे य आचारः पारम्पर्यक्रमागतः। वर्णानां सान्तरालानां स सदाचार उच्यते॥ कुरुक्षेत्रं च मत्स्याश्च पञ्चात्माः शूरसेनकाः। एष ब्रह्मर्षिदेशो वै ब्रह्मावर्तादनन्तरः"॥**[16] मनु ब्रह्मावर्त को मध्यदेश स्वीकार किया है-**"एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः। स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः॥ हिमवद्विन्ध्ययोर्मध्यं यत्प्राग्विनशनादपि।प्रत्यगेव प्रयागच्च मध्यदेशः प्रकीर्तितः"॥**[17] अर्थात् हिमालय पर्वत और विन्ध्याचल पर्वत के मध्य विनशन से पूर्व और प्रयाग के पश्चिम में मध्य देश कहलाता है।

1.2 हरियाणा प्रदेश के मण्ड़ल –

पंजाब प्रान्त से अलग राज्य बनने पर हरियाणा के जिलों को मण्ड़ल एवं उपमण्ड़लों में विभाजित किया गया। वर्तमान समय में हरियाणा प्रान्त के 21 जनपदों को 4 मण्डलों में विभक्त किया गया। ये चार मण्ड़ल हैं- अम्बाला मण्ड़ल, रोहतक मण्ड़ल, हिसार मण्ड़ल एवं गुडगाँव मण्ड़ल।

---

[15] . *वायुपुराण,* 22/33-36

[16] . *मनुस्मृति*, 2/17-19

[17] . *मनुस्मृति*, 2/20-21

क्रमांक संख्या	मण्ड़ल का नाम	जनपदों का नाम
1.	अम्बाला	अम्बाला, कुरुक्षेत्र, यमुनानगर, पंचकुला, कैथल।
2.	रोहतक	रोहतक, पानीपत, करनाल, झज्जर, सोनीपत।
3.	हिसार	हिसार, जीन्द, भिवानी, फतेहाबाद, सिरसा।
4.	गुड़गाँव	गुड़गाँव, फरीदाबाद, पलवल, मेवात, रेवाड़ी एवं महेन्द्रगढ़।

1.2.1 अम्बाला मण्ड़ल की सारस्वत पृष्ठभूमि :-

अम्बाला– हरियाणा प्रान्त के मण्ड़लों में यह प्रथम मण्ड़ल है। संस्कृत साहित्य के योगदान में इसका विशेष स्थान रहा है। प्राचीन समय से ही इस धरा पर विद्वानों का जन्म हुआ है। यह पर उत्पन्न हुए विद्वानों का संक्षिप्त जीवन परिचय एवं रचनाओं का वर्णन अधोलिखित है[18]-

हर्षवर्धन- हर्षवर्धन स्थाण्वीश्वर (थानसेर), जिला कुरुक्षेत्र के महाराजा प्रभाकरवर्धन के कनिष्ठ पुत्र थे जो कि अपने पिता एवं ज्येष्ठ भ्राता युवराज राज्यवर्धन की मृत्यु के पश्चात् राजा बने। इनका स्थितिकाल 600 ई. से 648 ई. है। राजा हर्षवर्धन जहाँ महान् योद्धा थे, वहीं वे विद्वत्प्रेमी, विद्याव्यसनी तथा स्वयं अद्वितीय विद्वान् एवं कवि भी थे। उनकी रचनाएँ अधोनिर्दिष्ट हैं- ***रत्नावली, प्रियदर्शिका, नागानन्दम्।*** इनकी दो ओर रचनाएँ ***'अष्टमहाश्रीचैत्यस्तोत्र'*** तथा '***सुप्रभातस्तोत्र'*** मानी जाती है।

बाणभट्ट– विश्व को सुन्दरतम गद्यकाव्य देने का श्रेय बाणभट्ट को है। बाणभट्ट राजा हर्षवर्धन की सभा के कवि थे। अतः उनका समय 7वीं शता. स्वीकार किया जाता है। बाणभट्ट की निम्नलिखित रचनाएँ हैं ***हर्षचरितम्, कादम्बरी, चण्डीशतकम्, पार्वतीपरिणयम् एवं मुकुटताडितम्।***

[18] . *हरियाणा की संस्कृत साधना*

मयूर कवि– यह महारज हर्षवर्धन की सभा में कविरत्न थे। अतः इनका समय सातवीं शताब्दी है। राजशेखर ने मयूर के विषय में अपने ग्रन्थ ***काव्यमींमासा*** में कहा है कि- **"अहो प्रभावो वाग्देवया यन्मातङ्गदिवाकरः। श्रीहर्षस्याभवद् सभ्यः समो बाणमयूरयोः"॥**[19]

यह स्वीकार किया जाता है कि ये बाणभट्ट के सम्बन्धी थे। परन्तु महाकवि बाण ने हर्षचरित में मयूर को बचपन का साथी बताते हुए लिखा है कि **"मयूर उनका जांगलिक मायूरक नाम साथी है"।**[20] इनकी दो रचनाएँ प्रसिद्ध हैं- ***सूर्यशतक एवं मयूराष्टक।***

पुलिन्दभट्ट या भूषणभट्ट- यह महाकवि बाणभट्ट के पुत्र थे। अतः उनका समय सातवीं शताब्दी है। ***'कादम्बरी'*** को पूर्ण करने का श्रेय पुलिन्दभट्ट को है जिससे यह कहा जा सकता है कि वे अपने पिता की भाँति ही विद्वान् तथा श्रेष्ठ गद्यकार थे। ***कादम्बरी*** के उत्तरार्द्ध में कवि ने कहा है कि- **"याते दिवं पितरि तद्वचसैव सार्धं विच्छेदमाप भुवि यस्तु कथाप्रबन्धः। दुःखं तदेतदखिलं सुधियां विलोक्य प्रारब्ध एष तु मया न कवित्वदर्पात्"॥**[21]

भिक्षाराम शास्त्री- इनका जन्म 1910 ई. में गाँव बारणा जिला कुरुक्षेत्र में हुआ था। शास्त्री जी दर्शनशास्त्रमर्मज्ञ एवं कवि थे तथा वैयाकरण भी थे। इनकी निम्नलिखित रचनाएँ हैं- ***जवाहरजीवनचरितम्, गान्धिचरितम्, मदनमोहनमालवीयचरितम्, विष्णुस्तोत्रम्, मातृदशकम् एवं वेदान्तचम्पू।*** इनका ग्रन्थ ***'वेदानां सर्वं वादित्वम्'*** अप्रतिम वैदुष्य की परिचायक रचना है।

रामचन्द्र सरस्वती- इनका जन्म 1915 ई. में कुरुक्षेत्र में हुआ। इनकी एकमात्र काव्यकृति प्राप्त होती है – ***कुरुक्षेत्रमाहात्मयम्।***

पं श्रीधर- पं श्रीधर जी का जन्म विक्रमी संवत् 1900 में गाँव डासना, कुरुक्षेत्र में हुआ। पं जी ने ***श्रीमद्भागवत पर वैदुष्यपूर्ण संस्कृत टीका*** लिखी है।

पण्डित स्थाणु दत्त शास्त्री- पं स्थाणुदत्त शास्त्री जी का जन्म थानेसर, कुरुक्षेत्र में सन् 1873 ई. में हुआ। इनके पिता जी का नाम श्री रामचन्द्र शर्मा तथा माता जी का नाम गोमती देवी था। इन्होंने अपनी प्रारम्भिक शिक्षा पं गरुडध्वज से प्राप्त की तत्पश्चात् ये श्री हरियाणा शेखावटी

---

[19] . *काव्यमींमासा*

[20] . हर्षचरित, प्र.उ. पृ. -91

[21] . *कादम्बरी,* उत्तरार्द्ध.

ब्रह्माचर्याश्रम भिवानी में श्री सीताराम शास्त्री से पढ़े, पंजाब विश्वविद्यालय से इन्होंने शास्त्री की परीक्षा उत्तीर्ण की। पं स्थाणुदत्त शास्त्री जी ने पाण्डुलिपि संग्रह में अपना विशेष योगदान दिया। उन्होंने घूम-घूमकर लगभग 5000 दुर्लभ पाण्डुलिपियों का संग्रह किया और कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय को सौंप दिया। पं शास्त्री जी वैदिक साहित्य के भी प्रकाण्ड विद्वान् थे।

चण्डीदास- इनका जन्म 1805 ई. में पुण्डरी नगर, जिला कैथल में हुआ। इनक अधिकांश समय कैथल, पटियाला व जम्मू के राजाओं के आश्रय में व्यतीत हुआ। ये अनेक भाषाओं को जानते थे। इनकी निम्नलिखित रचनाएँ हैं- ***राधासुन्दरभक्तिबोध, रामप्रतापोदयकाव्य, देविकालहरी, त्रिपुटाष्टक, अन्योक्तिजलधि*** आदि। पं गंगादत्त शास्त्री 'विनोद' ने 'नव्य चण्डीदास ग्रन्थावली' प्रकाशित कराई, जिसमें उन्होंने चण्डीदास की 11 रचनाओं का संकलन किया था।

माधवाचार्य– श्रीमाधवाचार्य का जन्म 1897 ई. में कौल (कैथल) में हुआ। इन्होंने श्रीरामानुज संस्कृतविद्यालय, दिल्ली में रहकर तथा श्री इन्द्रिरारमणाचार्य जी के शिष्य बनकर शिक्षा प्राप्त की, लाहौर से इन्होंने शास्त्री की परीक्षा उत्तीर्ण की। इनकी निम्नलिखित रचनाएँ है- ***टुडेस्मृति, कबीरचरितम्, कथाशतकम् एवं श्रीजयरामब्रह्मचारिणो जीवनचरितम्।***

बालकृष्ण भारद्वाज- श्री बालकृष्ण भारद्वाज का जन्म 1921 ई. में क्योड़क गाँव के कैथल जिले में हुआ। ये सोलह वर्ष तक अनपढ़ ही रहे। 1944 ई. में सनातन धर्म संस्कृत महाविद्यालय, लाहौर से शास्त्री की उपाधि प्राप्त की। इनकी निम्नलिखित रचनाएँ हैं- ***कुरुक्षेत्र परिचय, शारदामणिलीलाचरितम्*** एवं ***रामकृष्णपरमहंसदिव्यचरितम्।***

श्री प्रेमाचार्य शास्त्री– शास्त्री जी का जन्मस्थान कौल है। इन्होंने अपने पिता श्री माधवाचार्य द्वारा रचितग्रन्थ ***'परतत्त्वदिग्दर्शनम्'*** के अन्तिम में ***'परतत्त्व विषयक भ्रान्तिनिरसनात्मक'*** नामक एक परिशिष्ट लिखा है। जिसमें 111 श्लोक विभिन्न छन्दों में हैं।

विद्याधर धस्माना– इनका जन्म 22 अप्रैल 1931 ई. में हुआ। विद्याधर जी की कर्मभूमि अम्बाला रही है। इन्होंने निम्नलिखित रचनाओं से शारदा की उपासना की है- ***मुक्तकमञ्जरम्, पाञ्चजन्यम् एवं संसारह्रासः।*** इनके काव्य में छायावाद का प्रभाव प्रत्यक्ष पड़ता है।

रेशमानन्द शास्त्री- शास्त्री जी का जन्म 8 मई 1935 ई. में खानपुर,जिला अम्बाला में हुआ। ये हरियाणा शिक्षाविभाग में संस्कृत शिक्षक व प्रवक्ता रहे हैं। शास्त्री जी की एकमात्र कृति है *'गुरुनानकदेवचरितम्।*

डॉ. सुरेन्द्र आयुर्वेदालंकार- इनका जन्म स्थान सढ़ौरा, अम्बाला है। इनकी एकमात्र रचना है– *ओंकारसहस्रनामस्तोत्रम्।*

पं जयदेव शर्मा विद्यालंकार- चारों वेदों के भाष्यकार पं. जयदेव शर्मा जी का जन्म 1892 ई में अम्बाला जिले के एक गाँव में श्री मुन्शी राम के घर पर हुआ था। इन्होंने अपना अध्ययन स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती के समीप रहकर गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय में किया। शर्मा जी के लेखन का क्षेत्र मुख्यतः वेद ही रहा है। इनकी निम्नलिखित रचनाएँ हैं- ***ऋग्वेद भाषा भाष्य*** (7भाग), ***यजुर्वेद भाषाभाष्य*** (2भाग), ***सामवेद भाषाभाष्य, अथर्ववेद भाषा भाष्य*** (4भाग), ***माधवानुक्रमणी, ईशोपनिषद् भाषाभाष्य, यमयमी सूक्तव्याख्या, अथर्ववेद और जादू टोना*** आदि।

पं देवदत्त शास्त्री- इनका जन्म 25 अगस्त् 1924 ई. को गाँव केसरी, जिला अम्बाला में हुआ। शास्त्री जी ने म. म. परमेश्वरानन्द तथा म. म. गिरिधर शर्मा चतुर्वेदी जी से शिक्षाग्रहण की। इनकी रचनाएँ निम्नलिखित है- ***न्यायसिद्धान्तमुक्तावलीकुंचिका, काव्यप्रकाशरहस्य, महाभाष्यदीपिका*** तथा ***वेदेषु गणितविज्ञानम्*** इस शोधग्रन्थ की रचना की।

डॉ. सत्यकाम वर्मा- वर्मा जी का जन्म 1926 ई. में अम्बाला छावनी में श्री विद्याधर विद्यालंकार के घर हुआ। इन्होंने गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय से 1946 ई. में आयुर्वेदालंकार की उपाधि ग्रहण की तथा इसी विश्वविद्यालय से संस्कृत एवं हिन्दी में एम. ए. की परीक्षा उतीर्ण की और दिल्ली विश्वविद्यालय से पी.एच.डी. की उपाधि प्राप्त की। ये भाषाविज्ञान एवं व्याकरण शास्त्र के प्रकाण्ड विद्वान् थे। इनकी रचनाएँ निम्नलिखित हैं- ***वाक्यपदीय का भाषातात्त्विक विवेचन, संस्कृत व्याकरण का उद्भव एवं विकास, वेदवाटिका, वेदसुमन, वाक्यपदीय ब्रह्मकाण्ड*** (त्रिभाषी टीकाएँ) आदि।

सत्यदेव वर्मा- वर्मा जी का जन्म 6 दिसम्बर 1918 को यमुनानगर जनपद के अलाहर गाँव में हुआ। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा रावलपिण्डी के गुरुकुल पाटोदार में हुई। पंजाब विश्वविद्यालय,

लाहौर से संस्कृत एवं हिन्दी विषय से एम.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की। वर्मा जी द्वारा रचित निम्निलिखत रचनाएँ हैं- ***श्रीशिवराजस्य जयसिंहं प्रति प्रेषितं पत्रम्, संस्कृतवर्णमाला, शिवसमाधिरूपकम्, श्रीधर्मसंहिता, इन्द्रशेखरकम्, हेडगेवारजीवनचरितम्*** आदि। इनमें ***हेडगवारजीवनचरितम्*** महाकाव्यकोटि का ग्रन्थ है, इसमें 3158 पद्य हैं, परन्तु फिर भी यह ग्रन्थ अपूर्ण है।

सुरेन्द्रमोहन मिश्र- डॉ. सुरेन्द्रमोहन मिश्र जी का जन्म 8 अगस्त 1959 ई. में केन्द्रपडा (उडीसा) के बणहरा गाँव में हुआ। मिश्र जी कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय से एम.ए. एवं पी.एच.डी. करने के पश्चात् 1986 ई. में संस्कृत विभाग में प्राध्यापक हो गए। इनकी निम्नलिखित रचनाएँ हैं- ***श्रीभद्रकालीसहस्रनामस्तोत्रम्, सौभाग्यलहरी, सन्नीति-मुक्तावली*** एवं ***श्रृंगाररागारूणम्*** आदि।

डॉ. श्रीकृष्ण सेमवाल- डॉ. सेमवाल जी का जन्म 5 फरवरी 1944 ई. को ग्राम ह्यूण, जिला रुद्रप्रयाग (उत्तराखण्ड) में हुआ। इनके पिता जी का नाम श्री नाथो राम सेमवाल तथा पूजनीया माता जी का नाम दीपा सेमवाल जी है। इन्होंने सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय से आचार्य तथा मेरठ विश्वविद्यालय से एम. ए. एवं साहित्य रत्न की उपाधि प्राप्त की। इन्होंने संस्कृत की सेवा हरियाणा प्रान्त से प्रारम्भ की। ये अनेक संस्कृत संस्थाओं से सम्बद्ध हैं तथा '**हरियाणा संस्कृत अकादमी**' की समिति के संस्थापक सदस्य हैं। सेमवाल जी ने अनेक ग्रन्थ लिखकर शारदा की सेवा की है। इन्होंने निम्निलिखित ग्रन्थ लिखे हैं- ***इन्दिराकीर्त्तिशतकम्, प्रियदर्शिनीयम्, वाग्वैभवम्, हिमाद्रिपुत्राभिनन्दनम्, संघेशक्तिः कलौ युगे, भक्तिरसामृत*** तथा ***शक्तिसौरभम्*** आदि।

प्रो. देवव्रत सेन शर्मा- इनका जन्म 1929 ई. को ग्राम दुर्गापुर, जिला चिट्टगोंग (सम्प्रति बंगला देश) में हुआ। इनके पिता जी का नाम देवेन्द्र नाथ सेन शर्मा तथा माता जी का नाम श्रीमती लक्ष्मीप्रिया देवी था। इनकी शिक्षा बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय से हुई। प्रो. सेन शर्मा 1959 ई में कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय में प्रवक्ता के पद अधिष्ठित हुए। ये शैव दर्शन के प्रकाण्ड विद्वान् थे। इनके निम्नलिखित ग्रन्थ हैं-***षट्त्रिंशत् तत्त्वसन्दोह*** (सम्पादन एवं अग्रेंजी अनुवाद), ***Philosophy of Sadhana, Aspects of Tantrayoga*** and etc.

डॉ. धर्मचन्द जैन – जैन जी का जन्म 1940 ई. को सागर (म.प्र.) में श्री दरयाव लाल जैन एवं श्रीमती हीरा बाई के घर हुआ। इनकी शिक्षा सागर, इन्दौर, वाराणसी शहरों में हुई। ये 1972 ई. में कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय में प्रवक्ता के रूप में हरियाणा में आए। जैन जी 2000 ई. में प्रोफेसर के पद से सेवामुक्त हुए। इन्होंने निम्नलिखित ग्रन्थ लिखकर सरस्वती की सेवा की- ***अधिधर्मदेशना, जैन दर्शन में नय की अवधारणा, बौद्ध पारिभाषिक शब्दकोश तथा आदितीर्थंकर ऋषभदेव*** (जीवनवृत्त, स्वरूप एवं शिव के साथ तादात्म्य)।

1.2.2 रोहतक मण्ड़ल की सारस्वत पृष्ठभूमि-

रामभज शास्त्री- इनक जन्म 20वीं शताब्दी के प्रारम्भ में रोहतक मण्ड़ल में हुआ था। इन्होंने जुलाना में अध्यापन का कार्य संस्कृत विद्यालय जुलाना में किया। इनकी एकमात्र रचना ***काव्यकुसुमाञ्जलि*** है।

जयराम शास्त्री- इनका जन्म 20वीं शताब्दी के द्वितीय दशक में गद्दी खेडी, जिला रोहतक में हुआ। ये प्रगतिशील विचारधारा के उदारवादी लेखक थे। इनके दो ग्रन्थ उपलब्ध होते हैं- ***जवाहरवसन्तसाम्राज्यं तथा गान्धिकल्पेन्दुः।***

डॉ. सुदर्शन देव आचार्य- इनका जन्म 8 फरवरी 1935 को गाँव बालन्द, जिला रोहतक में हुआ। इनके पिता जी का नाम शिवदत्त आर्य तथा माता जी का नाम श्रीमती रजकां देवी था। इनकी शिक्षा स्वामी ओमानन्द सरस्वती के संरक्षण में गुरुकुल झज्जर में हुई। इन्होंने विशाल वाङ्मय संस्कृतजगत् को दिया है। इनके निम्नलिखित ग्रन्थ हैं- ***दयानन्द यजुर्वेदभाष्यभास्कर, वेदभाष्यविबोध, आर्याभिविनय, शिक्षावेदांग के सिद्धान्त एवं परम्परा, वर्णोच्चारणशिक्षा*** आदि।

डॉ. रामभक्त लांगायन- डॉ. रामभक्त लागांयन जी का जन्म 15 अगस्त 1946 ई. को रोहतक जिले के सुडाना गाँव में हुआ। इन्होंने विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोधसंस्थान से एम.ए. (संस्कृत), कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय से पी.एच.डी. की उपाधि प्राप्त की। इनके द्वारा रचित निम्नलिखित ग्रन्थ हैं- ***वैदिक साहित्य में यज्ञ का स्वरूप, गायत्रीरहस्य, अमृतवचनावली*** *तथा* ***गद्यसौरभ।*** इसके अतिरिक्त ***'सन्त रविदास तथा अम्बेडकर एक परिचय'*** भी इनका ग्रन्थ है।

डॉ. बलदेव मेहरा- मेहरा जी का जन्म 15 अगस्त 1952 को गाँव सिंहपुरा सुन्दरपुर, जिला रोहतक में हुआ। इनके पिता जी का नाम श्री बदलू राम था। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा गुरुकुल सिंहपुरा में हुई। इन्होंने अनेक ग्रन्थों की रचनाकर संस्कृत की सेवा की है, इनके निम्नलिखित ग्रन्थ हैं- ***वैदिक संकलन*** (भाग1, 2), ***वैदिक संग्रह एवं व्याख्या, श्रौतसूत्र व्याख्या, कात्यायनशूल्वसूत्र।*** सन् 2008 में इनका एक संस्कृत काव्य ***'अम्बेडकरदर्शनम्'*** प्रकाशित हुआ है।

हजारीलाल विद्यालंकार- हजारी लाल जी का जन्म 20 सितम्बर 1910 ई. को ग्राम घिलावड खुर्द, जिला सोनीपत में हुआ। इनके पिता जी का नाम पं. शंकरदत्त एवं माता जी का नाम श्रीयाँ देवी था। इनकी स्नातक तक की शिक्षा गुरुकुल कांगडी से हुई तथा शास्त्री की उपाधि पंजाब विश्वविद्यालय से तथा साहित्याचार्य की उपाधि अयोध्या से प्राप्त की। ये ज्यौतिष एवं आयुर्वेद के प्रख्यात विद्वान् थे। श्री हजारी लाल जी ने नाट्य, काव्य एवं स्तोत्र शैली में काव्य की रचना की है। इनकी निम्नलिखित रचनाएँ हैं- ***परशुरामविजयवैजयन्ती, हकीकतरायनाटकम्, सगुणब्रह्मस्तुतिशतकम्,शिवप्रतापविरुदावली,इन्दिराविजयप्रशस्तिशतकम्,षड्दर्शनसिद्धान्तप्रक्रिया अद्वैतवादश्च*** आदि। इसके अतिरिक्त ***देवी शतकम्*** एवं ***देवेन्द्रप्रतापविरुदावली, काव्यप्रकाशतत्त्वसुधा*** पाण्डुलिपि के रूप में उपलब्ध है।

चन्द्रभानु शास्त्री- चन्द्रभानु जी का जन्म सन् 1922 ई. में छिछडाना, जिला सोनीपत तुलसी राम के घर हुआ। इनकी माता जी का नाम श्रीदेवी था। इनके पिता शास्त्री एवं साहित्याचार्य थे तथा उन्होंने जीन्द, भिवानी आदि संस्कृत विद्यालयों में पढ़ाया। इनकी एकमात्र कृति से ही संस्कृत की सेवा की है– ***गांगेयमहाकाव्यम्।*** इस ग्रन्थ का हिन्दी अनुवाद इनके सुपुत्र सोमदत्त एवं विष्णुदत्त ने किया है तथा प्रस्तावना शिवदत्त शास्त्री ने लिखी है।

डॉ. अभिमन्यु- इनका जन्म 1939 ई. में गाँव कासण्डा, जिला सोनीपत में हुआ। इनके पिता जी का नाम श्री दिलीप सिंह एवं माता का नाम परमेश्वरी देवी था। इनकी आरम्भिक शिक्षा गुरुकुल भैंसवाल में हुई। कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय से एम.ए., पी.एच.डी. तथा पंजाब विश्वविद्यालय से साहित्याचार्य, दर्शनाचार्य एवं एम. ए. हिन्दी की परीक्षा उत्तीर्ण की। इन्होंने

अनेक ग्रन्थ लिखकर सरस्वती की आराधना की है। इनके निम्नलिखित ग्रन्थ हैं- ***कालिदासस्य मेघदूतम् : एकमध्ययनम्, संस्कृतशोधनिबन्धमंजरी एवं वेदान्तविमर्श।***

प्रो. वीरेन्द्र कुमार अलंकार- अलंकार जी का जन्म 15 अक्टूबर 1962 ई. को गोहाना तहसील, जिला सोनीपत में हुआ। इनकी पूजनीया माता जी का नाम श्रीमती गार्गी एवं पिता जी का नाम श्री सुखदयाल था। ये भारतीय स्वतन्त्रता सेनानी एवं कर्मठ सामाजिक कार्यकर्ता थे। अलंकार जी ने गुरुकुल भैंसवाल रहते हुए कांगडी विश्वविद्यालय की विद्यालंकार की उपाधि प्राप्त की। तत्पश्चात् एम.ए. एवं एम. फिल. की दोनों परीक्षा में कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय से स्वर्ण पदक प्राप्त किया। इन्होंने काव्यात्मक रचनाओं द्वारा शारदा की उपासना की है और वर्तमान समय में भी शारदा की उपासना में लगे हुए हैं। इनकी निम्नलिखित रचनाएँ हैं- ***देवप्रशस्तिकाव्य, अपूर्वलोक, भारतीकाव्य, पद्मचन्द्रोदय, गर्भकन्या, चण्डीप्रभास, षोडशी, वाल्मीकिस्रग्विणी।***

विद्यानिधि शास्त्री- शास्त्री जी का जन्म 1911 ई. में लोहारी, जिला पानीपत में हुआ। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा गुरुकुल भैंसवाल में हुई थी। आचार्य जी वेद एवं व्याकरण के प्रकाण्ड विद्वान् थे। शास्त्री जी ने बालावस्था में ही यजुर्वेद एवं अष्टाध्यायी कण्ठस्थ कर ली थी। आचार्य जी ने निम्निलिखित रचनाओं के माध्यम से सरस्वती की सेवा की है- ***व्यवहारभानु, दयानन्दचन्द्रोदयम्, श्रीगान्धिचरितामृतम्, भक्तफूलसिंहचरितम्, इन्दिराकीर्तिशतकम्।***

शक्तिधर शास्त्री- शास्त्री जी जन्म 21 मार्च 1973 ई. को ग्राम गांजबड जिला पानीपत में हुआ। इनके दो स्तोत्रकाव्य उपलब्ध होते हैं- **शिवचरित एवं बृहस्पतिस्तुति।**

आचार्य प्रियव्रत वेदवाचस्पति- आचार्य जी का जन्म वि. सं 1958 (कुछ विद्वान् वि. 1963) में ग्राम भावुपुर, जिला पानीपत में श्री विजयसिंह के घर पर हुआ। इनका बचपन का नाम निहाल सिंह था। इनके पिता ने 11 वर्ष की अवस्था में इन्हें गुरुकुल कांगडी भेज दिया। आचार्य जी ने सं 1969 से 1984 तक गुरुकुल में 15 वर्ष तक गहन अध्ययन किया। आचार्य के ग्रन्थों में वैदिक साहित्य के दर्शन होते हैं, इनके निम्नलिखित ग्रन्थ हैं- ***वरुण की नौका*** (वेद में वर्णित वरुण देवतात्मक सूक्तों की मीमांसा), ***वेद का राष्ट्रीय गीत, मेरा धर्म, वेदोद्यान के चुने हुए फूल,***

प्राचीन भारत में प्रतिरक्षाव्यवस्था, वैदिकव्यवस्था, समाज का कायाकल्प, वैदिकराजनीति में राज्य की भूमिका आदि।

डॉ. गंगा राम गर्ग- डॉ. गर्ग का जन्म 12 अप्रैल 1924 को ग्राम कोहण्ड, जिला पानीपत में हुआ। इनके पिता जी का नाम लाला मुंशीराम था। पंजाब विश्वविद्यालय से पी.एच.डी. करके ये गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय में अंग्रेजी के प्रवक्ता हो गए। इनकी भारतीय भाषाओं एवं आचार्यों में विशेष निष्ठा थी। इन्होंने निम्नलिखित ग्रन्थ लिखे- ***Encyclopadia of Indian literture.*** Etc.

विष्णुमित्र विद्यामार्तण्ड- विद्यामार्तण्ड जी का जन्म 1913 ई. में बुवाना लाखू, जिला करनाल में एक किसान परिवार में हुआ। आचार्य जी की प्रारम्भिक शिक्षा गुरुकुल भैंसवाल कलाँ, गोहाना से हुई। गुरुकुल में रहकर ही इन्होंने वैदिक साहित्य एवं दर्शनों का गहन अध्ययन किया। सन् 1976 ई. में गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय ने इनको सर्वोच्च मानद् उपाधि 'विद्यामार्तण्ड' से अलंकृत किया। आचार्य जी ने गद्यशैली से सरस्वती की उपासना की है- ***स्वामिदयानन्दचरितम्, नेहरुचरितम्, इन्दिरागान्धीचरितम्, संक्षिप्तरामायणम्, संक्षिप्तमहाभारतम्, कांग्रेसस्य ऐतिह्यम्*** आदि।

डॉ. जिया लाल कम्बोज- इनका जन्म 1937 ई को गाँव साँतडी, जिला करनाल में हुआ। इनकी शिक्षा दिल्ली विश्वविद्यालय से हुई और 1997 ई. में हिन्दु महाविद्यालय, दिल्ली से सेवानिवृत्त हुए। इन्होंने ***ऋग्वेद के चार मण्डलों पर भाष्य*** लिखा है।

डॉ. वेदप्रकाश वेदालंकार- वेदालंकार जी का जन्म 6 जनवरी 1941 ई. में गुमथला, जिला करनाल में हुआ। आपकी शिक्षा गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय हरिद्वार में हुई। इनकी निम्नलिखित रचनाएँ हैं- ***उपनिषद् दर्पण, आदिकवि वाल्मीकि, संस्कृतनिबन्धाञ्जलिः।***

जगदेव सिंह सिद्धान्ती- इनका जन्म सन् 1900 ई में ग्राम बडहाणा, झज्जर में चौधरी प्रीत राम के घर पर हुआ। इन्होंने 1917 से 1921 तक सेना में रहे। इन्होने पंजाब विश्वविद्यालय से शास्त्री की उपाधि प्राप्त करके लाहौर से सिद्धान्तभूषण की परीक्षा उत्तीर्ण की। वेदविद्या के

प्रचार – प्रसार के लिए इन्होंने अनेक ग्रन्थ लिखे- ***हम संस्कृत क्यों पढे, संस्कृत वाङ्मय का संक्षिप्त परिचय, वैदिक धर्म परिचय*** आदि।

मुनिदेवराज विद्यावाचस्पति- देवराज जी का जन्म 21 जुलाई 1893 ई. को गाँव गाजीवाला, जिला नजीबाबाद (उ. प्र.) में श्री ज्वाला प्रसाद जी के घर हुआ था। विद्यावाचस्पति जी ने 1916 ई. में गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय से विद्यावाचस्पति स्नातक की उपाधि प्राप्त की। इन्होंने गुरुकुल झज्जर से अध्यापन का कार्य प्रारम्भ किया और आजीवन ये यहीं पर रहे। मुनि जी ने निम्नलिखित रचनाओं के माध्यम से संस्कृत की सेवा की है- ***अग्निहोत्र, वैदिक भारत में यज्ञ और उसका आध्यात्मिक स्वरूप, वैदिक सन्ध्या।*** मुनि जी ने अपनी आत्मकथा ***'माया का खेल'*** भी लिखी है।

1.2.3 हिसार मण्डल की सारस्वत पृष्ठभूमि-

स्वामी हीरादास– स्वामी जी का जन्म 19 वीं शताब्दी में हुआ। ये स्वामी रामरत्न के शिष्य थे। स्वामी जी ने ***'दादूरामोदय'*** नामक की रचना की। इस महाकाव्य में 24 विश्राम/सर्ग हैं। इसके अधिकांश पद्यों में अनुष्टुप् छन्द का प्रयोग हुआ है।

पं शिवनारायण शास्त्री– पण्डित जी का जन्म 1885 ई. में गतौली, जीन्द में पं. अमीलाल के घर हुआ। इनके पिता तथा माता शारदा देवी ने शिक्षा प्राप्त करने के लिए इन्हे काशी भेज दिया। ये न्यायशास्त्र के विख्यात विद्वान् थे। इन्होंने न्यायसिद्धान्तमुक्तावली की सरल एवं विस्तृत व्याख्या लिखी है। इन्होंने सांख्यतत्त्वप्रबोधिनी पर भी ***सारबोधिनी टीका*** लिखी।

श्री हरिपुष्पाचार्य- आचार्य जी का जन्म 10 जुलाई 1908 को गतौली जिला जीन्द में हुआ। इनके पिता जी का नाम श्री रूपचन्द एवं माता का नाम सुशीला देवी था। ये न्याय, व्याकरण के प्रकाण्ड विद्वान् थे। इन्होंने निम्नलिखित ग्रन्थ लिखकर सरस्वती की आराधना की है- ***न्यायप्रकाश*** (न्यायमुक्तावली पर टीका), ***काव्यप्रकाशलतिका, वेदनिरुक्तलतिका, साहित्यदर्पणलतिका एवं नैषधचरित पर टीका।***

छज्जूराम विद्यासागर- विद्यासागर जी का जन्म सन् 1894 में रिटोली गाँव, जिला जीन्द में पिता पं. मोक्षराज के घर हुआ। पण्डित जी की आरम्भिक शिक्षा चाचा पं. शिवदत्त व बडे भाई

मूलचन्द के सान्निध्य में हुई। पण्डित जी ने निम्नलिखित रचनाओं द्वारा संस्कृत की सेवा की है- *सुलतानचरितम्, परशुरामदिग्विजय, दुर्गाभ्युदय, छज्जुरामायणम्।*

शिवराम ज्यौतिषी- पण्डित जी का जन्म 1911 ई में गाँव बेरला, तहसील दादरी (भिवानी) में हुआ। इनके पिता का नाम शिवदत्त तथा माता का नाम धापाँ देवी था। इनका अध्ययन अनेक नगरों में हुआ। इनकी निम्नलिखित रचनाएँ है- ***हरियाणावैभवम्, गान्धिचरितम् तथा नेहरुवंशमहाकाव्यम्।***

सन्तनिश्चलदास- इनका जन्म संवत् 1760 ई में ग्राम धनाना जिला भिवानी में एक किसान परिवार में हुआ। इन्होंने वेदान्तविषयक तीन ग्रन्थों की रचना की है ये ग्रन्थ हैं- ***विचारसागर, वृत्तिप्रभाकर एवं युक्तिप्रकाश।***

रमेशचन्द्र शालिहास- इनका जन्म 25 जुलाई 1925 ई को सिरसा में हुआ। ये हिन्दी एवं संस्कृत के कवि थे। इनकी निम्नलिखित रचनाएँ हैं- ***श्यामगीतांजली, श्याममहिम्नः स्तवः, सत्यसप्तकं, भडलीपुराण, मरुद्दूतम्, सन्तस्वरागार*** आदि। ***सन्तस्वरागार*** में कबीर, सूरदास एवं मीरा आदि के पद्यों का संस्कृतानुवाद है।

मुनि लक्ष्मीनिवास– जैन मुनि लक्ष्मीनिवास का जन्मस्थान सिरसा में हुआ इनका समय 15-17 वीं शताब्दी में हुआ। इन्होंने कालिदास के मेघदूत के अतिरिक्त घटककर्पर काव्य पर ***शिष्यहितैणी,*** मेघाभ्युदय पर ***मुक्ताबोधिनी*** एवं मानककविप्रणीत वृन्दावन काव्य पर भी विद्वत्तायुक्त टीका लिखी है।

वनमालिदास– इनका जन्म सन् 1917 में बाँस गाँव, जिला हिसार में तुलाराम के घर हुआ। इनकी माता जी का नाम जंजीरी देवी था। इनके जन्म से पहले ही इनके पिता का देहावसान हो गया था। इसलिए माता की देख रेख में लालन-पालन हुआ। ये अद्वितीय प्रतिभा सम्पन्न कवि थे। इनकी निम्नलिखित रचनाएँ हैं- ***श्रीकृष्णानन्दमहाकाव्यम्, श्रीहरिप्रेष्ठमहाकाव्यम्, श्रीवनमालिप्रार्थनाशतकम्, श्रीभक्तनाममालिका*** आदि।

जगदीश चन्द्र शास्त्री- शास्त्री जी का नाम 1925 ई में नाढौडी, जिला फतेहाबाद में हुआ।इनके निम्नलिखित रचनाएं हैं- ***श्रीपरशुरामचरितम्*** एवं ***गुरुगाथा।***

1.2.4 गुडगाँव मण्ड़ल की सारस्वत पृष्ठभूमि-

ब्रह्मदत्त वाग्मी- वाग्मी जी का जन्म 19 दिसम्बर 1916 ई. में घामडौज, जिला गुडगाँव में हुआ। इनके पिता का नाम श्री खुशहाल चन्द्र तथा माता का नाम रामकौर देवी था। इनकी आरम्भिक शिक्षा सीकरी, बल्लभगढ में हुई। इन्होंने लेखन द्वारा संस्कृत की आराधना की है, इनकी निम्नलिखित कृतियाँ हैं- ***पार्थचरितम्, अद्भुतपञ्चताकाव्य, शुकशोकान्तः, स्तवराजः, समष्टिसिद्धान्त।***

लक्ष्मण सिंह अग्रवाल- अग्रवाल जी का जन्म गुडगाँव के सेतली ग्राम में हुआ। ये बचपन में ही अन्धे हो गये थे, अपनी कमी को दूर करते हुए अग्रवाल जी ने प्रतिभा को उजागर किया। इनकी निम्नलिखित रचनाएँ हैं- ***भवन्ति भाविनो भव्याः, कुटुम्बिनी, अभिनववीणा, श्रीरामरसायनम्, कालरात्रिः, राष्ट्रदर्पण*** एवं ***ऋतम्भरा।***

डॉ. सुधीर कुमार गुप्त- डॉ. गुप्त जी का जन्म जिला गुडगाँव के अटाली ग्राम 1 मई 1917 ई. में हुआ। इन्होंने शास्त्री पंजाब विश्वविद्यालय से तथा एम. ए. दिल्ली विश्वविद्यालय एवं पी.एच.डी. राजस्थान विश्वविद्यालय से उपाधि प्राप्त की। ये वेद के विख्यात विद्वान् थे। इनकी निम्नलिखित कृतियाँ हैं- ***वेदलावण्यम्, वेदभारती, रावणभाष्यम्*** (सूर्यपण्डित की टीका के साथ सम्पादित व हिन्दी अनुवाद), ***वेदभाष्यपद्धति को दयानन्द सरस्वती की देन*** आदि।

वैद्य शंकरलाल शर्मा- शर्मा जी का जन्म जिला महेन्द्रगढ़ में धौलेड़ा ग्राम में सन् 1918 को हुआ। इनकी दो रचनाएँ उपलब्ध हुई हैं- ***ऋतुविहार*** (खण्डकाव्य) एवं ***शशिप्रभा*** (उपन्यास) ।

आचार्य विरजानन्द दैवकरणि- आचार्य जी का जन्म गाँव भगड्याण, जिला महेन्द्रगढ़ में 2 दिसम्बर 1945 ई. में श्री देवकरण के घर हुआ। इनकी शिक्षा स्वामी ओमानन्द सरस्वती के संरक्षण में गुरुकुल झज्जर में हुई। ये खरोष्ठी एवं ब्राह्मी के अच्छी तरह पढ़ सकते थे। इनकी निम्नलिखित रचनाएँ हैं- ***महर्षि दयानन्द और उनके सिद्धान्त, महाभारत युद्ध, भारतीय इतिहास के स्रोत, कुतुबमीनार –एक रहस्योद्घाटन*** आदि।

कैप्टन रामभगत् शर्मा- इनका जन्म 15 जून 1932 ई. को खुडाना ग्राम जिला महेन्द्रगढ़ में हुआ। ये 13 वर्ष की आयु में घर छोडकर काशी चले गए। वहाँ पर इन्होंने शास्त्री की उपाधि

ग्रहण की। इन्होंने चार महाकाव्य एवं एक गीतिकाव्य से शारदा की सेवा की है। इनकी निम्नलिखित कृतियाँ हैं- ***श्रीजयरामदासचरितम्, पूनाहोर्सविजयम्, रामाभिरामीयम्, महाभारतभारती*** एवं ***वाग्देवीमहिमा।***

हंसराज नागर- नागर जी का जन्म 5 अप्रैल 1939 ई. में फरीदाबाद के तिगाँव ग्राम में हुआ। इन्होंने संस्कृत अध्यापक रूप में सेवाकार्य करते हुए 8 रचनाओं की रचना की। ये ग्रन्थ निम्नलिखित हैं- ***गुरुप्रशस्ति, सरस्वतीवन्दना, गायत्रीस्तुति, यज्ञमहिमा, जन्मभूमिर्मे भारतम्, हरियाणावैभवम्, गुरुविरजानन्दचरितम्*** आदि।

डॉ. ईश्वर चन्द शर्मा- शर्मा जी का जन्म गाँव सुरेहली, जिला रिवाडी में 21 अपैल 1955 ई में हुआ। ये व्याकरणशास्त्र के प्रकाण्ड विद्वान् थे। इन्होंने निम्नलिखित कृतियाँ लिखकर शारदा की सेवा की है- ***वैयाकरणसिद्धान्त कौमुदी की वैदिक प्रक्रिया का समीक्षात्मक अध्ययन, लघुसिद्धान्तकौमुदी की टीका, पाणिनीयशब्दानुशासन, चतुर्वेदभाष्य*** आदि।

इस प्रकार प्राचीन काल से ही हरियाणा प्रदेश के विद्वानों ने सरस्वती की आराधना की है और वर्तमान समय में भी निरन्तर शारदा की सेवा कर रहे है। हरियाणा प्रदेश में विद्वान् अन्य प्रान्त से आकर भी शारदा की निरन्तर सेवा कर रहे हैं।

1.4 पाण्डुलिपि का अर्थ :-

आधुनिक उन्नति का मुख्य साधन प्राचीन उपलब्धियों का समुचित उपयोग माना गया है। अत एव प्राचीन उपलब्धियों को कभी भी उपेक्षित नहीं किया जा सकता। प्राचीन उपलब्धियों के समुचित उपयोग से ही हम वर्तमान का समुचित निर्माण कर सकते हैं। यही कारण है कि संसार के समस्त उन्नत और विकासशील देश, चाहे वे किसी भी विचारधारा अथवा सिद्धान्त के अनुगामी हों, प्राचीन राष्ट्रीय धरोहर को विशेष महत्त्व देते हुए उससे पूर्णरुप से लाभान्वित होते हैं।

देश-विदेश के मनीषियों ने अपने ज्ञान-विज्ञान को भावी पीढियों के लिए उपयोग करने हेतु मुख्यतः पाण्डुलिपियों में सुरक्षित किया है, जिसके परिणाम स्वरूप देश-विदेश में भारी संख्या में पाण्डुलिपियों के भण्डार प्राप्त होते हैं।

पाण्डुलिपि को अंग्रेजी भाषा में **"मैन्युस्क्रिप्ट"** कहते हैं जो लेटिन भाषा के **"मेनू"** शब्द से बना है।[22] पाण्डुलिपि का मूल अर्थ है- लेख आदि का पहला रूप। तथापि हर प्रकार की हस्तलिखित सामग्री को पाण्डुलिपि कहा जाता है।

"मैन्यूस्क्रिप्ट" को हस्तलेख नाम भी दिया जाता है। **"रूढ़ अर्थ में पाण्डुलिपि का उपयोग हाथ की लिखी पुस्तक के उस रूप को दिया जाने लगा है जो प्रेस में मुद्रित होने के लिए देने की दृष्टि से अन्तिम रूप से तैयार हो"।**[23]

संस्कृत साधना की ज्ञानगंगा में हरियाणा प्रदेश के गुरुकुलों, शोधकेन्द्रों एवं महाविद्यालयों तथा विश्वविद्यालयों में शोधकार्य अपनी अबाध गति को प्राप्त करते हुए निरन्तर अग्रसर है। इन विद्यास्थानों में पाण्डुलिपियाँ/ हस्तलिखित ग्रन्थ, शोधप्रबन्ध, लघुशोधप्रबन्ध के संरक्षण का कार्य निर्बाध गति से किया जा रहा है। संस्कृत ज्ञानपरम्परा का प्रमुख स्रोत पाण्डुलिपियों को माना जाता है। इनका संरक्षण एवं संवर्धन करना हमारा मौलिक कर्त्तव्य है। प्रस्तुत शोधप्रबन्ध का केन्द्रबिन्दु पाण्डुलिपियों का सर्वेक्षण करना है।

---

[22] . *हमारे अतीत (क-6), पृ-4*

[23] . *भारतीय साहित्य, पृ-120*

द्वितीय अध्याय

2.1 वेद का अर्थ एवं परिचय-

भारतीय संस्कृति और सभ्यता संसार की संस्कृतियों में अपना विशिष्ट स्थान रखती है तथा यह संस्कृति वर्तमान समय में भी अपनी मौलिकता बनाए हुई है। अतः भारतीय संस्कृति का वैदिक साहित्य है। वैदिक साहित्य वह ज्योतिस्तम्भ है, जिसके प्रकाश से हम अपने गौरवमय अतीत की झाँकी देख सकते हैं। महर्षि मनु ने मनुस्मृति में 'वेद को सभी धर्म के मूल के रूप में स्वीकार किया है'।[24] मनुष्य के जीवन का कोई भी पक्ष नहीं है, जिसके दर्शन हमें वेद में न होता हो, त्रिविध लोक, चतुर्विध वर्ण, आश्रम तथा वर्तमान, भूत, भविष्यत् का ज्ञान वेदों के द्वारा ही सम्भव है-

"चातुर्वर्ण्यत्रयो लोकाश्चत्वारश्चाश्रमाः पृथक्।

भूतं भव्यं भविष्यं च सर्वं वेदात् प्रसिद्धयति"॥[25]

आचार्य बलदेव उपाध्याय वेदों का महत्त्व बतलाते हुए कहते है कि **"वेदों से भारतीयों का जीवन ओतप्रोत है। हमारी उपासना के भाजन देवगण, हमारे संस्कारों की दशा बतलाने वाली पद्धति तथा हमारे मस्तिष्क को प्रेरित करने वाली विचारधारा इन सबका उद्भव स्थान वेद है तथा श्रुतियों एवं वेद की सहायता से ही भारतीय दर्शन के विविध विकास को हम भली-भाँति समझ सकते हैं। उपनिषदों में समग्र आस्तिक और नास्तिक दर्शनों के तत्त्वों की बीजरूप से उपलब्धि होती है"।[26]** अतः भारतीय दर्शन के आविर्भाव एवं विकास को जानने के लिए एकमात्र महत्त्वपूर्ण स्रोत वेद ही है।

---

[24] . *मनुस्मृति*, वेदोऽखिलं धर्ममूलम् 2/6

[25] . *मनुस्मृति*, 12/97

[26] . *वैदिक साहित्य एवं संस्कृति*, पृ- 8

वेद शब्द का अर्थ-

वेद शब्द का अर्थ 'विद्' धातु से निष्पन्न हुआ है। जिसका अर्थ है- ज्ञान। इसीलिए वेद को ज्ञान का अनन्त भण्ड़ार स्वीकार किया जाता है। तैत्तिरीय संहिता के अनुसार वेद का अर्थ- **वेदेन वै देवा असुराणां वित्तं वेद्यमविन्दन्त तद् वेदस्य वेदत्वम्।**[27]

अदादिगणीय 'विद् ज्ञाने' धातु से घञ् प्रत्यय के योग से निष्पन्न वेद शब्द का अर्थ है- **"वेत्ति जानाति धर्मादि-पुरुषार्थचतुष्टयोपायान् अनेन इति वेदः"**[28] अर्थात् जिसके द्वारा धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष रूप पुरुषार्थ चतुष्ट्य को प्राप्त करने वाले उपायों को जाना जाता है, उसे वेद कहते हैं- **मन्त्रब्राह्मणयोर्वेदनामधेयम्।**[29]

श्रीमद्भागवतपुराण के अनुसार-

"वेदप्रणहितो धर्मो ह्यधर्मस्तद्विपर्ययः।
वेदनारायणः साक्षात् स्वयम्भूरिति शुश्रुम्"॥[30]

अर्थात् वेदों में जिन कर्मों का विधान किया है, वे धर्म हैं और जिनका निषेध किया है, वे अधर्म हैं। वेद स्वयं भगवान् के स्वरूप हैं तथा उनके स्वाभाविक श्वास, प्रश्वास एवं स्वयंप्रकाश ज्ञान है। अरविन्द घोष के अनुसार-

ज्ञान की पवित्र पुस्तक के रूप में अन्तःस्फुरित कविता के एक विशाल संग्रह का नाम वेद है।[31]

इस प्रकार विभिन्नार्थक धातुओं से निष्पन्न वेद आधिभौतिक, आधिदैविक, आध्यात्मिक त्रिविध अर्थों के प्रतिपादक पुरुषार्थचतुष्टय के साधक समस्त ज्ञान-विज्ञान के संवाहक भारतीय ऋषि-

---

[27] . *तैत्तिरीय संहिता*, 1/4/201

[28] . *वैदिक वाङ्गमय का इतिहास*, पृ- 6

[29] . *वैदिक वाङ्गमय का इतिहास*, पृ-14

[30] . *भागवतपुराण*, 6/1/40

[31] . *वेद रहस्य*, पृ- 1

मनीषियों के प्रत्यक्ष ज्ञान के महान् आदर्श हैं। उन्होंने वेद में संसार के आध्यात्मिक चिन्तन विषयक चिरन्तन तत्त्वों को ही वेद में प्रस्तुत किया है।

अर्थात् मन्त्रों वाली मूल सहिताएँ- ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद ही वेद नहीं हैं अपितु मन्त्रों वाली मूल संहिताएँ तथा उनके व्याख्यापरक सभी ग्रन्थ ब्राह्मण, आरण्यक और उपनिषद् भी वेद है। इस प्रकार वेद ही सभी विषयों के आधार हैं। वेदों से ही लौकिक साहित्य, दर्शन, धर्मशास्त्र आदि का उद्भव एवं विकास हुआ है।

2.1.1 वेद की पाण्डुलिपियाँ-

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में कुरुक्षेत्र सर्वेक्षण के दौरान अधोलिखित पाण्डुलिपियों का संकलन एवं सर्वेक्षण किया है, जिनका वर्ण इस प्रकार है।

1. वेदस्तुति टीका पाण्डुलिपि का सामान्य विवरण-

- पाण्डुलिपि का रचयिता- चूडामणि चक्रवर्ती
- पाण्डुलिपि क्रमांक- 51429
- बन्डल संख्या- 244
- रैक संख्या- 21
- पाण्डुलिपि का रचनाकाल- संवत् 1852, पुष्पिका के आधार पर।
- पाण्डुलिपि का प्राप्ति स्थान- पा.मि., ज.ल, ने.पु., कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय कुरुक्षेत्र।
- भाषा- संस्कृत।
- लिपि- देवनागरी।
- कुल पत्र संख्या- 26

- पाण्डुलिपि की अवस्था- इस पाण्डुलिपि के पत्रों की अवस्था अच्छी है।
- पाण्डुलिपि की लम्बाई एवं चौडाई- 32 X 16
- पृष्ठ पर रेखाओं की संख्या- एक पृष्ठ दो भागों में विभक्त है एवं प्रत्येक पृष्ठ पर 17,18,20 एवं अन्तिम पृष्ठ पर 6 रेखाएँ प्राप्त होती है।
- अक्षरों की संख्या- अक्षरों की संख्या अनिश्चित है।
- हाशिया- इस ग्रन्थ के पृष्ठों पर हाशिया दोनों तरफ दिया गया है। हाशिया के लिए काली स्याही एवं चार-चार रेखाएँ खीची गई हैं। इस ग्रन्थ में पृष्ठक्रमांक बाएँ ओर ऊपर दिया गया है।
- पाण्डुलिपि के सन्दर्भ में विशेष- इस पाण्डुलिपि के पृष्ठों को सिलवर फिश के द्वारा कहीं-कहीं से खाया गया है, जिसके कारण पृष्ठ में छेद हो गए हैं। इसमें ग्रन्थकार ने हाशिया में भी लिखा है तथा गलत अक्षर को मिटाने के लिए पीली स्याही का प्रयोग किया गया है। इस पाण्डुलिपि के किनारे पर भी ग्रन्थकार ने लिखा है।
- पाण्डुलिपि का मंगलाचरण-

॥ श्रीगणेशाय नमः॥

सच्चिदानंदरूपाय कृष्णायाक्लिष्टकारणे। नमो वेदान्तवेद्याय गुरवे बुद्धिसाक्षिणे॥१॥ अथ वेदस्तुति व्याख्या श्रीधरपूज्यपादैर्याकृतासैव तदनुकूलाधिकपदकदेव संवर्द्धिता व्यक्तार्था यथा स्यात्तथा स्वीयानां सुखबोधाय मयात्र लिख्यते॥ तथा च श्रीमच्छंकरपूज्यपादकृतभाष्यानुमतेन श्रुतीनां व्याख्या क्रीयते ज्ञातव्यम्॥ तत्रायं क्रमो ज्ञेयः॥ प्रथमाभासः १. ततः श्लोकः २. तस्य अन्वयोः ३. अर्थश्च ततः पूर्णाशक्तिः ४. तदर्थश्च ५. ततः सिद्धान्तः इति। श्रीस्वामीचरणानां पूर्वाध्यायान्ते॥ एवं स्वभक्तयोः राजन् भगवान् भक्तभक्तिमान्॥

- पाण्डुलिपि की पुष्पिका-

अथ स्वामिश्रीचरणानां॥ सर्वशक्तिशिरोरत्ननीराजितपदां बुजम्।। भोगयोगप्रदं वंदे माधवं कर्मिनस्त्रयोः॥ माधवं श्रीकृष्णमहं वंदे कथं भूतः सर्वशक्तिशिरोरत्नैः नीराजितं निर्मेश्च नीकृतं पदां बुजं यस्य तम्॥ यु नश्वा कर्मिनस्त्रयोर्भोगयोगप्रदं कर्मिणां भोगप्रदम्।। नम्राणां भक्तानां भक्तियोगप्रदम्।। यद्वा नम्राणां तन्नमस्कारानाम्।। गीतासु मानं नमस्कुरु योगक्षेमप्रदमित्यर्थः॥ ५९॥ वृदारण्ये निकुञ्जस्थः कविचूडामणिः द्विजः॥ शक्तिस्तुतिशक्तिव्याख्यामकरोत् सर्वं समताम्॥ १॥ ननु श्रीभागवतस्य शक्तेश्च दुर्विज्ञेयमर्थं कथं ज्ञातवान् सत्यं श्रीमहच्चरणारविंदसंदर्शितमार्गेण इत्याह॥ हरिणाश्रीधराख्येन रचितां भावदीपिकाम्॥ गृन्हन् भक्त्या जडोप्पेति परमार्थं नमत्सरी॥ २॥अन्यच्च॥ यथोपदिष्टं गुरुणा बुद्धौ श्रीनन्दसूनुना॥ तथैव कृतवान् तस्मिन् दोषान् अवगुणाः॥ ३॥ इति श्री कविचूडामणिचक्रवर्ती विरचितायामन्वयबोधिन्यां टीकायां सप्ताशीतितमोऽध्यायः॥ खाष्टवाणनिशानाथमते शाकेशक्तिस्तुते॥ पूर्णतामनयव्याख्यां चूडामणिकविः सुधिः॥ ४॥संवत् १८५२मिति वैशुदि १३भृगुवारे। पूर्वलिप्यनुसारेण लिखितं निश्चितं तथा।कृष्णदासस्य दासेन कृष्णं यदा सेविना॥ ५॥

वेदस्तुति टीका पाण्डुलिपि का चित्र

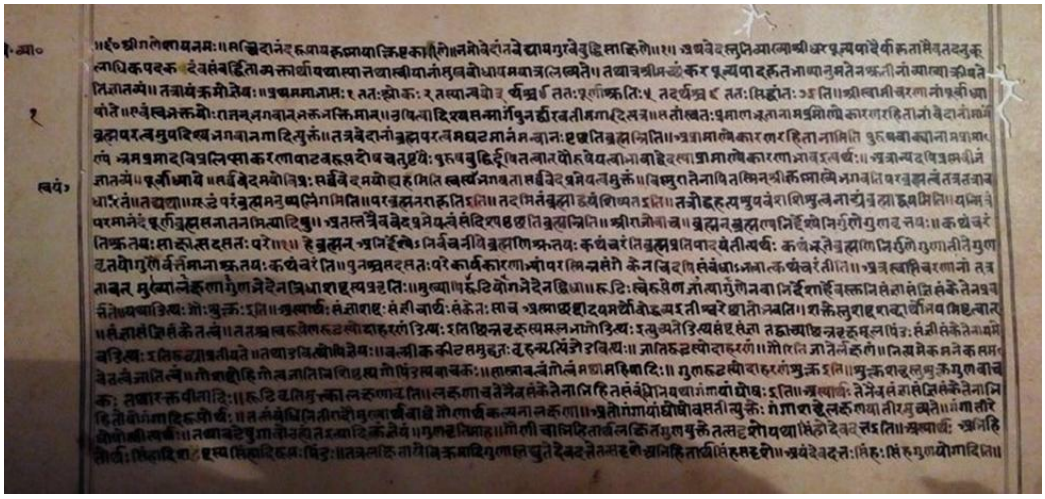

2. पितृसंहिता पाण्डुलिपि का सामान्य विवरण-

- पाण्डुलिपि प्राप्ति स्थान- पाण्डुलिपि मिशन, जवाहर लाल नेहरु पुस्तकालय, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय कुरुक्षेत्र।
- पाण्डुलिपि का रचयिता- अज्ञात।
- पाण्डुलिपि क्रमांक- 52649
- बन्ड़ल संख्या- अप्राप्त
- रैक संख्या- अप्राप्त
- पत्र सामग्री- कागज, काली एवं लाल स्याही।
- पाण्डुलिपि का रचनाकाल- निर्धारित नहीं किया जा सकता।
- भाषा- संस्कृत।
- लिपि- देवनागरी।
- पत्र संख्या- 05
- पाण्डुलिपि की अवस्था- इस पाण्डुलिपि के पत्र अच्छी स्थिति में हैं।
- पत्र की लम्बाई एवं चौडाई- अप्राप्त।
- पत्र पर रेखाओं की संख्या- एक पृष्ठ दो भागों में विभक्त है एवं प्रत्येक पृष्ठ पर 7 एवं अन्तिम पृष्ठ पर 3 रेखाएँ प्राप्त होती है।
- अक्षरों की संख्या- सामान्यतः अनिश्चित है।
- हाशिया-इस ग्रन्थ के किसी पृष्ठ पर हाशिया नहीं दिया है। पृष्ठ के बाएँ एवं दाएँ दोनों ओर ऊपर एवं नीचे पृष्ठक्रमांक दिया गया है।

- पाण्डुलिपि के सन्दर्भ में विशेष- इस पाण्डुलिपि में पूर्णविराम, उदात्त-अनुदात्त-स्वरित के लिए लाल स्याही का प्रयोग किया गया है। इसमें छूटे हुए अक्षर के लिए '^' चिह्न का प्रयोग किया गया है। इस पाण्डुलिपि का एक पृष्ठ बीच में से फटा हुआ है जिसको टेप लगाकर चिपकाया गया है।

- पाण्डुलिपि का मंगलाचरण-

  ॥ओम् स्वस्ति श्रीगणेशाय नमः॥

  अग्नये कव्यवाहनाय स्वाहा सोमाय पितृमत्ते स्वाहा॥अपहत्ताऽसुरारक्षां सिद्येदिषदः॥१॥ ये रूपाणि घ्रतिमुश्चमानाऽसुराः सन्तः स्वधया चरन्ति॥ परापुरो निपुरो ये भरन्त्यग्निष्टाँल्लोकात्प्रणुदात्त्यस्मात्॥२॥ अत्र पित्तरः॥ अत्र पितरोमाद् यद्वं यथा भागमावृषायह्वम्॥ अमीमदन्तपितरो यथा भागमावृषा विषत॥३॥ नमोवः॥नमोवः पितरो रसाय नमोवः पितरः शेषाय नमोवः पितरो जीवाय नमोवः पितरः स्वधायै नमोवः पितरो धोराय नमोवः पितरो मन्यवे नमोवः पितरः पितरो नमोवो गृहान्नः पितरो दत्त सतोवः पितरो द्वेष्म्मैतद्वः पितरो वासऽआधत्त॥४॥

- पाण्डुलिपि की पुष्पिका-

  इदं पितृभ्यो नमो अस्त्वद्यये पूर्वासोय उपरास ईयुः॥ ये पार्थिवे रजस्यानिषत्ताये वा नूनं सुवृजनासु दिक्षु॥४८॥ अधायथानः पितरः परासः प्रयत्नासोऽग्नऽऋतमा श्रुषाणः॥ श्रुचीदयं दीधितिमुक्थशासः क्षामाभिंद्रन्तोऽरुणीरणव्रन्॥४९॥ उशन्तस्त्वा॥निधीमह्युशंत्रः समि धी महि उशन्नुशत्तऽऽवह पितृन् विषेऽअत्तवे॥५०॥ इति पितृसंहिता समाप्ता शुभं भूयात्॥

पितृसंहिता पाण्डुलिपि का चित्र

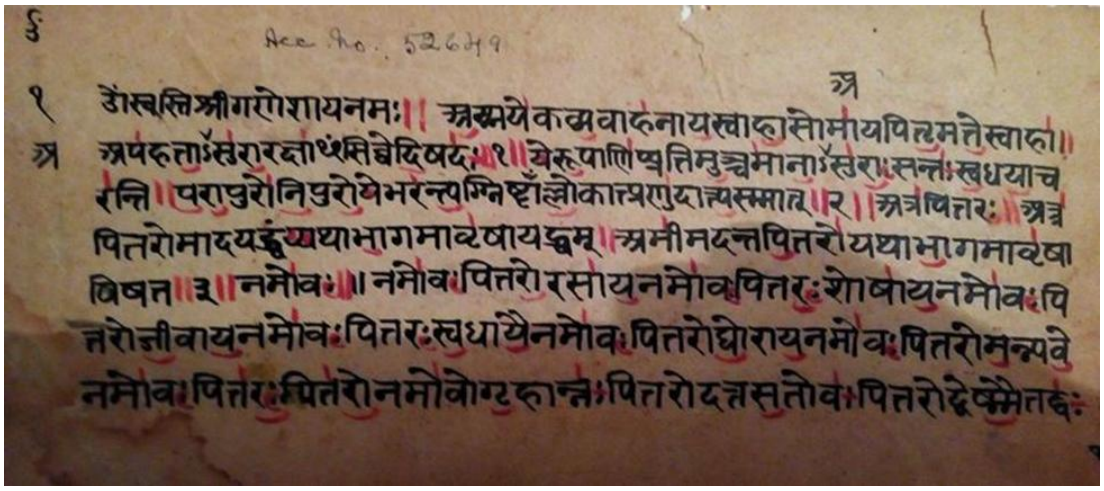

3. धनुर्विद्या पाण्डुलिपि का सामान्य विवरण-

- पाण्डुलिपि प्राप्ति स्थान- पाण्डुलिपि मिशन, जवाहर लाल नेहरु पुस्तकालय, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय कुरुक्षेत्र।
- पाण्डुलिपि का रचयिता- अज्ञात।
- पाण्डुलिपि क्रमांक- 50413
- बन्डल संख्या- 143
- रैक संख्या- 14
- पत्र सामग्री- कागज, काली स्याही।
- पाण्डुलिपि का रचनाकाल - निर्धारित नहीं किया जा सकता।
- भाषा- संस्कृत।
- लिपि- देवनागरी।
- पत्र संख्या- 06

- पाण्डुलिपि की अवस्था- इस पाण्डुलिपि के पत्र अच्छी स्थिति में हैं।
- पत्र की लम्बाई एवं चौडाई- 30.6 X 14.6
- पत्र पर रेखाओं की संख्या- एक पृष्ठ दो भागों में विभक्त है एवं प्रत्येक पृष्ठ पर 15 एवं अन्तिम पृष्ठ पर 06 रेखाएँ प्राप्त होती है।
- अक्षरों की संख्या- सामान्यतः अनिश्चित है।
- हाशिया- पृष्ठ के हाशिए में बाएँ एवं दाएँ दोनों ओर ऊपर एवं नीचे पृष्ठक्रमांक दिया गया है। हाशिये के लिए काली स्याही का प्रयोग किया गया है एवं हाशिए में चार रेखाएँ दोनों ओर खींची गई है।
- पाण्डुलिपि के सन्दर्भ में विशेष- इस पाण्डुलिपि के पृष्ठ पर कहीं-कहीं पर ऊपर एवं नीचे बारीक अक्षरों में लिखा गया है, जिसको बारीक लिखने के कारण पढने में कठिनाई हो रही है। इस ग्रन्थ के प्रथम पृष्ठ को कीडे द्वारा खाया गया है।
- पाण्डुलिपि का मंगलाचरण-

  ॥श्रीगणेशाय नमः॥

  ॥अथ धनुर्विद्या।। ईश्वरोक्त धनुर्विद्या व्यासस्यापि सुभाषितम्॥ पद्यान्याकृष्य रचितो ग्रंथः संक्षेपतो मया॥१॥ विनाशाङ्गं धनुर्नान्यो धनुर्वेदार्थतत्ववित्॥ यतः स्वप्ने निशिप्राप्ता शिवः तत्र विचारणा॥२॥ अतः संदेहदोलायां रोपणी यन्नमानसम्॥ ग्रन्थेऽस्मिन् वा चतुरैः वीरचिंतामणैः क्वचित्॥३॥ यस्य अभ्यासप्रसादेन निष्पद्यन्ते धनुर्धराः॥ जेतारः परसैन्यानां तस्याभ्यासो विधीयताम्॥४॥ एकोपि यस्य नगरे प्रसिद्धः स्याद्धनुर्धरः॥ ततो यां परयोर्दूरं मृगाः सिंहगृहादिव॥५॥
- पाण्डुलिपि की पुष्पिका-

अथास्त्रविधिः॥ एवं श्रमविधिं कुर्यात् यावत्सिद्धिः प्रजायते॥ श्रमे सिद्धेव वर्षासु ग्राह्ये धनुः करे॥१॥ पूर्वाभ्यासस्य शस्त्राणामविस्मरणहे तवे॥ मासद्वयं श्रमं कुर्यात्प्रतिवर्षासु निष्टया॥२॥ ग्राह्यं धनुश्च वाश्वयुजि वर्षादिवसे सदा॥ पूजयेदीश्वरं चंडीं गुरुं शस्त्राणि वाजिनः॥३॥ विप्रेभ्यो दक्षिणां दद्यात् कुमारी भोजयेत्ततः॥ दिव्यैः पुष्पैः पशुं दद्याद् दृष्टो वादिव मंगलैः॥४॥ ततस्तु साधयेन्मंत्री वेदोक्तानागमोदितान्॥ अस्त्राणां कर्मसिद्यर्थं जपहोमविधानतः॥५॥ ब्राह्मं नारायणं शैवं ऐद्रं वारुणमेव च॥ वायव्याग्ने ययाम्यानि गुरुदत्तानि निसाधयेत्॥६॥ मनोवाक्कर्मभिर्भाव्यं लब्धास्त्रेण विपश्चिता ।।.....इतिश्रीधनुर्विद्यासमाप्तिमगमत् ॥शुभं भवतु॥ श्रीरस्तु॥श्री।।श्री॥श्री॥

धनुर्विद्या पाण्डुलिपि का चित्र

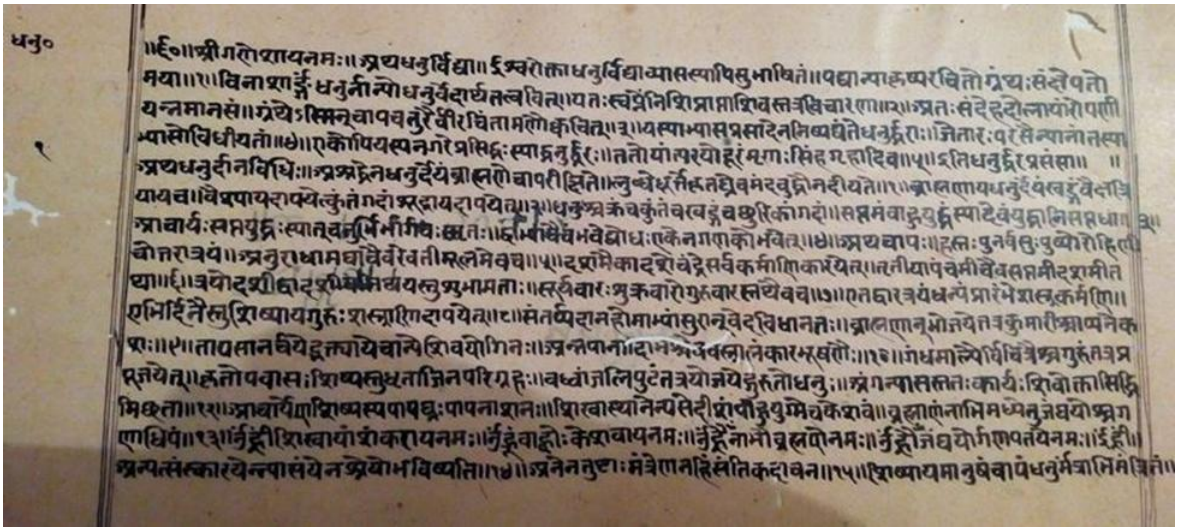

2.2 वेदांग का अर्थ एवं परिचय-

वैदिक साहित्य के अन्तिम भाग वेदान्त हैं। वेदों के उत्तरवर्ती काल में वैदिक यज्ञों के विधान बहुत कठिन एवं दुरूह हो गए कि यज्ञों के समझने के लिए एक अलग साहित्य की आवश्यकता हुई। अतः वेदों के छन्दों(मन्त्र) का अर्थ एवं उसका स्वरूप जानने के लिए एक नूतन साहित्य का सृजन हुआ, जिसको वेदान्त के नाम से जाना जाता है। **"वेदस्य अङ्गानि**

वेदाङ्गानि" [32] अर्थात् वेदांग वेद के अंग है। अंग शब्द की निष्पत्ति करते है कि **"अंग्यन्ते ज्ञायते वेदार्थ एभिरितित्यङ्गानि,वेदानामङ्गानि वेदांगानि।"**[33] अर्थात् जिसके द्वारा वेदों के स्वरूप को समझने में सहायता प्राप्त होती है उसे अंग कहतें है। वेदांग छह हैं, इसलिए इसे षडंग भी कहते हैं। आचार्य पाणिनि ने ***पाणिनीयशिक्षा*** में कहा है कि-

आचार्य पाणिनि ने उपमा द्वारा षडङ्गों का वेदों के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध बताया है। आचार्य जी वेद को एक शरीररूप में मानते हुए कहते हैं कि छन्द वेदरूपी शरीर के पांव है, कल्प हाथ है, ज्योतिष नेत्र, निरुक्त उसके कान, शिक्षा नासिका तथा उस वेदरूपी शरीर का मुख है। जैसे मनुष्य के शरीर में सभी अंगों का महत्त्व होता है तथा उनका स्थान कोई नहीं ले सकता, वैसे ही वेदों का सम्पूर्ण ज्ञान, मन्त्रों की व्याख्या तथा यज्ञादि में उनके विनियोग के ज्ञान के लिए वेदाङ्ग बहुत आवश्यक है। इसलिए वेदाङ्ग के बिना वेदों का ज्ञान अपूर्ण है।[34]

वेदाङ्ग का आरम्भ ब्राह्मण काल से ही गया था, ब्राह्मणग्रन्थों के निर्माण के लिए भी वेद मन्त्रों के अर्थ तथा उनके स्वरूप को समझना आवश्यक था, परन्तु वेदाङ्ग का प्रथम उल्लेख हमें *मुण्डकोपनिषद्* में मिलता है। *मुण्डकोपनिषद्* में वर्णित है कि-

"द्वे विद्ये वेदितव्ये इति ह स्म यद् ब्रह्मविदो वदन्ति परा चैवापरा च।

तत्रापरा ऋग्वेदो यजुर्वेदः सामवेदोऽथर्ववेदः।

शिक्षा कल्पो व्याकरणं निरुक्तं छन्दो ज्योतिषामिति"॥[35]

अर्थात् ब्रह्म को जानने वाले महर्षियों का कहना है कि मनुष्य के लिए जानने योग्य दो विद्याएँ हैं- एक परा विद्या और दूसरी अपरा। उन दोनों में से जिसके द्वारा उस लोक और परलोकसम्बन्धी भोगों तथा उनकी प्राप्ति के साधनों का ज्ञान प्राप्त किया जाता है, जिसमें भोगों की स्थिति, भोगों के उपभोग करने के प्रकार, भोग सामग्री की रचना और उनको उपलब्ध करने के नाना साधन आदि का वर्णन मिलता है वह अपरा विद्या है, जैसे–ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद

---

[32] . *वैदिक चिन्तन की धाराएँ*, पृ- 42

[33] . *वैदिक चिन्तन की धाराएँ*, पृ- 42

[34] . छन्दः पादौ तु वेदस्य, हस्तौ कल्पोऽथ पठ्यते।ज्योतिषामयनं चक्षुः निरुक्तं श्रोत्रमुच्यते॥

शिक्षा घ्राणं तु वेदस्य मुखं व्याकरणं स्मृतम्।तस्मात्साङ्गमधीत्यैव ब्रह्मलोके महीयते॥ *पाणिनीय शिक्षा*, पृ.-4

[35] . *मुण्डकोपनिषद्*, 1/1/4-5

और अथर्ववेद। जिससे अविनाशी परब्रह्म तत्त्व को जाना जाता है वह परा विद्या है- शिक्षा,व्याकरण, निरुक्त,छन्द, ज्योतिष,कल्प। महाभाष्यकार ने भी कहा है कि-

"ब्राह्मणेन निष्कारणो धर्मः षडङ्गो वेदोऽध्येयो ज्ञेयश्च।[36]

इस प्रकार वेदों के मन्त्रों का अर्थ समझने के लिए तथा उसके स्वरूप के लिए वेदाङ्गों का विशेष महत्त्व है।

2.2.1 वेदाङ्ग की पाण्डुलिपियाँ-

प्रस्तुत शोधप्रबन्ध में सर्वेक्षण के दौरान वेदाङ्ग की अधोलिखित पाण्डुलिपियों का संकलन एवं सर्वेक्षण किया है। जो भविष्य के लिए महत्त्वपूर्ण निधि है।

व्याकरण की पाण्डुलिपियाँ-

4. **प्रस्तावज्ञानबोध पाण्डुलिपि का सामान्य विवरण-**

- पाण्डुलिपि प्राप्ति स्थान- पाण्डुलिपि मिशन, जवाहर लाल नेहरु पुस्तकालय, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय कुरुक्षेत्र।
- पाण्डुलिपि का रचयिता- अज्ञात।
- पाण्डुलिपि क्रमांक- 52259
- बन्ड़ल संख्या- 334
- रैक संख्या- 25
- पत्र सामग्री- कागज, काली स्याही।
- पाण्डुलिपि का रचनाकाल- अज्ञात।

[36] . *महाभाष्य,* पस्पशाह्निक

- भाषा- संस्कृत।
- लिपि- देवनागरी।
- पत्र संख्या- 3
- पाण्डुलिपि की अवस्था- इस पाण्डुलिपि के पृष्ठ अच्छी स्थिति में हैं।
- पत्र की लम्बाई एवं चौडाई- 29.6X 14.6
- पत्र पर रेखाओं की संख्या- एक पृष्ठ दो भागों में विभक्त है एवं प्रत्येक पृष्ठ पर 11 एवं अन्तिम पृष्ठ पर 7 रेखाएँ प्राप्त होती है।
- अक्षरों की संख्या- सामान्यतः अनिश्चित है।
- हाशिया- पृष्ठ पर हाशिया नहीं दिया गया है एवं पृष्ठ पर बाएँ ओर ऊपर एवं दाएँ ओर नीचे पृष्ठक्रमांक दिया गया है।
- पाण्डुलिपि के सन्दर्भ में विशेष- इस ग्रन्थ में पृष्ठ को कहीं-कहीं से सिलवर फिश कीडे द्वारा खाया गया है। जिसके कारण पाण्डुलिपि अपाठ्य है।
- पाण्डुलिपि का मंगलाचरण-

  ॥ ऊं स्वस्ति श्रीगणेशाय नमः ॥

  पठनसर्वशास्त्राणि दुर्लभाः वभेदना शिरो वहन्ति पुष्पाणि गन्धजानाति नासिका॥१॥प्रस्तावसदृशं वाक्यं स्वभावसदृशं प्रियं आत्मशक्तिसमं कोपि यो जानाति सः पण्डितः॥२॥ दुर्जनो दृश्य यरोवसतां गुणगणं क्षणात् मलिनीं कुरुते धृमः सर्वर्था विमलां वरम्॥३॥
- पाण्डुलिपि की पुष्पिका-

किंचिदाश्रयसंयोगाद् ते शोभामसाध्वपि कां नाविलोचनेन्यस्तं मलीनसमिव अञ्जनम्।।८७॥ एकाकी वसते नित्यं पर्वते गंधमादने किमर्थं कांचनी कायं किमर्थं सुकरी मुखम्॥८८॥ उपदेशो न दातव्यो यादृशे तादृशे नरे पश्य वा नरमुर्खेन सुगृहं निगृहं कृतम्॥८९॥ हस्तपादसमायुक्तो दृश्यते पुरुषाकृतिः सितेन विद्यते मृटगृहं किं न करोति च॥९०॥ सुचीमुखी दुराचारि रे पंडितवादिनि असमर्थोगृहारं भो समर्थो गृहभंजने परिपूर्णकुम्भं न करोति शब्दं अर्धं घटः घोषमर्थेति नाद्यं मुनिनराणां न करोति गर्वं गुणविहूनन्वहूमाशनेव॥ इति श्री प्रस्तावज्ञानबोधसंपूर्णम्॥

प्रस्तावज्ञानबोध पाण्डुलिपि का चित्र

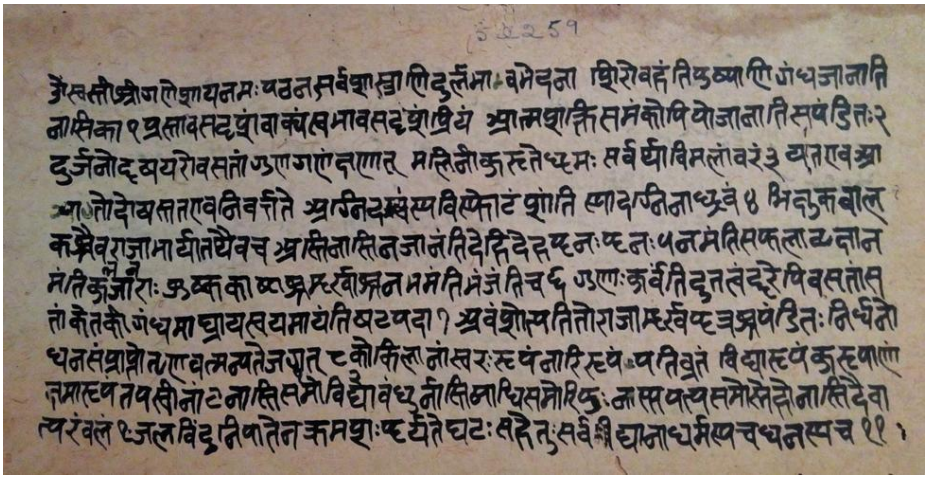

5. तद्धितोपदेश पाण्डुलिपि का सामान्य विवरण-

- पाण्डुलिपि प्राप्ति स्थान- धरोहर संग्रहालय, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय कुरुक्षेत्र।
- पाण्डुलिपि का रचयिता- आचार्य चंगदास।
- पाण्डुलिपि क्रमांक- 12
- पत्र सामग्री- कागज, काली स्याही।
- पाण्डुलिपि का रचनाकाल- निर्धारित नहीं किया जा सकता।

- भाषा- संस्कृत।
- लिपि- देवनागरी।
- पत्र संख्या- 14
- पाण्डुलिपि की अवस्था- इस पाण्डुलिपि के पत्र अच्छी स्थिति में हैं।
- पत्र की लम्बाई एवं चौडाई- 28X11.6
- पत्र पर रेखाओं की संख्या- एक पृष्ठ दो भागों में विभक्त है एवं प्रत्येक पृष्ठ पर 11 एवं 12 रेखाएं प्राप्त होती है।
- अक्षरों की संख्या- सामान्यतः अनिश्चित है।
- हाशिया- इस ग्रन्थ के किसी भी पृष्ठ पर हाशिया नहीं दिया गया है। पृष्ठ पर दाएँ और बाएँ ओर पृष्ठक्रमांक दिया गया है।
- पाण्डुलिपि के सन्दर्भ में विशेष- इसमें यदि कहीं ग्रन्थकार के द्वारा कुछ छूट गया है तो उसे '^' चिह्न देकर लिखा गया है। इसमें गलत अक्षर को मिटाने के लिए पीला किया गया है। इसमें ग्रन्थकार ने पृष्ठ के किनारों पर भी कहीं-कहीं लिखा है।
- पाण्डुलिपि का मंगलाचरण-

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

सादितव्यादि तद्धिताः समासो वा यस्मिन्नर्थे कर्त्रर्थे कर्मार्थेव अविधीयन्ते क्रियन्ते सकर्ता तत् कर्म च उक्तः स्यात्।। ततः तस्माद् उक्तात् प्रथमा विभक्तिः भवति प्रयोगो यथा- अंकुरो भवति अवगाह ते सरसीं कुञ्जरः ण्वमादिषु कर्तरि विहितः प्रत्ययः तस्माद् उक्तः कर्ता उक्ते कर्तरि प्रथमैव भवतीति।। न्यायात् प्रथमा अनुक्तः कर्ता यथा- अंकुरेण भूयते

अवगाह्यति, सरसीकुंजरेण ग्रामो गम्यते देवदत्तेन ण्वमादिषु भावे कर्मणि विहितः प्रत्यय इत्युक्तं कर्मतव्यादि प्रत्ययो यथा वसेस्तव्यः कर्तरि णिच्चेति रुढित्वात् ॥रामः॥

श्री गणेशाय नमः यस्मिन्नर्थे विधीयन्तेत्यादितव्यादि तद्धिताः समासो वा भवेद् यत्र स उक्तः प्रथमा तत्॥ १॥

- पाण्डुलिपि की पुष्पिका-

रात्राह्नशब्दौ समासान्तौ पुंसिबोधव्यौ अहश्चरात्रिश्च अहोरात्रः ण्वमपरान्हः पूर्वाह्नः मध्याह्नः इत्यादि अहन् शब्दः समासान्तः पुल्लिंगो भवति णकं च तदहः च ण्काहः द्वयोरह्नोरसमाहारं द्वि अह्नः सुदिनपुराभ्यां न भवति सुदिनाहं पुरापहं पथइत्यादि पथशब्दः समासान्तोऽव्यापात् परो नपुंसकं भवति नायं यथा अपथमनेकोर्वेवतिक् रात्रान्हौ पुंसि विज्ञेयावहो सुदिनपुरायतः यथोऽव्ययात्परः क्लीवेन कोर्वेर्वेति दर्शितम्॥५९॥ संबंधे कारके वन्दे भावे गोत्रे परत्र च कथ्यते तद्धितारुढाः समासान्ताऽव्ययान्यपि॥६०॥-शब्दात् पथशब्दः समासान्तः नपुंसके न भवति ष्टयं तेन प्रकाशनमिति चेद्भवति वा न भवति कुत्सितः पन्थाः कुपथः कापथः वेरित्यादि शब्दात्परः पथशब्दो नपुंसके भवति वा विरुद्धः पन्थाविपथः विपन्थं वा॥५९॥ संबंधः इत्यादि बुद्धो देवता अस्येति बौद्धः पुरुषैत्यादि ॥६०॥इति श्री चंगदासकृतौ संबंधो पदे शेषष्टः तद्धितोपदेशः समाप्तः लिखितं शिवनारायणेन कार्तिक शुक्लद्वितीयायां शनिवारे॥

तद्धितोपदेश पाण्डुलिपि का चित्र

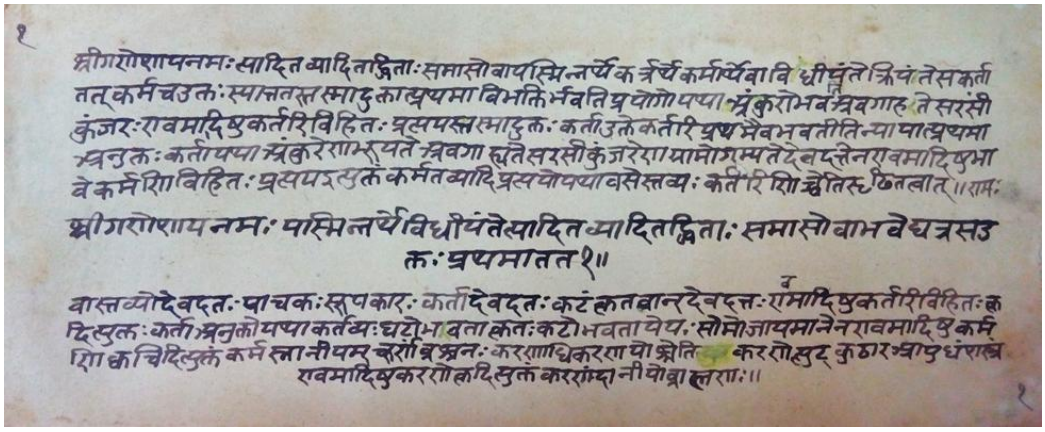

6. **प्रत्याख्यात संग्रह पाण्डुलिपि का सामान्य विवरण-**

- पाण्डुलिपि प्राप्ति स्थान- पा.मि., ज.ल.ने.पु., कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय कुरुक्षेत्र।
- पाण्डुलिपि का रचयिता- गोजी भट्ट।
- पाण्डुलिपि क्रमांक- D-667
- पत्र सामग्री- कागज, काली स्याही।
- पाण्डुलिपि का रचनाकाल- संवत् 1957।
- भाषा- संस्कृत।
- लिपि- देवनागरी।
- पत्र संख्या- 42
- पाण्डुलिपि की अवस्था- इस पाण्डुलिपि के पत्र अच्छी स्थिति में हैं, केवल प्रथम पृष्ठ फटा हुआ है।
- पत्र की लम्बाई एवं चौडाई- 32.7X10.3
- पत्र पर रेखाओं की संख्या- एक पृष्ठ दो भागों में विभक्त है एवं प्रत्येक पृष्ठ पर 09, 10 तथा अन्तिम पृष्ठ पर 3 रेखाएँ प्राप्त होती है।
- अक्षरों की संख्या- सामान्यतः अनिश्चित है।
- हाशिया- पृष्ठ पर हाशिया नहीं दिया गया है एवं पृष्ठ पर दाएँ एवं बाएँ दोनों ओर पृष्ठक्रमांक दिया गया है। पृष्ठ में पृष्ठक्रमांक के साथ-साथ एक पृष्ठ पर 'राम' शब्द तथा दूसरे पृष्ठ पर 'शिव' शब्द लिखा गया है।

- पाण्डुलिपि के सन्दर्भ में विशेष- इस ग्रन्थ का प्रथम पृष्ठ रख-रखाव के कारण फट गया है। इसमें ग्रन्थकार ने गलत अक्षर को काली एवं पीली स्याही का प्रयोग की है। इसमें हाशिया में भी लिखा गया है।

- पाण्डुलिपि का मंगलाचरण-

॥ श्रीः ॥

त्रलृक् सूत्रे लकारः प्रत्याख्यातः पाठ एवङ्यायानिति भाष्ये भ, भ, ङ, णानमित्यतः त्रयोविभागो मकार अप्रत्ययाख्यातः त॥ स्याद् दृष्टार्थे एव स इति तात्पर्यं न धातुलोपः अनारं भावेत्येतत् प्रत्याख्यातं दीधीं वेवीटायदिधीवेव्योरछं दोविषषत्वाह॥

- पाण्डुलिपि की पुष्पिका-

नोत्यरैति प्रत्याख्यातं गोर्वि भाषासाधनव्यवायोपसं ख्यानमिति विहितविशेषणेन उद्रव्यवाये इत्यनुवृत्या प्रत्याख्यातं षात्पदांताषात्पदादि परवचनमिति देतः पदान्तैति व्याख्यानेन प्रत्याख्यातं न शषां नशे इशइति वक्तव्यमिति पदे अतः ग्रहणं भूजपूर्वं प्रतिपत्यर्थमिति प्रत्याख्यातं पदव्यवायेऽपि अतद्धिते इति वक्तव्यमिति पदे व्यवायः पदव्यवाय इत्यर्थं न प्रत्याख्यातम् अनचि च अवसीने चेति वाच्यमिति प्रसज्य प्रतिषेधप्रत्याख्यातं अ, अ अकारस्य प्रत्यापतौ दीर्घप्रतिषेध इति सिद्धतु त परनिनिर्देशात् एकशेषनिर्देशात् वा स्वारानुनासिकभिन्ननां भातः पाणिनेः सिद्धमिति प्रत्याख्यातम्॥ इति श्री मत्कालोपाख्यानगोजीभट्टविरचितः प्रत्याख्यानं संग्रहः संपूर्णम्॥ यादृशं पुस्तकं दृष्ट्वा तादृशं लिखित् मया यदि सुद्धं विशुद्धं वा मम दोषो न दीयते। लिखितं जीवननाथेन मध्ये संवत् १९५७ कार्तिक वद् १५ ॥

प्रत्याख्यातसंग्रह पाण्डुलिपि का चित्र

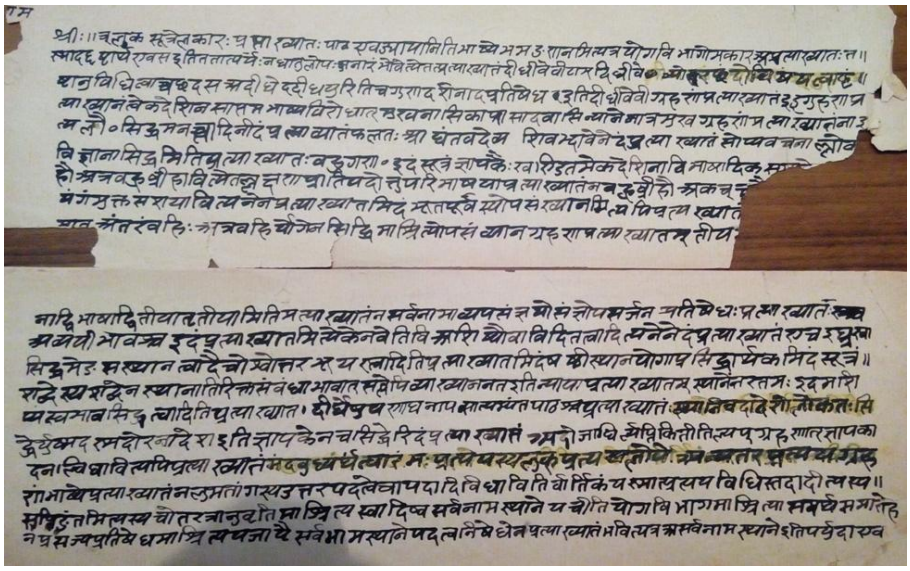

7. भाषानुशासन पाण्डुलिपि का सामान्य विवरण-

- पाण्डुलिपि का रचयिता- श्री यश।
- पाण्डुलिपि क्रमांक- 50401
- बन्डल संख्या-142
- रैक संख्या-7
- पाण्डुलिपि का रचनाकाल- संवत्1900, पुष्पिका के आधार पर निर्धारित किया गया।
- भाषा- संस्कृत।
- लिपि- देवनागरी।
- पत्र सामग्री- कागज, काली स्याही।
- कुल पत्र संख्या-11

- पाण्डुलिपि की अवस्था- इस पाण्डुलिपि के पत्रों की अवस्था पढने योग्य है, क्योंकि पाण्डुलिपि के पत्रों को सिलवर फिश (पत्रों को खाने वाला कीडा) कीडे ने कहीं-कहीं से खा लिए है। इसलिए शोधार्थी ने पाण्डुलिपि को पढने के लिए स्वविवेक का प्रयोग किया है।

- पाण्डुलिपि की लम्बाई एवं चौडाई-27.8X14

- पृष्ठ पर रेखाओं की संख्या- एक पृष्ठ दो भागों में विभक्त है एवं प्रत्येक पृष्ठ पर 11 एवं 10 रेखाएं प्राप्त होती है।

- अक्षरों की संख्या-अक्षरों की संख्या अनिश्चित है।

- हाशिया- इस ग्रन्थ में हाशिया नहीं दिया गया है। ग्रन्थ में दाएँ एवं बाएँ दोनों ओर ऊपर तथा नीचे पृष्ठांक दिया गया है। इस ग्रन्थ में बाएं ओर पृष्ठांक के ऊपर ग्रन्थ का नाम भी दिया गया है।

- पाण्डुलिपि के सन्दर्भ में विशेष- इस पाण्डुलिपि में सिलवर फिश से छेद कर दिए गए हैं, जिसके कारण पढ़ने में कठिनाई हो रही है।

- पाण्डुलिपि का मंगलाचरण-

॥ ओम् नमः सरस्वत्यै ॥

ओं मखतो लिखितोल्लासाश्शक्तिमतष्षण्मुखस्य षड्भाषाः प्रकटितविबुधप्रमदाः प्रथमतज्ञानमधुनावः मुखेभ्यो मुखात् च लिखितः प्रकटितोल्लासः प्रसरः शक्तिरायुधं कवित्वहेतः प्रज्ञाविशेषश्च षण्मुखानि वक्राणि षस्त च भाषाः मखं पारम्पर्येण सम्यग्ज्ञानं यस्य विबुधादेवाः पंडिताश्च ज्ञानं भोगमोक्षहेतुभूतं संवित्प्रथनं भेदेन सम्यक् तत्वावगमं च॥१॥ अधिगतभाषाषड्गो विशेषवत् लक्ष्यलक्षणात् साः सकविछन्दो विन्दनिरवद्यं जीयते केन अधिगतो ज्ञातः विशेषवति सम्यग्ज्ञानात्र पतया निस्संशये लक्ष्ये

महाकविकाव्यादौ लक्षणे व्याकरणादौ व्युत्पत्तिशास्त्रे लक्षणोऽभ्यन्तः निरवद्यमभ्रांतं छन्दो गायत्र्यादि विदज्जानन् कालाभागैत्याह ॥२॥

- पाण्डुलिपि की पुष्पिका-

निःसंशयाकृशयियां नियतैव सर्वभाषादि शिश्रमजुषां सकवित्व सिद्धिः सृष्ट सम्यगार्षेनाभ्यः तं तद्दृशः पर्यालोचितं श्रवणात् प्रवृत्तिचिंतितं संस्कृतपुरःसरं संस्कृतात् देवभाषापर्यन्तं लक्ष्यं साहित्यनाटकादि भूरिबह्गबह्गभेदं परितः सर्वतः परिशीलयतां विवारयतामनसरतां सदैव नित्यमेकाह्लादकविः आह्लादवैयाकरणैति स तताभ्यासान्निःसंशया अभ्रांतानिश्चयग्रहिणी अकृशावह्नीक्षोदक्षमातीक्षणं च श्रमतषां क्लेशसहानामनवलिमानां तत्परायणानां सकविः तस्य महाकवित्वस्य सिद्धिर्निष्यति नियता.....चितावश्यभाविनीतिश्रेयः शिष्यान् नटिश्येदं चकारभाषानशासनं सुमतिः श्रीयश्शः कविवृषामनीषिणं तोषपोषाय समाप्तमिदं भाषानशासनं संवत् १९०० वै. श्रुति षष्ट्याम्॥

भाषानुशासन पाण्डुलिपि का चित्र

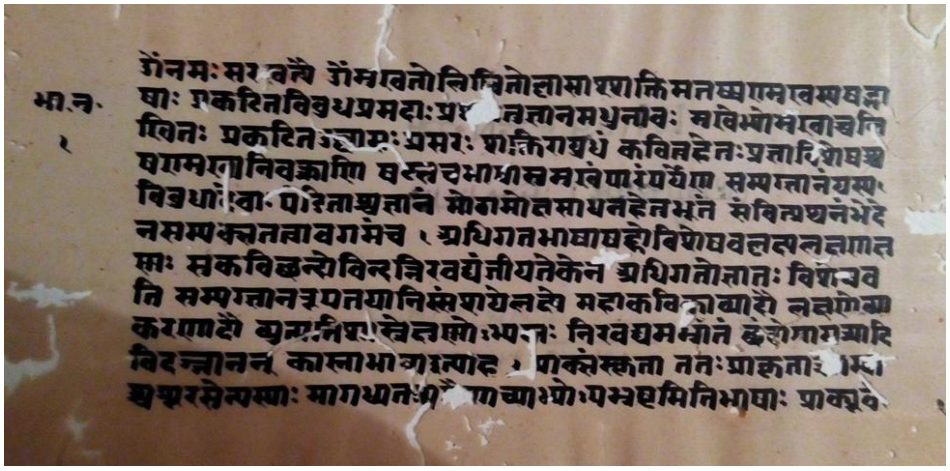

ज्यौतिष की पाण्डुलिपियाँ-

8. **रत्नद्योत पाण्डुलिपि का सामान्य विवरण-**

- पाण्डुलिपि का रचयिता- श्री गंगा राम।
- पाण्डुलिपि क्रमांक- 55632
- बन्डल संख्या- 675
- रैक संख्या- 38
- पाण्डुलिपि का रचनाकाल- संवत् 1848, पुष्पिका के आधार पर।
- पाण्डुलिपि का प्राप्ति स्थान- पा.मि., ज.ल, ने.पु., कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय कुरुक्षेत्र।
- भाषा- संस्कृत।
- लिपि- देवनागरी।
- कुल पत्र संख्या- 21
- पाण्डुलिपि की अवस्था- इस पाण्डुलिपि के पत्रों की अवस्था अच्छी है
- पाण्डुलिपि की लम्बाई एवं चौडाई-23 X 10.9
- पृष्ठ पर रेखाओं की संख्या- एक पृष्ठ दो भागों में विभक्त है एवं प्रत्येक पृष्ठ पर 7, 8 एवं अन्तिम पृष्ठ पर 6 रेखाएँ प्राप्त होती हैं।
- अक्षरों की संख्या-अक्षरों की संख्या अनिश्चित है।
- हाशिया- इस ग्रन्थ के किसी भी पृष्ठ पर हाशिया नहीं दिया गया है। पृष्ठ के बाएँ एवं दाएँ दोनों ओर पृष्ठक्रमांक दिया गया है।
- पाण्डुलिपि के सन्दर्भ में विशेष- इस पाण्डुलिपि में ग्रन्थकार ने वर्गाकार चित्र कहीं-कहीं बनाए हैं, जिसमें ग्रन्थकार कहीं पर राशियों के नाम तथा कहीं पर नक्षत्रों ने नाम लिखे हैं।

- पाण्डुलिपि का मंगलाचरण-

॥ स्वस्ति श्रीगणेशाय नमः॥

अथ रत्नद्योतलिख्यते॥ नत्वा रामं गणपतिं समीरतनयं शिवम्।।रत्नद्योतमहं वक्ष्ये बालानां हितकाम्यया॥१॥ आदौ वरकन्यायोः मैत्रीविचार॥ अस्वन्यादार्शीति भिषा फाल्गुणी चोत्तरातथा॥ पूर्वाभाद् पदामूलं तेषां हस्तः पुनर्वसु॥२॥ पूर्वा फाल्गुणिका चित्रा धनिष्टा भरणी मृगा॥ पूर्वाषाटानुराधा च पुष्पेभाक् पक्षेत्तरः॥३।। आकृतिका रोहिणी स्वाति मधाश्लोक वा रेवती॥ श्रवणश्चोत्तराषाटे विशाषेत्येकनास्वानौ मृषकौ भगपैतृकौ।। यदित्याही च मार्जारावापौ विष्णुश्च मर्कटौ॥४॥

- पाण्डुलिपि की पुष्पिका-

यस्य ना माध्यमो वर्णः स्वरद्यस्मादृधस्थितः॥ स स्वरस्यात् बालस्य कुमारः तु द्वितीयकः॥७८॥ तृतीयस्वरूपप्रोक्तश्चतुर्थोवृद्धसंज्ञकः॥ पंचमोस्तुः स्वराज्ञेयं फलन्नामानुसारतः॥७९॥ इति पंचस्वरचक्रम्॥ अथनाडीवेध॥ आर्द्धादि मृगपर्जेतं मध्ये मूलपतिषितम्॥ रविंदुनां नक्षत्रमेकनाड्या यदा भवेत्॥ तदा मृत्युर्न संदेहो रोगाद्वा अथारणेपि वा॥८०॥ इति त्रिनाडीचक्रं॥ रविदिननषससर्वा चन्द्रमा व्यौमवाणैः नयनयगजा स्युः च अङ्गजः षटसराणि शनिरसगुणसंख्या वाग्पतिः नागचाणैः नयनयुग्मे.....॥ शुभं संवत् १८४८ मासो तमे मासे माघमासे तिथि १२ कृष्णपक्षं वारगुरुः छन्दं पुष्पतकं लिखयतं मया चन्दब्राह्मणनागबाण वा शकानग्रका श्री रामायन नमो नमः श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री॥

रत्नद्योत पाण्डुलिपि का चित्र

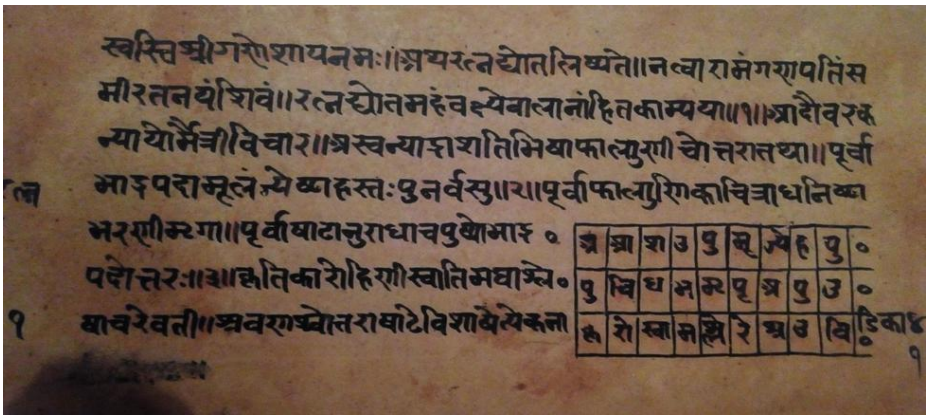

9. **योगशतक पाण्डुलिपि का सामान्य विवरण-**

- पाण्डुलिपि का रचयिता- जयदेव।
- पाण्डुलिपि क्रमांक- 19546+19567
- बन्ड़ल संख्या- 41
- रैक संख्या- 5
- पाण्डुलिपि का रचनाकाल- संवत्1735, पुष्पिका के आधार पर।
- पाण्डुलिपि का प्राप्ति स्थान- पा.मि., ज.ल, ने.पु., कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय कुरुक्षेत्र।
- भाषा- संस्कृत।
- लिपि- देवनागरी।
- पत्र सामग्री- कागज एवं काली तथा लाल स्याही का प्रयोग।
- कुल पत्र संख्या-14
- पाण्डुलिपि की अवस्था- इस पाण्डुलिपि के पत्रों की अवस्था अच्छी है।

- पाण्डुलिपि की लम्बाई एवं चौडाई- 29.3 X 13
- पृष्ठ पर रेखाओं की संख्या- एक पृष्ठ दो भागों में विभक्त है एवं प्रत्येक पृष्ठ पर 14 एवं अन्तिम पृष्ठ 7 रेखाएँ प्राप्त होती हैं।
- अक्षरों की संख्या- अक्षरों की संख्या अनिश्चित है।
- हाशिया- इस ग्रन्थ में दाएँ एवं बाएँ दोनों ओर हाशिया दिया गया है। हाशिये के लिए लाल स्याही का प्रयोग किया है। इस ग्रन्थ के प्रथम पृष्ठ पर वृताकार तीन ओर बनाए गए हैं एवं दाएं एवं बाएं ओर पृष्ठक्रमांक दिया गया है।
- पाण्डुलिपि के सन्दर्भ में विशेष- इस पाण्डुलिपि ने ग्रन्थकार ने प्रथम पृष्ठ के हाशिये में अनेक वृत्ताकार बनाए हुए हैं। इसमें काली स्याही के साथ-साथ लाल स्याही का प्रयोग भी किया गया है।
- पाण्डुलिपि का मंगलाचरण-

॥ ऊं श्रीगणेशाय नमः॥

योगाध्यायो व्याख्यायते॥ सुनिश्चिता निश्चितयोगजाख्पंरिष्टं तथा निश्चितमायुषोतः॥ अनिश्चितं क्रूरदशादि योगे योगोद्भवं जन्मनिखेटगत्या॥१॥ एकोपि पापोष्टमगः सितर्क्षेकूरेक्षितो मारजतीति वर्षात्॥ वर्षेण षष्टाष्टगतः शशांको निहन्ति मासाद् अशुभैरतु दृष्टः॥२॥ वक्रीकुजर्क्षेशनिरारदृष्टः षष्टाष्टकेंद्रे मृतिका द्विवर्षात्॥ गुरुःकुजर्क्षेष्टभगः त्रिवर्षाद् शुकदृष्टः शशिपापदृष्टः॥३॥ लग्नेश्वरादृष्टमगः कृशेंदुः दृष्टः त्रिवर्षाद् शुभर्विसौम्येः॥ भौमार्क्किदृष्टसंहितोपि केंद्रे नष्टशशीहंति चतुर्भिरष्टैः॥४॥ अष्टाष्टर्कत्केवलसौम्यदृष्टे मिश्रे क्षिते वर्षचतुष्टजेन॥ सौम्यै कुलीरेष्व रिपुव्ययस्थे वर्षेश्चतुर्भिः मृतिः इन्दुदृष्टैः॥५॥

- पाण्डुलिपि की पुष्पिका-

सुवर्णरत्नानि वरांगनासि शेषेषु दुःखकमशोषरोगात्।। प्रवेशकाले बलवान् खेटाशुभैः वासं निरीक्षते॥ सौम्याधिमित्रवर्गस्थो मृत्युकृत् न भवेत्तदा॥ दशापतिः लग्नगते त्रिकोशोवावलान्विते॥ करोति बहुधा सौख्यं धनागममरिक्षयम्॥ पाकः प्रवेशकाले अस्तनी च गतो ग्रहः॥ आमज्वरकफं चिंत्यविवर्णैः स्त्रीवियोगवः।। इति योगशतकं समाप्तम्॥ ॥श्रीशाके १७३५ शुकमासे सिते पक्षे द्वितीयायां सोमवासरे लिखितमिदं पुस्तकं जयदेवस्य विलोकनार्थम्। भग्नपृष्टिकटिग्रीवा तप्तदृष्टिः अधोमुखम्॥ कष्टेन लिखितं शास्त्रं यत्नेन परिपालयेत्॥पूर्णानन्दज्योतिर्विदा॥

योगशतक पाण्डुलिपि का चित्र

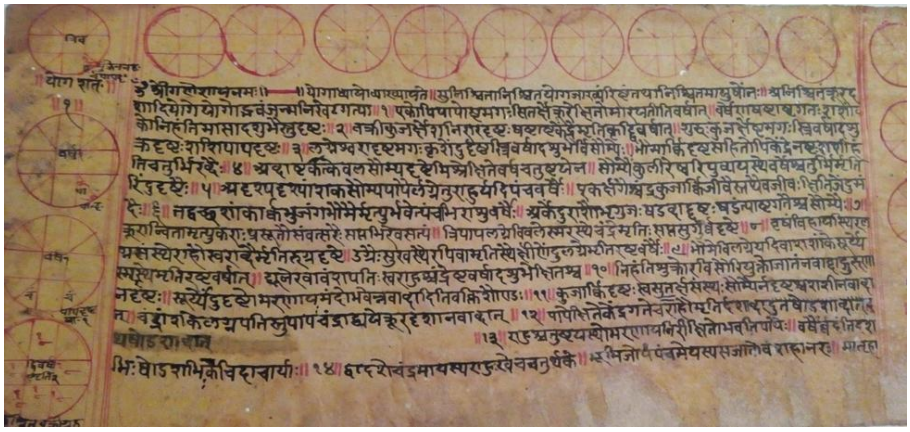

10. **मञ्जीर पाण्डुलिपि का सामान्य विवरण -**

- पाण्डुलिपि का रचयिता- श्री रामसेवक त्रिवेदी।
- पाण्डुलिपि क्रमांक- 52116
- बन्डल संख्या- 316
- रैक संख्या- 24
- पाण्डुलिपि का रचनाकाल- संवत् 1868, पुष्पिका के आधार पर।
- पाण्डुलिपि का प्राप्ति स्थान- पा.मि., ज.ल, ने.पु., कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय कुरुक्षेत्र।

- भाषा- संस्कृत।
- लिपि- देवनागरी।
- कुल पत्र संख्या- 46
- पाण्डुलिपि की अवस्था- इस पाण्डुलिपि के पत्रों की अवस्था अच्छी है।
- पाण्डुलिपि की लम्बाई एवं चौडाई- 21.6 X 11.7
- पृष्ठ पर रेखाओं की संख्या- एक पृष्ठ दो भागों में विभक्त है एवं प्रत्येक पृष्ठ पर 10 एवं अन्तिम पृष्ठ पर 12 रेखाएँ प्राप्त होती है।
- अक्षरों की संख्या- अक्षरों की संख्या अनिश्चित है।
- हाशिया- इस ग्रन्थ में हाशिया दाएँ एवं बाएँ दोनों ओर लाल स्याही से खींचा गया है। हाशिये में दोनों ओर दो-दो रेखां खीची गई हैं। पृष्ठ के हाशिये में बाएँ एवं दाएँ ओर पृष्ठ क्रमांक दिया गया है तथा पृष्ठ क्रमांक ऊपर 'राम' शब्द लिखा हुआ है।
- पाण्डुलिपि के सन्दर्भ में विशेष- इस ग्रन्थ में काली स्याही के साथ-साथ लाल स्याही का प्रयोग भी किया गया है। पाण्डुलिपि का मंगलाचरण विशेषकर लाल स्याही में लिखा गया है तथा पूर्णविराम के लिए भी लाल स्याही का प्रयोग किया गया है। इसमें ग्रन्थकार ने बारीक अक्षरों में कहीं-कहीं ऊपर एवं नीचे लिखा है तथा साथ में लिखने के लिए हाशिये का भी उपयोग किया गया है।
- पाण्डुलिपि का मंगलाचरण-

॥ श्रीगणेशाय नमः॥

पूर्णानंदं परंब्रह्म निर्विकल्पसमाधिना॥अधिगम्यम् उदाशीनां नमामि जगदीश्वरम्॥ १॥ गर्गकश्यपपराशरादिभिः श्रीपतिप्रभृतिनूतनैर्बुधै॥ निश्चितं व्यवहृतं समाहरेत् तन्निबन्धबहुशो धनोदितः॥ २॥ शब्दशास्त्रकवितादिव लग्नैः वर्णनैश्च किमुपास्य कर्मणः॥

किंचिदस्ति यदिमे श्रमः क्वचित् सूरिभिस्तदेतैवतर्व्यताम्॥ ३॥ लुप्ताब्दं मृगसिंहगेज्पमुशनो जन्मेशचंद्रां गिरोमौढीवार्धकं वा अल्पगोचरदशाः इष्टमनेकस्य चित्॥ पक्षे गुर्वति चारवक्रगमनं न्यूनाधिमासं पुरो पत्ये ज्यैष्टमहर्ममासतिथिः वा जानं रवीज्यान्वयम्॥४॥ पक्षं विश्व१३दिनं व्यधं क्षयदिनं पित्रोः क्षयर्धीतिथेः पुष्पं मातुरमां खलस्य दिवसं दग्धां च होलाष्टकम्॥ रिक्ता वैधृति पातबिष्टि कुलिकं बाणं खलां तारकां पक्षं वा आर्धमपि प्रभूत् उदये केतोः क्तावदिनम्॥५।।

- पाण्डुलिपि की पुष्पिका-

गोधाभुजंगशशजाहकशूकराणां मत्किर्त्तनं निनदवीक्षणं प्रशस्तम्॥ न च्चान्यनर्थकपिनोथमृगाः खगाः स्युर्द्धन्या प्रदक्षिणगता नृपते प्रयाणे॥४४॥ पुंनामकावामगताः प्रशस्ता स्त्रीनां कादक्षिणगाः खगाश्च॥ ओजामृगायान्न इहाति धन्वावासे तु वा स्यात् खरनिश्वनश्चेत्॥४५॥ गोधाविडालशरटोरगवान्तरैः चेन्मार्गे छिंदाकटुवचोमृगपक्षिणोस्तु॥ दीप्तां दिशं प्रतिवचः खलयोसु भाजो वुन्तापानशयनाशनमैथुनं वा॥४६॥ व्यस्ता नदीतरणयुद्धमय प्रवेशनष्टक्षणेषु शकुना उदिताः पुराणैः॥ एकादशाय शकुने प्रथमे किलाफन् स्थित्वा द्वितीयदूहविशतिमेव पापात्॥४७॥ जातो गोरक्षवंशेरहरिपदकमाराधनोज्भृभित् श्री॥ विद्या पीयूषधान्यरापरिसरलहरो शिक्तकृत्य प्रनालः॥५०॥ राधायाधारणान्तः करणुद्यशद्वरिं रज्जयन् कुंज्जपुंजे मंञ्जीरं मंजुनाद् मधुमधुपशखं रामनामाभिधत्ते॥५१॥ इति श्रीरामसेवकत्रिवेदीविरचितायां मंजीरणं समाप्तं शुभं संगतम्॥ संवत् १८४९ कार्यर्षे चैत्रकृष्णाष्टमी भोमवासरे लिप्यकृतं नानूरामगुजराती पिलाणामध्ये आत्मार्थे लेख्यं शुभम्॥

मञ्जीर पाण्डुलिपि का चित्र

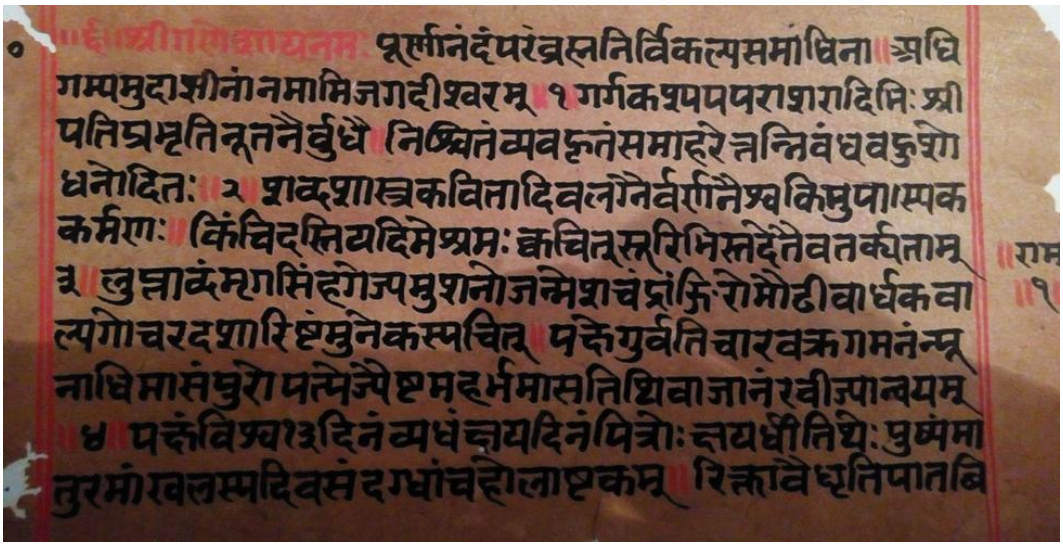

11. योगमालिका पाण्डुलिपि का सामान्य विवरण-

- पाण्डुलिपि प्राप्ति स्थान- पाण्डुलिपि मिशन, जवाहर लाल नेहरु पुस्तकालय,कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय कुरुक्षेत्र।
- पाण्डुलिपि का रचयिता- कालिदास।
- पाण्डुलिपि क्रमांक- 54065
- बन्डल संख्या- अप्राप्त।
- रैक संख्या- अप्राप्त।
- पत्र सामग्री- कागज, काली स्याही।
- पाण्डुलिपि का रचनाकाल- संवत् 1804, पुष्पिका के आधार पर।
- भाषा- संस्कृत।
- लिपि- देवनागरी।

- पत्र संख्या- 06पाण्डुलिपि की अवस्था- इस पाण्डुलिपि के पत्र अच्छी स्थिति में हैं।
- पत्र की लम्बाई एवं चौडाई- अप्राप्त।
- पत्र पर रेखाओं की संख्या- एक पृष्ठ दो भागों में विभक्त है एवं प्रत्येक पृष्ठ पर 10 एवं अन्तिम पृष्ठ पर 09 रेखाएँ प्राप्त होती है।
- अक्षरों की संख्या- सामान्यतः अनिश्चित है।
- हाशिया- इस ग्रन्थ के किसी भी पृष्ठ पर हाशिया नहीं दिया गया है। पृष्ठ के बाएँ एवं दाएँ ओर नीचे पृष्ठक्रमांक दिया गया है एवं साथ में दाई ओर पृष्ठक्रमांक के ऊपर 'राम' शब्द लिखा गया है। पृष्ठ के बाएँ ओर पृष्ठक्रमांक के ऊपर 'यो.मा.' अर्थात् ग्रन्थ का नाम दिया गया है।
- पाण्डुलिपि के सम्बन्ध में विशेष- इस पाण्डुलिपि के पृष्ठ पानी के कारण हल्के काले हो गए हैं। इसमें ग्रन्थकार ने ऊपर एवं नीचे भी बारीक अक्षरों में कहीं-कहीं लिखा है।
- पाण्डुलिपि का मंगलाचरण-

  ॥ श्रीगणेशाय नमः॥

  श्रीनृसिंहगुरुं ध्यात्वा नत्वा श्रीगण्पं गुरुं गिरां च गिरिजेशानं वक्ष्येहं योगमालिकाम्॥ १॥ ये योगः जातके प्रोक्ता यात्रायांति प्रकीर्तिताः ब्रह्मेपि चिंतनीयाः त्तेदैवज्ञेन विपश्चिता॥ २॥ तनुस्थो दिनेशोदित्यंगपीडां धरायाः सुतः शोक्ति तस्य प्रकोपं अनेकस्य दुःखस्यदः सूर्यसूनुर्भृगुजीवसोमे दुजाः शर्म्मदास्युः॥ ३॥ दुःखप्रदाधनविनाशकरप्रतिष्टावित्तस्थिता रविशनिश्च भूमिपुत्राः चंडोबुधः सुरगुरुर्भृगुनंदनो वा नानाविधं धनचयं कुरुते धनस्थाः॥ ४॥
- पाण्डुलिपि की पुष्पिका-

संभोगयुक्तो वद्वाह नाद्यो विद्वान् सुशीलो वदूमि त्रयोपि मिदृगन्नभोगी धनकीर्त्तियुक्तो धनेश्वरेण सहितो हिमांशुः॥८४॥ इति योगसारे ग्रहफलं समाप्तं लिंगपतौ तनुपसंस्थं कूरे सुनविरहितः शुभं सुसुतः तस्य पिता पिनजीवती जीवेदपकितवकर्मरतः॥१॥ द्वादश पतौ च सुनगे कूरे सुतवर्जितः शुभेससुतः जनककमला विलाशी सामर्षता विरहितः पुरुषः॥२॥ पंचमपेत् तूर्यगते कूरे सुरवर्जितशुभेससुतः सुतसंतानपरःस्याद् दिदेश गमनोद्यतः पुरुषः॥३॥ संवत् १८०४ पौ. शुदि बुधे लिखतं कालिदासेन शुभम्॥

योगमालिका पाण्डुलिपि का चित्र

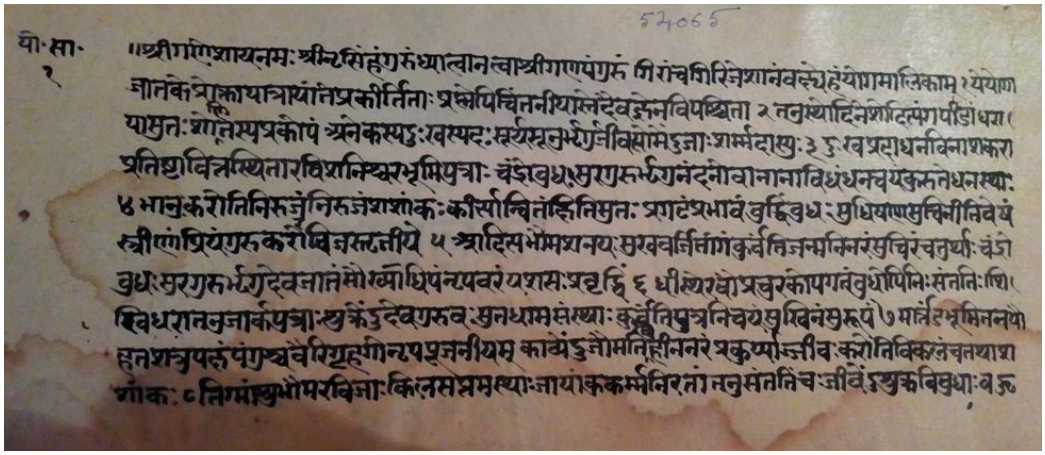

12. **सप्तनाडीचक्र पाण्डुलिपि का सामान्य विवरण-**

- पाण्डुलिपि प्राप्ति स्थान- पाण्डुलिपि मिशन, जवाहर लाल नेहरु पुस्तकालय, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय कुरुक्षेत्र।
- पाण्डुलिपि का रचयिता- अज्ञात।
- पाण्डुलिपि क्रमांक- 19795
- बन्डल संख्या- रैक संख्या-
- पत्र सामग्री- कागज, काली स्याही।

- पाण्डुलिपि का रचनाकाल- निर्धारित नहीं किया जा सकता।
- भाषा- संस्कृत।
- लिपि- देवनागरी।
- पत्र संख्या- 02
- पाण्डुलिपि की अवस्था- इस पाण्डुलिपि के पत्र अच्छी स्थिति में हैं।
- पत्र की लम्बाई एवं चौडाई- अप्राप्त।
- पत्र पर रेखाओं की संख्या- एक पृष्ठ दो भागों में विभक्त है एवं प्रत्येक पृष्ठ पर 11 एवं अन्तिम पृष्ठ पर 06 रेखाएँ प्राप्त होती है।
- अक्षरों की संख्या- सामान्यतः अनिश्चित है।
- हाशिया- इस ग्रन्थ के किसी पृष्ठ पर हाशिया नहीं दिया गया है तथा न ही किसी पृष्ठ पर पृष्ठक्रमांक दिया गया है।
- पाण्डुलिपि के सन्दर्भ में विशेष- इस ग्रन्थ के एक पृष्ठ पर एक चित्र बना हुआ है, जिसमें सात रेखाएँ टेडी-मेढी खीचीं गई हैं। इस पाण्डुलिपि के पृष्ठ की अवस्था कमजोर है, हाथ लगाने से ही कागज टूट रहा है।
- पाण्डुलिपि का मंगलाचरण-

॥ ऊं श्री गणेशाय नमः॥

अथ वर्षाकाले सप्तनाडी यन्त्रं लिख्यते।। पुरुषपुरुषो भवे तापीमहातापो नपुंसके स्त्रीपुंसोः संगगेवृष्टिः स्वल्पां वृष्टिः नपुंसके॥१॥ कराशिसमारुटौ क्षमाधरणीसुतः यदि तत्र भवेज्जीवः तदाण्कार्ण वा मही॥२॥ यदि शुक्रश्च सोमः देवतानां पुरोहितः एकतोपि वरिष्यन्ते तदाण्कार्वा मही॥३॥

- पाण्डुलिपि की पुष्पिका-

ज्योतिर्नान्यमिदं गुह्यं नाडिचक्रं मयोदितं तत्रस्था जलदादेशेनैव मिथ्या भविष्यति॥ १२॥ फणिचक्रं समादिष्टं विदृष्टाः तु मृत्युः गौः एते देवस्य माख्याता सद्यप्रत्ययकारकम्॥ १३॥ मित्रामित्रेषु चाश्विन्यां विवाहे कृतिकादिषु वर्षाकालेषु आर्शयां सूर्यस्यादि गण्यते॥ १॥ स्त्रीपुंसयोर्महावृष्टिः स्त्रीनपुंसकयोः क्वचितस्त्रो..... (पृष्ठ फटा हुआ है) शीतलानां योगो पुरुषर्योर्न च॥ ३॥ इति सप्तनाडिचक्रं समाप्तम्॥

सप्तनाडीचक्र पाण्डुलिपि का चित्र

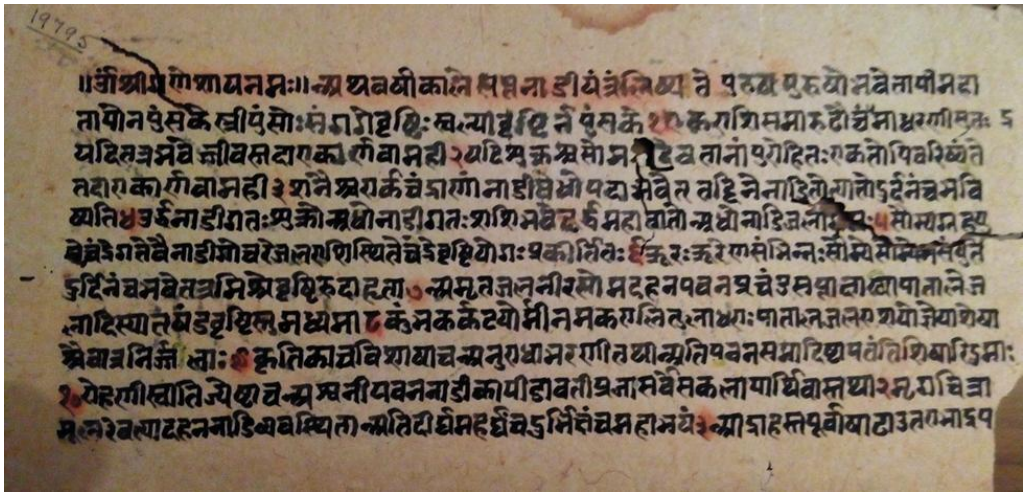

13. **हस्तमालाटीका पाण्डुलिपि का सामान्य विवरण-**

- पाण्डुलिपि प्राप्ति स्थान- धरोहर संग्रहालय, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय कुरुक्षेत्र।
- पाण्डुलिपि का रचयिता- जय गोपाल।
- पाण्डुलिपि क्रमांक- 81
- पत्र सामग्री- कागज, काली स्याही।
- पाण्डुलिपि का रचनाकाल- संवत् 1908, पुष्पिका के आधार पर निर्धारित किया गया।

- भाषा- संस्कृत।
- लिपि- देवनागरी।
- पत्र संख्या- 04
- पाण्डुलिपि की अवस्था- इस पाण्डुलिपि के पत्र अच्छी स्थिति में हैं।
- पत्र की लम्बाई एवं चौडाई- 28.10 X 12.6
- पत्र पर रेखाओं की संख्या- एक पृष्ठ दो भागों में विभक्त है एवं प्रत्येक पृष्ठ पर 11एवं अन्तिम पृष्ठ पर 16 रेखाएँ प्राप्त होती हैं।
- अक्षरों की संख्या- सामान्यतः अनिश्चित है।
- हाशिया- इस ग्रन्थ के किसी पृष्ठ पर हाशिया नहीं दिया गया है। पृष्ठ के बाएँ ओर ऊपर तथा दाएँ ओर नीचे पृष्ठक्रमांक दिया गया है। इस ग्रन्थ के पृष्ठ के पृष्ठक्रमांक के ऊपर 'ऊं', 'राम', 'शिव' शब्द लिखे हुए हैं।
- पाण्डुलिपि के सन्दर्भ में विशेष- इस पाण्डुलिपि के पत्र पानी लगने के कारण किनारों से हल्के काले पड़ गए हैं। इसमें ग्रन्थकार ने बाएँ और दाएँ पृष्ठक्रमांक के नीचे एवं ऊपर लिखा हुआ है।
- पाण्डुलिपि का मंगलाचरण-

॥श्री गणेशाय नमः॥

ओं कस्त्वं शिशो कस्य कुतोऽसि गता किं नामत्तेत्त्वं कुत आगत्तोसि एत्तद्वदतं मम सुप्रसिद्धं मत् प्रीतये प्रीतिविवर्द्दनोसि॥ १॥ नाहं मनुष्यो न च देवपक्षो न ब्राह्मणक्षत्रियवैश्यशूद्रः न ब्रह्मचारी न गृही वनस्थो भिक्षुर्न चाहं निजवोरुधपः॥ २॥ मनादीनां मनश्चिताहं कारबुद्धीनां चतुर्णामन्तःकरणानां तथा चक्षुणादीनां चक्षुस्त्वक्श्रोत्रजिह्वानासिकानां

पंचबुद्धींद्रियाणां वाक्पाणिपादपायूपस्थानां पंच कर्मेन्द्रियानां प्रवृतौ स्वव्यापारे निमित्तम्.....॥

- पाण्डुलिपि की पुष्पिका-

यथाचन्द्रिकाणां चंद्रएव चन्द्रिका इति स्वार्थेकः प्रतिबिम्बदृश्यमानां जलस्य चंचलत्वादेषामपि चंचलत्वं तथा बुद्धीनां चंचलत्वात्तवापि चंचलत्वमौपाधिकं न पारमार्थिकमिह बुद्धिषु हे विष्णो इति॥ इति श्रीहस्तमलटीका सह संपूर्णम्॥ श्री श्री श्री श्री श्री॥ लिखितं जयगोपालेन स्वपठनार्थं शुभं भूयात् ॥ लिखितं गडीमध्ये संवत् १९०८ श्रावणम्॥

हस्तमाला टीका पाण्डुलिपि का चित्र

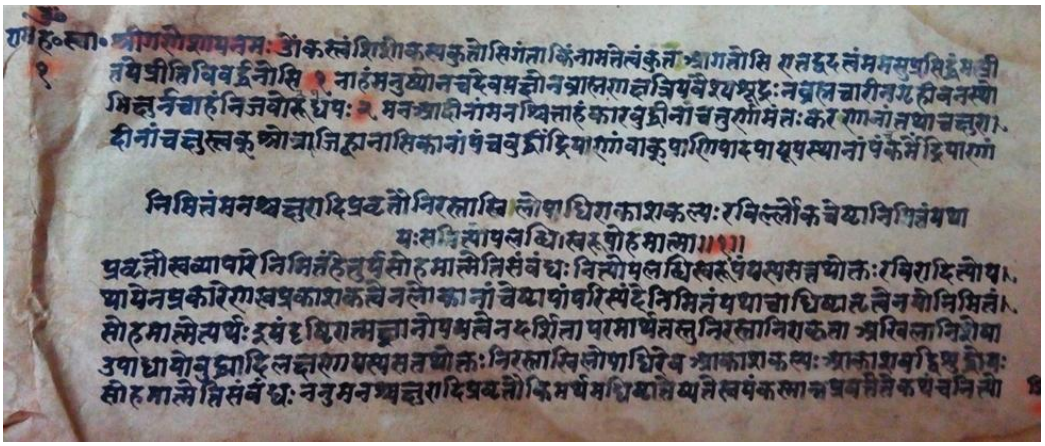

2.3 आयुर्वेद का अर्थ एवं परिचय-

विश्व वाङ्मय में वेद प्राचीनतम वाङ्मय स्वीकार किए गए हैं। सायण के अनुसार – **'इष्टप्राप्त्यनिष्ट परिहारयोरलौकिकमुपायं यो ग्रन्थो वेदयति सः वेदः'**[37] अर्थात् इष्ट प्राप्ति और अनिष्ट निवारण के लिए अलौकिक उपाय बताने वाला ग्रन्थ वेद है। वेद के क्रम संख्या में आने वाले अथर्ववेद में आयुर्वेद को उपवेद का स्थान प्राप्त है। वेदों में रुद्र,अग्नि,वरुण,इन्द्र,मरुत आदि

[37] . *वैदिक साहित्य एवं संस्कृति*, पृ. 13

'दैव्य भिषक' कहे गए हैं। किन्तु सर्वाधिक प्रसिद्धि अश्विनीकुमारों की है जो **"देवानां भिषजौ"** के रुप में प्रख्यात हैं। इनकी चिकित्सा चातुरी का वर्णन ऋग्वेद के (ऋ. १/११२/३-४,१/११६/२४) इत्यादि जगहों पर प्राप्त होता है, जिससे यह ज्ञात होता है कि ये आरोग्य, दीर्घायु, शक्ति, प्रजा, वनस्पति तथा समृद्धि के प्रदाता थे। वैदिक शान्तिपाठ में भी शरीर तथा चित्त की शान्ति हेतु वनस्पति तथा औषधि के तादात्म्य का वर्णन मिलता है।

ऋग्वेद में औषधि के लिए माता शब्द का प्रयोग हुआ है।[38] ऋग्वेद में यहाँ तक कह दिया गया है कि औषधियाँ सच्ची माताएं हैं।[39] प्राचीन ग्रन्थ चरण-व्यूह में आयुर्वेद को ऋग्वेद का उपवेद माना गया है दूसरी तरफ अथर्ववेद का भी उपवेद मानने में विद्वानों ने एकमत सहमति प्रकट की है, जिससे निश्चित रुप से कहा जा सकता है कि अथर्ववेद से उपवेद के रुप में आयुर्वेद का विकास हुआ। आचार्य सुश्रुत एवं वाग्भट ने आयुर्वेद को अथर्ववेद का उपवेद स्वीकार किया है। आचार्य चरक ने भी ***चरक संहिता*** में ***अथर्ववेद*** के साथ घनिष्ठता दिखाई है। महर्षि चरक ने आयुर्वेद का परिचय देते हुए कहा है कि –

"हिताहितं सुखं दुःखमायुस्तस्य हिताहितम्।

नञ्च तच्च यत्रोक्तमायुर्वेदः स उच्यते"॥[40]

आयुर्वेद के आविर्भाव क्रम को दो भागों में विभक्त किया जा सकता है। प्रागैतिहासिक रूप जो ब्रह्मा से प्रारम्भ होकर दशप्रजापति और प्रजापति से अश्विनीकुमारों ने तथा कुमारों से इन्द्र तक आता है, जो देवलोक तक सीमित माना गया है। दूसरा रूप आयुर्वेद का भूमण्ड़ल पर आने से प्रारम्भ होता है।

अतिप्राचीन काल में ग्रन्थों की रचना की दो शैलियाँ प्रचलित थी। प्रथम शैली सूत्ररूप में तथा द्वितीय रूप विस्तृत भाष्य के रूप में/सूत्ररुप में निबद्ध ग्रन्थ 'तन्त्र' कहे गए। परन्तु भाष्य रूप के विस्तृत विषयों का वर्णन जिन ग्रन्थों मे होता था,उन्हें संहिता की सँज्ञा दी गई।

---

[38] . औषधीति मातरस्तद्वो। *ऋग्वेद*,10/16/4

[39] . *ऋग्वेद*, 10/10/4

[40] . *चरक संहिता*,1/59

चिकित्सामय ज्ञान के उचित क्रम को ध्यान में रखते हुए ऋषियों ने आयुर्वेद को शल्य, शालाक्य, काय, कौमार, वाजीकरण, रसायन, अगद और भूतविद्या में विभक्त किया है। सुश्रुत ने सुश्रुतसंहिता में आयुर्वेद का निर्वचन किया है- **'आयुरस्मिन् विद्यते, अनेन वा आयुर्निन्दति'।**[41] इस शास्त्र में रोग का प्रशमन तथा स्वास्थ्य रक्षा दोनों पर ध्यान रखा गया है- **व्याध्युपसृष्टानां व्याधिपरिमोक्षः स्वस्थ्यस्य स्वास्थ्यरक्षणम्।**[42]

2.3.1 आयुर्वेद की पाण्डुलिपियाँ-

प्रस्तुत शोधप्रबन्ध में सर्वेक्षण के दौरान आयुर्वेद की अधोलिखित पाण्डुलिपियों का संकलन एवं सर्वेक्षण किया गया है-

14. फिरंग प्रकाश पाण्डुलिपि का सामान्य विवरण-

- पाण्डुलिपि का रचयिता- अज्ञात।
- पाण्डुलिपि क्रमांक- 53044
- बन्डल संख्या- 461
- रैक संख्या- 29
- पत्र सामग्री- कागज, काली एवं लालस्याही का प्रयोग।
- पाण्डुलिपि का रचनाकाल- संवत् 1825, पुष्पिका के आधार पर।
- पाण्डुलिपि का प्राप्ति स्थान- पा.मि., ज.ल.ने.पु., कु.वि.कु.।
- भाषा- संस्कृत।
- लिपि- देवनागरी।

---

[41] . *चरकसंहिता*, 1/15

[42] . *सुश्रुतसंहिता*, 1/14

- कुल पत्र संख्या-12
- पाण्डुलिपि की अवस्था- इस पाण्डुलिपि के पत्रों की अवस्था अच्छी है। इस पाण्डुलिपि के पृष्ठ के किनारे नमी के कारण हल्के काले पड़ गए हैं।
- पाण्डुलिपि की लम्बाई एवं चौडाई- 21X15.10
- पृष्ठ पर रेखाओं की संख्या- एक पृष्ठ दो भागों में विभक्त है एवं प्रत्येक पृष्ठ पर 10 एवं 11 रेखाएँ प्राप्त होती है।
- अक्षरों की संख्या- अक्षरों की संख्या अनिश्चित है।
- हाशिया- पाण्डुलिपि के किसी भी पृष्ठ पर हाशिया नहीं दिया गया है। पाण्डुलिपि के दाएँ ओर नीचे पृष्ठक्रमांक दिया गया है।
- पाण्डुलिपि के सन्दर्भ में विशेष-

इस ग्रन्थ में मंगलाचरण के लिए लाल स्याही का प्रयोग किया गया है। इसमें ग्रन्थकार ने गलत अक्षर को मिटाने के लिए उसे पीला किया गया है तथा कहीं-कहीं पर पीले किए गए अक्षर के ऊपर लिखा गया है। इसमें लाईनों के मध्य में भी लिखा गया है।इसमें `^' चिह्न का प्रयोग करके लिखा गया है।

- पाण्डुलिपि का मंगलाचरण-

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ फिरंगप्रकाशलिख्यते॥ फिरंगसंज्ञिके देशे बाहूल्ये नैषयद्भवेत् तस्मात् फिरंग इत्युक्तो व्याधिर्व्याधिविशारदैः॥ १॥ तस्य विप्रकृष्टनिदानमाह गन्धरोगः फिरंगो यं जायते देहिनां ध्रुवं फिरंगिणोति संसर्गात् फिरंगिन्याप्रसंगतः॥२॥व्याधिरागं तु जोह्येषां दोषाणामत्रसंज्ञकः भवेत्तल्लक्षये तेषां लक्षणैः भिषिजां वरः॥ ३॥ फिरंगीप्रसंगतः

इतिविशेषार्थमाह फिरंगस्त्रिविधो ज्ञेयो वा ह्य आमतरस्तथा वहिरंतर्भवश्चायित्तेषां लिंगानि च ब्रूवे॥४॥

- पाण्डुलिपि की पुष्पिका-

विस्फोटकमात्रसमहोयतैलभाषानाद् अधिसर्वखाणे गुडमत्स्य मदिरावर्ज्यं अनुभूतमिदं सुंदरेण प्रभुणा कालीजीरी च कुष्टं च टंकत्रयमिदं अष्टथकौभयोः सार्द्धगुणित्तं गुडजीर्णविनिक्षियेत् संपूर्णसर्वमेकत्रं गुटिपंचदशाचरेत् सायं प्रातश्च नोक्तव्यासप्रवासरकं प्रति गोधूमरोटिका सर्पियुक्ता भोज्या तु केवला फिरंगजनिता सर्वोप इवायांति संक्षयनास्त्यनेन समोयोगः फिरंगजनित्तेगदे याते मुखपाकहोयतो केलाकेरसमेनात् रोटीखवावणो वा केवलरसया वणो इति उपदंशम्॥ अथ क्लीहाकोनुपाय पंचांगकेत्तकीक्षारो गुडेन वटकीकृत्तः जयेत्सप्तदिनाभ्यासात् क्लीहानां नात्र संशयः॥ अथस्तभनं कुलीजनटं १ सोति १ दोनोवस्त्रगालकरी मामे २ दोकीमात्राडुधसु ॥ अथ विस्फोटकौपाय हिंगुल मासो १ भाजूफलभा १ फीकडीभा १ सुहागीभा १ सर्वशकत्रकरीं वाटीऊकाभेध्रम्रथानकरा वा भात्रा च्यारओधनीकरवी रात्रण्कण्कयहरमासो १. नीमात्राचार ४ प्रहरेचारकरवी प्रभाते खीचडी भुगनी दालनीधीयः ९० भरषवो प्रथमउष्णोदकस्त्रान करावोसत्पछै संपूर्णं श्री॥ इति फिरंग प्रकाशसंपूर्णम्॥ संवत् १८२५ मिति माघ ४ शनौरणम कृष्णजी पठनार्थं॥परोपकारार्थं॥श्रीरस्तु॥

फिरंग प्रकाश पाण्डुलिपि का चित्र

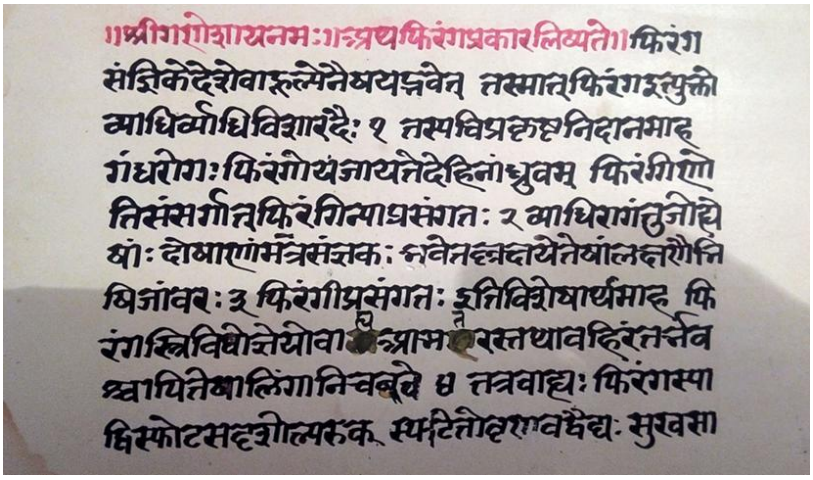

15. **कल्पवैद्यक पाण्डुलिपि का सामान्य विवरण-**

- पाण्डुलिपि का रचयिता- हरिदत्त।
- पाण्डुलिपि क्रमांक- 69
- पाण्डुलिपि का रचनाकाल- संवत् 1905, पुष्पिका के आधार पर।
- पाण्डुलिपि का प्राप्ति स्थान- धरोहर संग्रहालय, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय कुरुक्षेत्र।
- भाषा- संस्कृत।
- लिपि- देवनागरी।
- कुल पत्र संख्या- 24
- पाण्डुलिपि की अवस्था- इस पाण्डुलिपि के पत्रों की अवस्था अच्छी है। इस ग्रन्थ के पृष्ठ किनारों से नमी के कारण हल्के काले हो गए हैं।
- हाशिया- इस पाण्डुलिपि में पाण्डुलिपिकार ने किसी भी पृष्ठ हाशिया नहीं दिया गया है। पाण्डुलिपि के पृष्ठ को दो भागों में विभक्त किया गया है एवं पृष्ठ के बाएं ओर पृष्ठक्रमांक दिया गया है।

- पाण्डुलिपि की लम्बाई एवं चौडाई- 16.6X17.7
- पृष्ठ पर रेखाओं की संख्या- एक पृष्ठ दो भागों में विभक्त है एवं प्रत्येक पृष्ठ पर 17 एवं 16 रेखाएँ प्राप्त होती हैं।
- अक्षरों की संख्या- अक्षरों की संख्या अनिश्चित है।
- पाण्डुलिपि के सन्दर्भ में विशेष- इस पाण्डुलिपि में मोटे काले अक्षरों में लिखा गया है जिसके कारण सुगमता से पढ़ा जा सकता है।
- पाण्डुलिपि का मंगलाचरण-

॥ श्रीगणेशाय नमः॥

ऊं श्रीगणेशाय नमः कल्पलिख्यते॥१॥कृष्णपक्षे चतुर्दश्यां गुरुपुष्पेषु लक्ष्मणा समंत्रं तु समुचार्य्य सोपचारं समुद्धरेत्॥२॥ऊं सर्वार्थसाधिनी लक्ष्मणाय स्वाहा शुभं तन्मूमादाय कृष्णोन्मते फलस्थितं दिनत्रयं स्वशुक्रेण मंत्रपूर्णेन पश्य कृत् लोचना लक्ष्मणमूलं चन्दनं कुसुमं समं मुखलेपादि तन्सर्वं विशेषान्नरमोहनम्॥३॥ ऊं ईश्वरी सर्वदा भव मंकरीताराक्षसाय स्वाहा इत्यमुना मन्त्रेण त्रिधादिभिरनुष्टितं त्रिधा सूत्रेण संवेष्टगुटिकां संप्रपूजयेत् ततः प्रदक्षिणीं कृत्वा भक्त्या स्तुत्या प्रणम्य च तत्र सूर्योदयात् पूर्वं मंत्रमष्टोत्तरं शतम्॥४॥

- पाण्डुलिपि की पुष्पिका-

त्रिकटुत्रिफला युक्तं सिताज्यमधुं संयुतं स्निग्धभांडे विनिक्षिप्यतभ्दु विशीतले क्षिपेत्॥२४॥ मासमुद्धृत्य तन्नित्यं लिहेन्निष्कं तु यत्नतः निवाशायी क्षीराशीतिष्टेदाम्लानमानसः॥२५॥ एकमासप्रयोगेन बलिपलितवर्जितः मासत्रयप्रयोगेन सहस्त्रायुर्भवेन्नरः।।२९॥ इति अरण्डकल्पः समाप्तः॥ तिले तैलेजवं दग्धवा समं कृत्वा तु पेषण्त् तेनैव लेपनातूर्णमग्निदग्धः सुखीभवेत् १ चित्रकं मूलकं पिष्ट्या कृत्वा तु वटिका त्रयं कदली पक्वमध्यस्थं भक्षणप्लीहनासनम्॥ इति कल्पसमाप्ता शुभम् भूयात् संवत्

१९०५ कार्तिक शुक्लाभृगुदिने सप्तम्यां हरिदत्तेन लिपिकृतं संधिस्थमध्ये ऊं नमो भगवते नमः॥

कल्पवैद्यक पाण्डुलिपि का चित्र

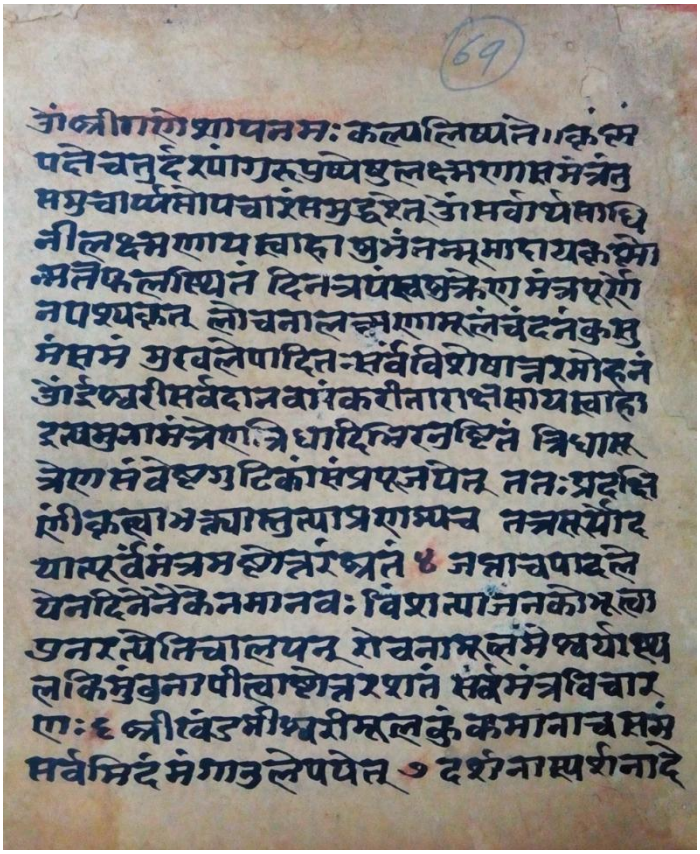

16. **चिकित्सासागर पाण्डुलिपि का सामान्य विवरण -**

- पाण्डुलिपि का रचयिता- वत्सेश्वर।
- पाण्डुलिपि क्रमांक- 51781
- बण्ड़ल संख्या- 275
- रैक संख्या- 23
- पाण्डुलिपि का रचनाकाल- संवत्1650, पुष्पिका के आधार पर।

- पाण्डुलिपि का प्राप्ति स्थान- पा.मि.,ज.ल,ने.पु.,कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय कुरुक्षेत्र।
- भाषा- संस्कृत।
- लिपि- देवनागरी।
- कुल पत्र संख्या- 51
- पाण्डुलिपि की अवस्था- इस पाण्डुलिपि के पत्रों की अवस्था अच्छी है।
- पाण्डुलिपि की लम्बाई एवं चौडाई- 21.7X11.6
- पृष्ठ पर रेखाओं की संख्या- एक पृष्ठ दो भागों में विभक्त है एवं प्रत्येक पृष्ठ पर 7, 8 एवं 9 रेखाएँ प्राप्त होती है।
- अक्षरों की संख्या- अक्षरों की संख्या अनिश्चित है।
- हाशिया- इस ग्रन्थ में प्रथम के पृष्ठों पर हाशिया नहीं दिया गया है, परन्तु अन्तिम दो पृष्ठों पर हाशिया दिया गया है। इस ग्रन्थ में दाएँ एवं बाएँ ओर पृष्ठक्रमांक दिया गया है पृष्ठक्रमांक के साथ में 'शिव' एवं 'राम' शब्द दिया गया है।
- पाण्डुलिपि के सन्दर्भ में विशेष- इस पाण्डुलिपि के पृष्ठों को कहीं-कहीं से सिलवर फिश कीडे के द्वारा छेद किए गये हैं।
- पाण्डुलिपि का मंगलाचरण-

॥ श्रीगणेशाय नमः॥

अथ सामान्यज्वरचिकित्सा॥ गरुडपुराणे शंकरं प्रतिहरिवाक्यं सर्वज्वरेषु प्रथमं कार्यं शंकरलंघनं क्वथितोदकपानं च तथा निर्वातसेवनम्॥१॥ क्वथितोदकलक्षणमुक्तं सुश्रुते सारदसार्द्धपोदानं पादहीनं तु हैमन्तं शिशिरे च वसन्ते च अतीष्मे चार्द्ध अवशेषितं विपरीतं तु दृष्ट्वा प्राष्टषिचाष्टमानिकं हस्तवद्रूपलाक्षास्य अपामार्गस्य वा हरमूलं सर्वज्वरहरं भूतप्रेतादि अनुद्भवेत् अपामार्ग उटचनी प्रपीतं वश्चिकमूलं च

पर्प्पुषितजलेन वा सर्वविनाशयेत् दाहं ज्वरं च परमेश्वर वश्विकोविश्रुतं तिरितिप्रसिद्धशिखायां चैव तद्वदुद्भवेदेकाहिकादिनुत् मुस्तपर्प्पटकोसीरचंदनोदीच्य नगरैः शतं सीतं जलं दद्यात्पित् पासाज्वरशान्तये षडं गोपं नागरं देवकाष्टं च धान्यकं बृहतीद्वयं दद्यात्.....।

- पाण्डुलिपि की पुष्पिका-

अथ लूतारोगचिकित्सा सुरभिका मूललेपात् ज्ञानाशिशोभवे छिवः लूतारोगनहरु आ अथहृदरोगचिकित्सा सुंठीसौ वचलं हिंगु पीत्वा हृदयरोगनुत् इति महासंधिविग्रहे कठक्वुरश्रीदेवाद् इति आत्मत्तस्थानांतरिकं श्रीहरदत्तप्रतिनमृ महामहतकश्रीहोरेश्वरनमृ महामहत्तकश्रीदेवेश्वरात्मजः सप्रक्रियठक्कुरश्रीवत्सेश्वरेण गरुडाग्नेयपुराणाद् आकृष्य महता परिश्रमेण संगृहीतः चिकित्सासागरोनामग्रन्थः समाप्तः संवत् १८५० कार्तिकशुक्ल ५ बृहस्पतिदिने शुभम्॥

चिकित्सासागर पाण्डुलिपि का चित्र

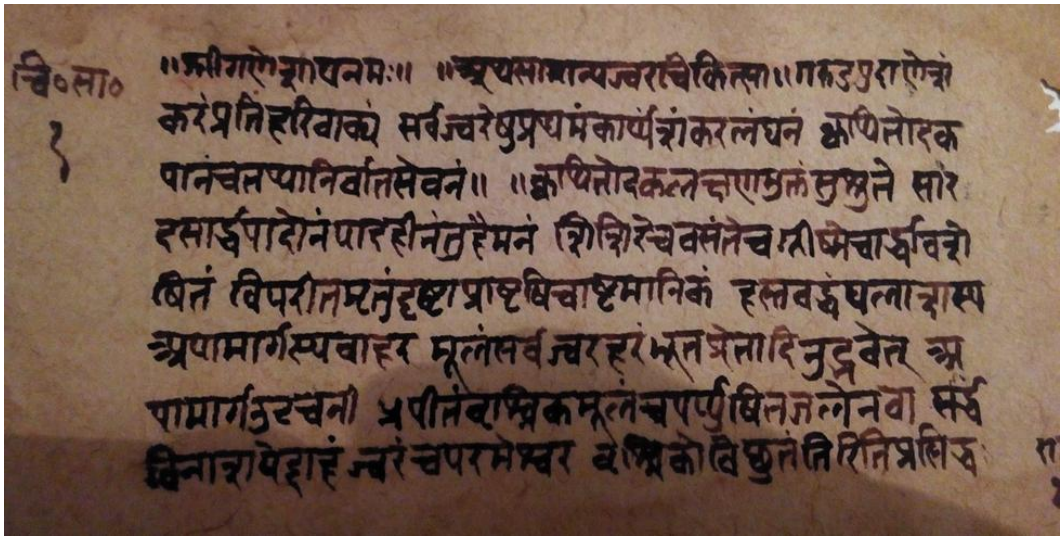

17. **बेबालचिकित्सा पाण्डिलिपि का सामान्य विवरण-**

- पाण्डुलिपि प्राप्ति स्थान- पाण्डुलिपि मिशन, जवाहर लाल नेहरु पुस्तकालय,कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय कुरुक्षेत्र।
- पाण्डुलिपि का रचयिता- वंशीधर मिश्र।
- पाण्डुलिपि क्रमांक- G 769 to 775
- बन्डल संख्या- अज्ञात।
- रैक संख्या- 43
- पत्र सामग्री- कागज, काली स्याही।
- पाण्डुलिपि का रचनाकाल- निर्धारित नहीं किया जा सकता।
- भाषा- संस्कृत।
- लिपि- देवनागरी।
- पत्र संख्या- 24
- पाण्डुलिपि की अवस्था- इस पाण्डुलिपि के पत्र अच्छी स्थिति में हैं।
- पत्र की लम्बाई एवं चौडाई- 28.2X16.11
- पत्र पर रेखाओं की संख्या- एक पृष्ठ दो भागों में विभक्त है एवं प्रत्येक पृष्ठ पर 12 एवं अन्तिम पृष्ठ पर 08 रेखाएँ प्राप्त होती है।
- अक्षरों की संख्या- सामान्यतः अनिश्चित है।
- हाशिया- इस पाण्डुलिपि के किसी भी पृष्ठ पर हाशिया नहीं दिया गया है। पाण्डुलिपि के दाएँ एवं बाएँ दोनों ओर पृष्ठक्रमांक दिया गया है।

- पाण्डुलिपि के सन्दर्भ में विशेष- इस ग्रन्थ के पृष्ठों को कीडे के द्वारा खा लिए गए हैं जिसके कारण पढने में कठिनाई हो रही है। इसमें ग्रन्थकार ने कहीं-कहीं पर हाशिये में भी लिखा है। इसमें '^' चिह्न का प्रयोग कर हाशिये में लिखा गया है। इसमें गलत अक्षर के लिए पीली एवं काली स्याही से प्रयोग किया गया है।
- पाण्डुलिपि का मंगलाचरण-

॥श्रीगणेशाय नमः॥

स्फुरत्रिपुरसुंदरीचरणयुग्ममाराधयन् प्रणम्य च रुजां रिपुं प्रथमवैद्यमं भोधित्तं विलोक्य विविधागमान् करणबीरकुंभात्मजः चिकित्सितमतिं निजां प्रथमयतीह चों अभिधः॥१॥ कारणमंडलविनतं लक्ष्मरथं भेषजोद्योतं ज्वरतिमिरभास्कराद् ग्रंथं तनुते सरोगिणस्त्रातुम्॥२॥ संति यद्यपि तंत्राणि सुविस्तीर्णन्यनेकशः तथापि बालबोधायसारम् उद्धृत्य लिख्यते॥३॥ ज्वरः प्रधानो रोगाणां दुश्चिकित्स्य तमस्तथा तस्मात्तद्रूपनामादि चिकित्सा क्रमोच्यते॥४॥

- पाण्डुलिपि की पुष्पिका-

जरातीसारे हरिद्राहययषानाहू सिंहीशक्रयवैः कृतं शिशोर्ज्वरातिसारघ्नः कषायस्तन्यदोषजित्॥९१॥ जूरेमृषः पलकषाव चाकुष्टं गजचर्म च बाह्लिकः निंवपत्रं तु माक्षीकं सर्पिर्युक्तं तू धूपनं जूरबेगं निहंत्या श्रुबालानां तु विशेषतः ॥९२॥ शोथे मधुसर्पिर्युतं चूर्णं त्रिफला व्योषसैंधवैः लाद्वा निवारयत्याश्रु गात्रशोथहरं शिशोः॥९३॥ दद्रुरोगे वचाकुष्टविडंगानां कोह्मक्काथावगाहनात् कछूविचर्चिकादद्रु कृमिभिर्मुच्यते शिशुः॥९४॥ इति श्रीमिश्रवंशीधरविरचिते वैद्यमनोत्सवे बेबालचिकित्सा नाम सप्तमः परिच्छेदः शुभमस्तु॥ लेखकपाठकानां ॥मुरारी॥

बेबालचिकित्सा पाण्डुलिपि का चित्र

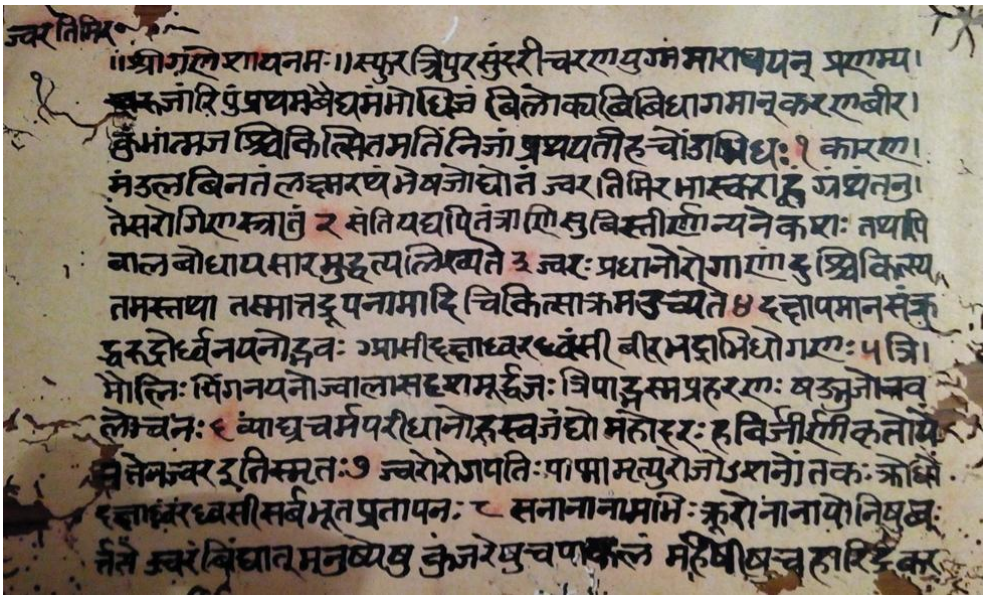

इस प्रकार सर्वेक्षण के दौरान वेद, वेदाङ्ग एवं आयुर्वेद की पाण्डुलिपियाँ उपलब्ध हुई। इन प्रकाशन करवाना ही संस्कृति का संवर्धन एवं संरक्षण करना है। अतः इनको लघुशोधप्रबन्ध में संकलित करके शोधार्थी ने लघुप्रयास किया है।

तृतीय अध्याय

3.1 साहित्य का अर्थ एवं परिचय-

भारतीय संस्कृति का मुख्य संवाहक संस्कृत साहित्य रहा है। यदि संस्कृत काव्यों में संस्कृति अपनी सुगमता का गुणगान करती है तो संस्कृत नाटकों में वह अपनी मनोहर क्रीडा के दृश्य दिखाती है। आध्यात्मिक भावना इस संस्कृति की प्राणतत्त्व है। तपस्या से पोषित, त्याग से अनुप्राणित एवं तपोवन में संवर्धित भारतीय संस्कृति का मनोहर आध्यात्मिक रूप संस्कृत ग्रन्थों में अपनी सुन्दर झाँकी दिखाता हुआ सहृदयों के हृदय को अपनी ओर आकृष्ट करता है।

संस्कृत साहित्य का इतिहास अनेक काल विभागों में बांटा जा सकता है। श्रुतिकाल जिसमें वैदिक संहिता, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद् का निर्माण हुआ । तत्पश्चात् स्मृतिकाल जिसमें वेदाङ्ग, पुराण रामायण एवं महाभारत की रचना हुई। तृतीय काल वह है जिस समय पाणिनि के नियमों द्वारा भाषा नितान्त संयत तथा सुव्यवस्थित की गई तथा काव्यनाटकों की रचना होने लगी। इस काल को हम लौकिक संस्कृत का काल कहते हैं। लौकिक संस्कृत में लिखा गया साहित्य विषय, भाषा, भाव आदि की दृष्टि से अपना विशिष्ट महत्त्व रखता है।

लौकिक साहित्य का प्रादुर्भाव आदिकाव्य रामायण से माना जाता है तथा आदिकवि वाल्मीकि को स्वीकार किया जाता है। एक समय महर्षि वाल्मीकि तमसा नदी के तट से स्नान करके आ रहे थे। तब शिकारी ने क्रौञ्च एवं मादा क्रौञ्च पक्षी में से एक पक्षी को अपने बाण से मार दिया। वाल्मीकि जी आश्रम जाते हुए वहाँ से गुजरे और उन्होंने यह दृश्य देखा तथा भावविभोर एवं हृदय विदारित हो गया। अतः उनके मुख से यह वचन निकले-

"मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वती समाः।

यत्क्रौञ्चमिथुनाद् एकमवधी काममोहितम्"॥[43]

[43] . *रामायण,* 2/46

ए. विलियम ने संस्कृत साहित्य की समृद्धि की प्रंशसा करते हुए कहा है कि-

"In India, literature like the whole face of nature is on gigantic scale. Poetry born amid the majestic scenery of the Himalays and fostered is a climate, which inflamed. The imaginative powers, developed itself with oriental luxuriance ; if not always with true sub limity."[44]

साहित्य शब्द का अर्थ- 'साहित्य' शब्द और अर्थ के मञ्जुल सामञ्जस्य का सूचक है। साहित्य शब्द का निष्पत्ति **"सहितयोः भावः साहित्यम्"**[45] अर्थात् सहित शब्द तथा अर्थ का भाव। इस मौलिक अर्थ में इसका प्रयोग हमारे काव्य एवम् अलंकार ग्रन्थों में अनेक स्थानों पर दिखाई पड़ता है।

महाकवि भतृर्हरि ने कहा है कि-

"साहित्य संगीत कलाविहीनः साक्षात्पशुः पुच्छविषाणहीनः"॥[46]

अर्थात् संगीत एवं कला से विहीन मनुष्य को पशुतुल्य कहा है, वहाँ पर कवि का अभिप्राय 'साहित्य' के उन कोमल काव्यों से है जिसमें शब्द और अर्थ का अनुरूप सन्निवेश है।

राजशेखर ने काव्यमीमांसा में कहा है कि-

"पंचमी साहित्यविद्येति यायावरीयः"॥[47]

अर्थात् राजशेखर साहित्य को पञ्चमी विद्या स्वीकार करते हैं जो पुराण, न्याय, मींमासा एवं धर्मशास्त्र का सारभूत है। बिल्हण के अनुसार साहित्य का स्वरूप इस प्रकार है-

"साहित्य पाथोनिधि मन्थनोत्थं काव्यामृतं रक्षत हे कवीन्द्राः।
यदस्य दैत्या इव कुण्ठनाय काव्यार्थचौराः प्रगुणी भवन्ति"॥[48]

---

[44] . *Indain Wisdom*, chapter 1, P. 306

[45] . *संस्कृत साहित्य का इतिहास*, पृ- 10

[46] . *भर्तृहरित्रयशतक*, पृ- 52

[47] . *काव्यमींमासा*, पृ. 4

[48] . *विक्रमांकदेवचरित*, 1/11

अर्थात् कवि बिल्हण ने काव्यरूपी अमृत को साहित्य रूपी समुद्र के मन्थन से उत्पन्न होने वाला बताया है। इस प्रकार साहित्य शब्द का प्रयोग संकुचित अर्थ में काव्य-नाटक आदि के लिए होता है।

3.1.1 साहित्य की पाण्डुलिपियाँ-

प्रस्तुत लघुशोधप्रबन्ध में सर्वेक्षण के दौरान साहित्य की अधोलिखित पाण्डुलिपियाँ प्राप्त हुई हैं-

1. **वीरसिंहावलोकन पाण्डुलिपि का सामान्य परिचय-**

- पाण्डुलिपि का रचयिता- श्री वीरसिंह।
- पाण्डुलिपि क्रमांक- 19530
- बण्ड़ल संख्या- 37
- रैक संख्या- 05
- पाण्डुलिपि का रचनाकाल- निर्धारित नहीं किया जा सकता।
- पाण्डुलिपि का प्राप्ति स्थान- पा.मि., ज.ल, ने.पु., कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय कुरुक्षेत्र।
- भाषा- संस्कृत।
- लिपि- देवनागरी।
- पत्र सामग्री- कागज एवं काली तथा लाल स्याही।
- कुल पत्र संख्या- 7
- पाण्डुलिपि की अवस्था- इस पाण्डुलिपि के पत्रों की अवस्था अच्छी है। पाण्डुलिपि के पत्रो को कहीं- कहीं से स्लिवर फिश (कीडा) द्वारा खाया गया है।

- पाण्डुलिपि की लम्बाई एवं चौडाई- 27.2 X 15.6
- पृष्ठ पर रेखाओं की संख्या- एक पृष्ठ दो भागों में विभक्त है एवं प्रत्येक पृष्ठ पर 14 एवं अन्तिम पृष्ठ पर 13 रेखाएँ प्राप्त होती है।
- अक्षरों की संख्या- अक्षरों की संख्या अनिश्चित है।
- हाशिया- इस ग्रन्थ के किसी भी पृष्ठ पर हाशिया नहीं दिया गया है।इसमें पृष्ठ के बाएँ एवं दाएँ ओर पृष्ठक्रमांक दिया गया है।
- पाण्डुलिपि के सन्दर्भ में विशेष- इस पाण्डुलिपि के कई पृष्ठों के किनारे पानी के कारण हल्के काले हो गए हैं, फिर भी यह पाण्डुलिपि अच्छी तरह से पढी जा सकती है, क्योंकि ग्रन्थकार ने पक्की स्याही का प्रयोग किया है। इस ग्रन्थ में ग्रन्थकार ने काली एवं लाल से मंगलाचरण लिखा है। इसमें ग्रन्थकार ने प्रारम्भ में 'ओम्' तदनन्तर 'अथ' शब्द का प्रयोग मंगलाचरण में किया है। यह पाण्डुलिपि तोमर वंश से सम्बन्धित प्रतीत होती है क्योंकि ग्रन्थकार ने पुष्पिका में इस वंश का नामोल्लेख किया है।
- पाण्डुलिपि का मंगलाचरण-

॥ ऊं अथ मिश्रिकाध्यायः॥

मुस्तपर्यटकं त्वरेत्वषितलं मृद्भ्रष्टलोष्टोद्भवम्॥ लाताछर्द्धिषु वस्ति तेषु विरहे तमेषु धात्रानिशे॥१॥ पांडोश्रष्टमयां वलातिलकफेल्येहमये पिप्पली॥ संद्वाते कृमिजा विशेषकतरुन्मेदाविलेषु युगलः॥२॥ वृषोश्रीयत्ते कुटतोति सारे भल्लातमर्शः सुरागरेषु दे ॥ मस्थलेषु तात्पर्यं कृमिते कृमिन्नं शोषे सुराज्ञा भाषयेथमांसम्॥३॥ गत्या मयेषु त्रिफला यदृशी बाह्यरोगे माथतं ग्रहाभ्याम्॥ कुष्टेषु सेव्यः खदिरस्य सारः सर्वेषु सर्गेष्वसि लाहर्षं वा॥४॥

- पाण्डुलिपि की पुष्पिका-

द्रोणद्वयं च सूर्यस्य आत्सात्सूर्यकुंभं चोच्यते चतुःषष्टिशाखां सौ व्यवहारार्थमिष्यति ॥११॥ महादशयलानीह शतानां पंच चोच्यते द्रोणिद्रोणाश्च चत्वारः सशरावशतं मतम् ॥१२॥ अष्टाविंशति संयुक्तं सर्वथा सूक्ष्मबुद्धिभिः पलानां सहस्त्रैकं सचतुर्विंशति स्मृतम् ॥१३॥ प्रस्थादिमानम् आरभ्य इव आर्धद्विगुणमिदं कुडवेपि क्वचिद्दृष्टं यथा द्वंतीक्षते स्मृते ॥१४॥ वेणवाद्यामसादीनां भांडं चतुरं गुलं विस्तीर्णमथवृतं च कुडवं तद्विनिर्द्दिशेत् ॥१५॥ इति परिभाषा इति श्रीतोमरवंशावतं सरिपु भूतभैरवश्रीवीरसिंहदेवविरचिते ग्रन्थे वीरसिंहावलोके समाप्तः शुभमस्तु सर्वं जगताम् रामाय नमः रामाय मंगलं लेखकानां च पाठानां च मंगलं मंगलसर्वलोकानां भूमिर्भूपति मंगलम्॥

वीरसिंहावलोकन पाण्डुलिपि का चित्र

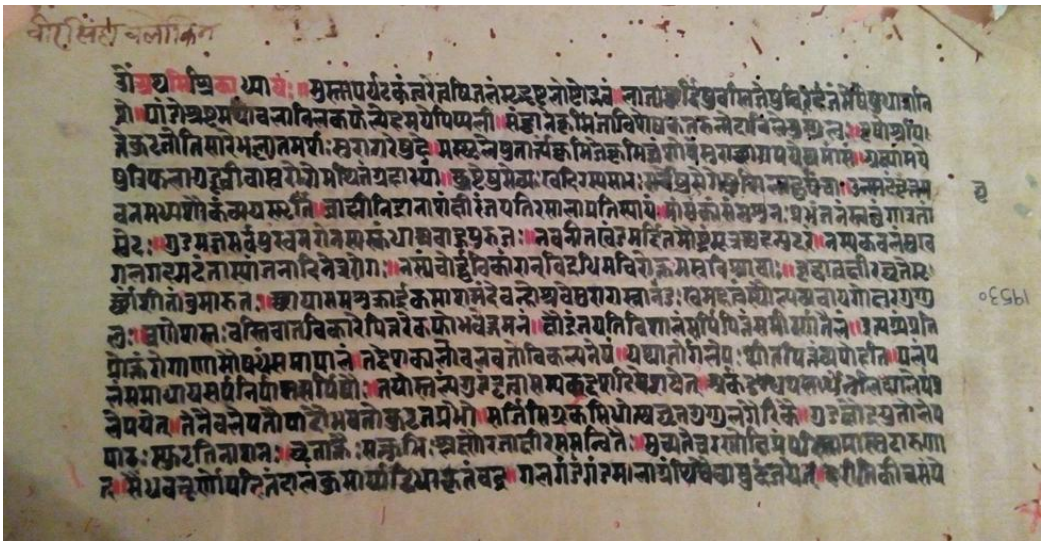

2. **धनञ्जयविजयः पाण्डुलिपि का सामान्य परिचय-**

- पाण्डुलिपि का रचयिता- काञ्चन मिश्र।
- पाण्डुलिपि क्रमांक- 54049
- बण्ड़ल संख्या- 538
- रैक संख्या- 33

- पाण्डुलिपि का रचनाकाल- संवत् 1901, पुष्पिका के आधार पर।
- पाण्डुलिपि का प्राप्ति स्थान- पा.मि., ज.ल, ने.पु., कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय कुरुक्षेत्र।
- भाषा- संस्कृत।
- लिपि- देवनागरी।
- पत्र सामग्री- कागज एवं लाल तथा काली स्याही।
- कुल पत्र संख्या-17
- पाण्डुलिपि की अवस्था- इस पाण्डुलिपि के पत्रों की अवस्था अच्छी है।
- पाण्डुलिपि की लम्बाई एवं चौडाई- 20.1 X 10.4
- पृष्ठ पर रेखाओं की संख्या- एक पृष्ठ दो भागों में विभक्त है एवं प्रत्येक पृष्ठ पर 8 एवं अन्तिम पृष्ठ पर 7 रेखाएँ प्राप्त होती है।
- अक्षरों की संख्या- अक्षरों की संख्या अनिश्चित है।
- हाशिया- इस ग्रन्थ के प्रथम चार पृष्ठों पर दाएँ एवं बाएँ दोनों ओर लाल स्याही से हाशिया खींचा गया है। अन्य सभी पृष्ठों पर हाशिया नहीं दिया गया है। हाशिया में ही दाएँ एवं बाएँ पृष्ठक्रमांक दिया गया है।
- पाण्डुलिपि के सन्दर्भ में विशेष- इसमें ग्रन्थकार ने गलत अक्षर के मिटाने के लिए पीली स्याही का प्रयोग किया है। इसमें एक पृष्ठ पर दाएँ ओर हाशिये में भी लिखा गया है।
- पाण्डुलिपि का मंगलाचरण-

॥ श्रीगणेशाय नमः॥

हरेर्लीलावद्रहस्यदष्ट्रादण्डः पुनातु वः॥ हेमाद्रि कलशा यत्र धात्री छत्रश्रियं दधौ॥ १॥ अपि च॥ तद्वःप्रमार्षु विपदः प्रमात्तार्त्तिहं आन्यस्तं पदं महिषमूर्द्दति चण्डिकायाः॥

वैरीयदीयनस्वरां विपरीतश्रृंगः शक्रायुधं कितन वा सुधरप्रभोभूत्॥२॥ अपि च॥ तद्वःसारस्वतं वक्रुः समुन्मीलतु सर्वदा॥ यत्र सिद्धाञ्जनायन्ते गुरुपादाकुरेण वः॥३॥ नांद्येत्ते सूत्रधारः॥ समंतादवलोक्य॥ अहोरमूणीयता प्रभातसमयस्य।। दाराणां मुखैरिणोरति पतेः मातुः त्रिलोकीजितः स्फायत्यं कजकोटरीदरजुषो निद्रा विरामे श्रियः॥ प्रत्युद्बुद्धमरालयकपटहध्वानप्रबुद्धा स्वनत् भृंगीमंगलगायकेव मधुरं प्रोत्कूजति प्रांगणे॥४॥ पुनः परितोवलोक्य॥ अहो रमणीयः शरदारंभः तथाहि सरो हरति मे चेतः प्रोन्मज्जत्य प्रकुष्तलम्॥ वक्षो हरिणा शावाक्ष्या मन्दोदं च कुचं यथा॥५॥

- पाण्डुलिपि की पुष्पिका-

भूपाभवतु कविसूक्तिषु सानुरागाः संत्पज्यभराडजनता प्रणायानुरागम्॥१४॥ इति निःक्रांताः सर्वे॥ इति कांचन मिश्र विरचितो धनंजयविजयो नाम व्यायोगः समाप्तः॥ श्रीरस्तु॥ श्रीराधारमणो॥ जयतु॥ शोल्लूकी पुस्तक॥ ॥श्रीः॥

तथा च भरतः छन्छयुद्धं महाभीमं प्रगल्भो यत्र नायकः संस्कृतप्राकृतो येतमेकांककथितक्रमं व्यायोगं तं बुधा उचुरेवं वीरस्सोद्वुरमिति भरतसूत्रात् व्यायोगलक्षणमनुसंधेयम्॥ व्यायुज्यते समं सामंतस्मान्तेनेति व्यायोगो द्वन्द्वयुद्धैति व्युत्त्या लकणामनुनेयम् ॥ ॥वासुदेव॥

वा विशेषेण आयुज्यते नायको विजयकीर्त्यादिभिः यत्र स व्यायोगः अत्र नायकस्य इव योगे न प्रतियोद्धुः॥ संवत् १९०१॥ श्रीरामनाशाय राम॥

धनञ्जयविजययोग पाण्डुलिपि का चित्र

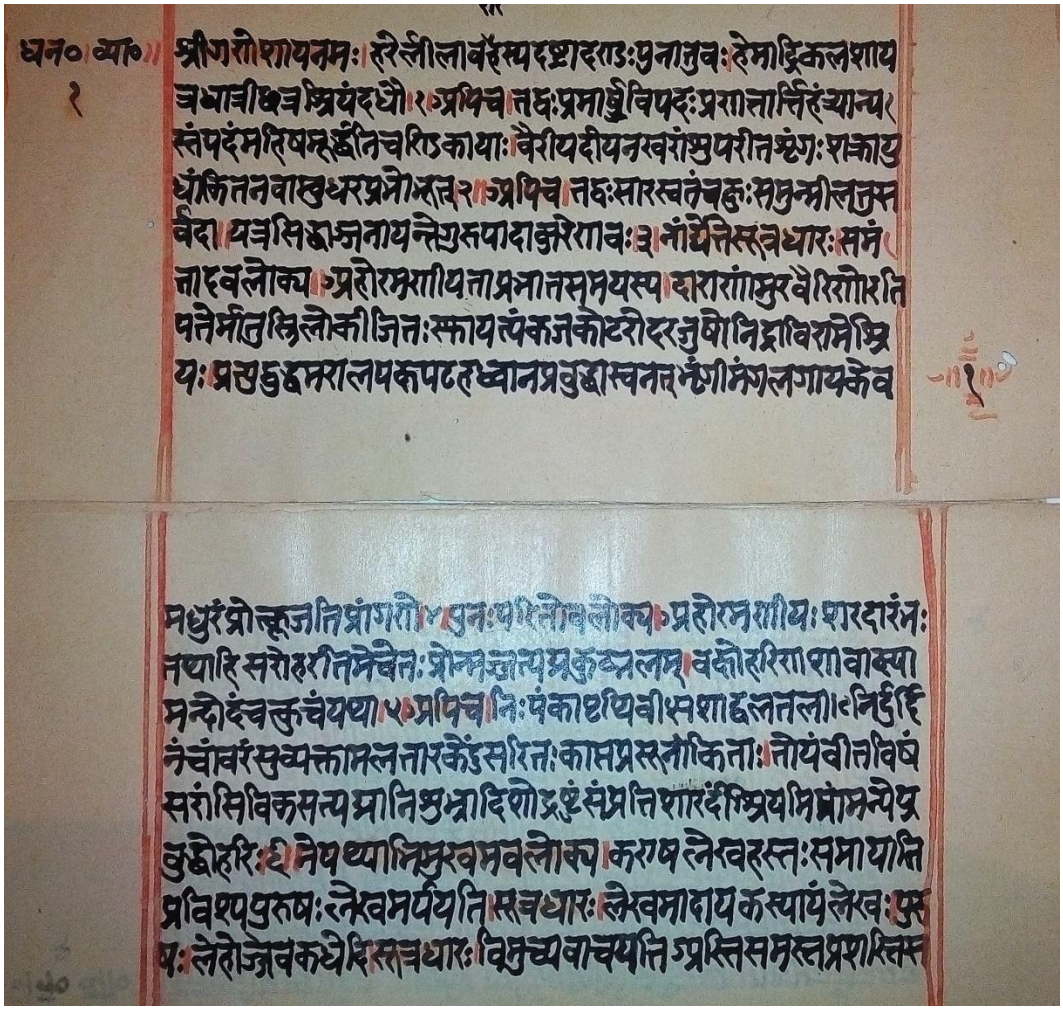

3. **श्लोकव्याख्या पाण्डुलिपि का सामान्य परिचय-**

- पाण्डुलिपि का रचयिता- मामचन्द।
- पाण्डुलिपि क्रमांक- 50722
- बण्ड़ल संख्या- 224
- रैक संख्या- 20
- पाण्डुलिपि का रचनाकाल- संवत्1891, पुष्पिका के आधार पर।

- पाण्डुलिपि का प्राप्ति स्थान- पा.मि., ज.ल, ने.पु., कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय कुरुक्षेत्र।
- भाषा- संस्कृत।
- लिपि- देवनागरी।
- कुल पत्र संख्या- 02
- पाण्डुलिपि की अवस्था- इस पाण्डुलिपि के पत्रों की अवस्था अच्छी है।
- पाण्डुलिपि की लम्बाई एवं चौडाई- 30 X 7.10
- पृष्ठ पर रेखाओं की संख्या- एक पृष्ठ दो भागों में विभक्त है एवं प्रत्येक पृष्ठ पर 8, 7 एवं अन्तिम पृष्ठ पर 6 रेखाएँ प्राप्त होती है।
- अक्षरों की संख्या- अक्षरों की संख्या अनिश्चित है।
- हाशिया- इस पाण्डुलिपि के किसी भी पृष्ठ पर हाशिया नहीं दिया गया है। इस ग्रन्थ के पृष्ठ के दाएँ एवं बाएँ ओर पृष्ठक्रमांक लिखा गया है।
- पाण्डुलिपि के सन्दर्भ में विशेष- इस पाण्डुलिपि के पृष्ठक्रमांक के ऊपर 'शिव' शब्द ग्रन्थकार ने लिखा है। इस ग्रन्थ की पुष्पिका के अन्तिम में 15 बार 'छ' अक्षर लिखा गया है।
- पाण्डुलिपि का मंगलाचरण-

॥ श्रीवासुदेवाय नमः॥

ओं वासनावासुदेवस्य वासितं भुवनत्रयं सर्वभूतनिवासीनां वासुदेवनमो स्तुते॥१॥ रविर्विनायको विष्णुश्चंडीशम्भुः तथैव च अनुक्रमेण युज्यन्ते स्तूयन्ते वरदा नृपः॥२॥ सूर्यपक्षे पदच्छेदः वासनावासुदेवस्य वासितं भुवनत्रयं सर्वभूतानिवासितमिव अव आसुत् एव नमः अस्तु अव इत्यद्रोद्रे इन सूर्यत्वं भुवनत्रयं सितमुज्जलं वासुदेव जनयन्तेव असि असीति शेषः इव इति ..... (पृष्ठ फटा हुआ है) ने अव्ययम् इनः सूर्ये स्वामिनि चेति

विश्वः षु प्रसवैश्वर्ययोः तेनासुदिति निष्पन्नं कीदृक् भुवनत्रयं सर्वभूतानां निवासे..... (पृष्ठ फटा हुआ है) वेति तथा अस्त्यर्थे इनिः पुनः वासुदेवस्य विष्णोः वासना वासुदेवस्य मायैव वा अर्थेमायैव वांधनसमिति श्रुतिः तदपहरति ज्ञानात्मकादितिध्वनिः तेन मोस्त्विति सर्वत्र १. गणेशपक्षे पदच्छेदः वासना वासुदेवस्य वासितं भुवनत्रयं सर्वभूतानिवासीन अवासुतत्वने (शोधार्थी की दृष्टि में) मः अस्तु ते अवायाशकाशात् सौति जायते इत्यं वासुत्॥ हे पार्वती! पुत्रवासनाभिलाषं वान्ति घ्नन्ति येते वासना वा विघ्नास्ते वासुदेवगणेशनाथ हे सर्वविघ्नाधिपते सरस्वती! सर्वासाचासौ भूः पृथ्वीस्तस्याः तनिंविस्तारं हंतीति सर्वभूतनिवोमूषकः तत्र आसीत्॥

- पाण्डुलिपि की पुष्पिका-

चण्डीपदच्छेदः वासनावासुदेव अवसि अवासितं भुवनत्रयं सर्वभूतनिवासिना अम्ब वसुदेव अव नमोस्तुते॥ हे अवमातः! तेन मोस्तुहे वसुदेवभक्तेभ्यः प्राणदात्रित्वं भुवनत्रयं अवसि कथं वासना वा आधरनौकारूपतया कीदृशं तत् अवासितं त्वद् तेनाधरं कीदृशत्वं सर्वभूतनिवासीशिवः इनो भर्त्ता यस्याः यद्वा सर्वभूः ब्रह्मा तस्य तनिंप्रपंचं वा निहंति यो महिस्तत्रासीना॥ हे वसुदे! शत्रूणां प्राणवायु नेमां अव॥४॥ शिवपक्षे पदच्छेदः वासनावासुदेवस्य वासितं भुवनत्रयं सर्वभूतानिवासीनं वासुदेवनं यो स्तुते सर्वसंशयोरभेदात् हे सर्वभूतनिवासीनां भूम्यादीनां इन स्वामिनः स्वामिन् हे वासुदेव! पार्वती प्राणनाथ वासनावासुवासनाश्रयं भुवनत्रयं देवस्य तव वासितं भक्षितं कल्पन्ते ग्रासभूतं वर्त्तते तेन मोस्तुते॥५॥ वासना वेति यद्यस्य व्याखायां चकमुत्तमं पंचदेवाश्रयं श्रेयो विलिलेखचतुर्भुजः॥ इति श्लोकव्याख्यासमाप्ता॥ शिवाय नमः ॥ परशुरामो जयति वासुदेवाय नमः॥ छ छ छ छ छ छ छ छ छ छ छ छ छ छ छ छ लिपिकृतं मामचंदेन ॥संवत् १८९१ ॥

श्लोकव्याख्या पाण्डुलिपि का चित्र

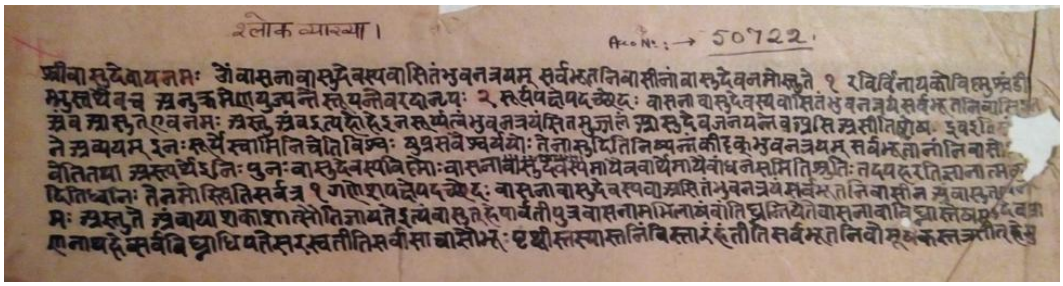

4. **बुधाष्टमी कथा पाण्डुलिपि का सामान्य विवरण-**

- पाण्डुलिपि प्राप्ति स्थान- पाण्डुलिपि मिशन, जवाहर लाल नेहरु पुस्तकालय, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय कुरुक्षेत्र।
- पाण्डुलिपि का रचयिता- अज्ञात।
- पाण्डुलिपि क्रमांक- 50180
- बण्ड़ल संख्या-115
- रैक संख्या-11
- पत्र सामग्री- कागज, काली स्याही।
- पाण्डुलिपि का रचनाकाल- निर्धारित नहीं किया जा सकता।
- भाषा- संस्कृत।
- लिपि- देवनागरी।
- पत्र संख्या- 2
- पाण्डुलिपि की अवस्था- इस पाण्डुलिपि के पत्र अच्छी स्थिति में हैं।
- पत्र की लम्बाई एवं चौडाई- 29.9X 13.8

- पत्र पर रेखाओं की संख्या- एक पृष्ठ दो भागों में विभक्त है एवं प्रत्येक पृष्ठ पर 12 तथा अन्तिम पृष्ठ पर 05 रेखाएँ प्राप्त होती है।

- अक्षरों की संख्या- सामान्यतः अनिश्चित है।

- हाशिया- पृष्ठ पर हाशिया नहीं दिया गया है एवं पृष्ठ पर बाएँ एव दाएँ ओर नीचे पृष्ठक्रमांक दिया गया है।

- पाण्डुलिपि के सन्दर्भ में विशेष- इस ग्रन्थ के पृष्ठ सिलवर कीडे द्वारा कहीं-कहीं से खाए गए हैं।

- पाण्डुलिपि का मंगलाचरण-

॥ ऊं रामाय नमः ॥

अथ बुधाष्टमी कथा लिख्यते।। श्रीकृष्ण उवाच कृष्णो युधिष्ठिरं प्राह बुधाष्टमी फलमुत्तमं ब्रवीमि विधिना यच्च श्रृणु पाण्डवयत्नतः॥१॥ येन चीर्णनरोनारी नरकं तु न पश्यति सराकृतयुगस्य आदौ३डो राजा बभूवह॥२॥ वङ्गभृत्य स्वजनमित्रैः मंत्रिभिः परिवारितः जगाम हिमवत् पार्थे महादेवेन वारिते॥३॥ स राजा मृगसंगेन प्रविष्टः तत्र महावने एकाकी तरगोपेतः क्ष... (पृष्ठ फटा हुआ है) स्त्रीत्वं जगामह॥४॥

- पाण्डुलिपि की पुष्पिका-

श्रीभगवानुवाच प्रथमे मोदकं भक्ष्ये द्वितीये तत् पूरकां तृतीये गुणपूरकं चतुर्थे वटकं तथा पञ्चमं शुभकासारं षष्टं चैव सुहानिका सप्तमेमिष्टान्नं च अष्टमं फेणिकां तथा दानं दद्यायथा शक्तिगोधूमन्त्रि विशेषतः क्षीरखंडं च दातव्यं सर्वकर्मयुधिष्ठिर॥४३॥ इति श्री महाभारते श्रीकृष्णयुधिष्ठिरसंवादे बुधाष्टमी कथा समाप्ताः॥

॥ऊं नमो नारायणाय लक्ष्मीसहितायै॥

बुधाष्टमी कथा पाण्डुलिपि का चित्र

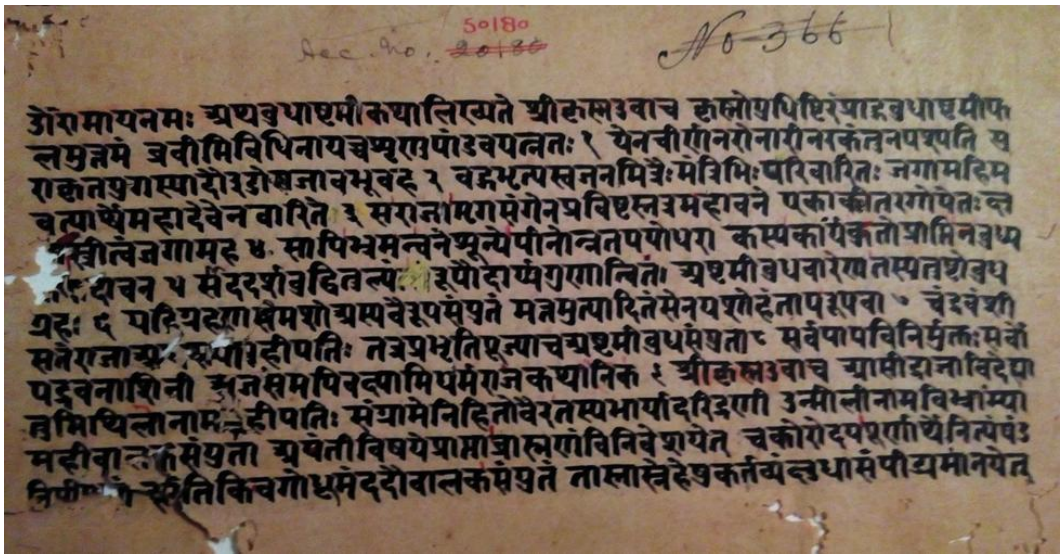

5. **चित्रध्याननाटकदीप पाण्डुलिपि का सामान्य परिचय-**

- पाण्डुलिपि का रचयिता- श्री भारती तीर्थ विद्यारण्य।
- पाण्डुलिपि क्रमांक- 111
- पाण्डुलिपि का रचनाकाल- निर्धारित नहीं किया जा सकता।
- पाण्डुलिपि का प्राप्ति स्थान- धरोहर संग्रहालय, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय कुरुक्षेत्र।
- भाषा- संस्कृत।
- लिपि- देवनागरी।
- कुल पत्र संख्या-72
- पत्र सामग्री- कागज एवं काली स्याही।

- पाण्डुलिपि की अवस्था- इस पाण्डुलिपि के पत्र पानी के कारण हल्के काले पड गए हैं लेकिन फिर भी पाण्डुलिपि को आसानी से पढा जा सकता है क्योंकि पाण्डुलिपि के पृष्ठ किनारों से काले हुए हैं।

- पाण्डुलिपि की लम्बाई एवं चौडाई- 37.6 X 14

- पृष्ठ पर रेखाओं की संख्या- एक पृष्ठ दो भागों में विभक्त है एवं प्रत्येक पृष्ठ पर 12 एवं अन्तिम पृष्ठ पर 10 रेखाएँ प्राप्त होती है।

- अक्षरों की संख्या- अक्षरों की संख्या अनिश्चित है।

- हाशिया- इस ग्रन्थ के बाएँ एवं दाएँ दोनों ओर काली स्याही से दो-दो रेखाओं से हाशिया खींचा गया है। इस हाशिये में ही पृष्ठक्रमांक दिया गया है तथा बाएँ ओर के पृष्ठक्रमांक के ऊपर ग्रन्थ का नाम तथा दाएँ ओर के पृष्ठक्रमांक के ऊपर 'राम' शब्द लिखा गया है।

- पाण्डुलिपि के सन्दर्भ में विशेष- इस पाण्डुलिपि के कई पृष्ठ चारों ओर से पीले किए गये हैं। इसमें गलत शब्दों को मिटाने के लिए पीली स्याही का प्रयोग किया गया है। इसमें छूटे हुए अक्षर तथा शब्द को ऊपर या हाशिये में लिख दिया है।

- पाण्डुलिपि का मंगलाचरण-

॥ श्रीगणेशाय नमः॥

नत्वा श्रीभारतीतीर्थविद्यारण्य मुनीश्वरौ क्रियते चित्रदीपस्य व्याख्यातात्पर्यबोधिनी।। चिकीर्षितस्य ग्रंथस्य निष्प्रत्यूहपरिपूरणाय परमात्मनीति पदेन अष्टदेवता तत्वानुसंधानलक्षणं मंगलमाचरन् तस्य ग्रंथस्य वेदांतप्रकरणत्वात् तदीयैरेव विषयादिभिः तद्वत्तासिद्धिं मनसि निधायऽऽध्यारोपायवादाभ्यां निष्प्रपंचं प्रपंच्यत इति न्यायमनुसृत्य परमात्मन्यारोपितस्य जगतः स्थितिप्रकारं सदृष्टां तं प्रतिजानीते यथेति

चित्रपटे यथा वक्षमाणानामवस्थानां चतुष्टयं तथा एवम् अयमात्मन्यपि वक्षमाणमवस्था चतुष्टयं ज्ञेयमिति किं तदित्याकांक्षायां दृष्टां तदार्ष्टांति कयोरुभयोः ------

- पाण्डुलिपि की पुष्पिका-

कप्यं तादृक् मया ग्राह्यमिति वेन्मैव गृह्यतां सर्वत्र ग्रहोपसं शातौ स्वयमेव अवशिष्यते ॥२४॥ न तत्र मानापेक्षास्ति स्वप्रकाशस्वरूपतः॥ तादृग् व्युत्पत्यपेक्षा चेछकतिं पठ गुरोर्मुखात्॥२५॥ यदि सर्वगृहत्यागोऽशक्तः तर्हिधियं व्रजशरणागतं तदधीनोंतर्वहिर्वैयोऽनुभूयताम्॥२६॥ इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकार्य श्रीभारतीविद्यारण्यमुनिवर्य किंकरेण रामकृष्णाख्य विंदुषाविरचिता नाटकदीपख्या समाप्ता॥

एवमुत्तमाधिकारिणः आत्मानुभवोपायमभिधाय मंदाधिकारिणः तं दर्शयति यदि सर्वेति बुद्धिशरणत्वे किं फलमित्य तत्राह तदधीन इति॥ बुद्यापह्युत्परि कल्पयते बाह्यमांतरं वातस्य तस्य साक्षित्वेन तदधीतः।। परमात्मातय्यैव अनुभूयतां इत्यर्थः॥२६॥ इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यः श्रीभारतीतीर्थविद्यारण्यं मुनिवर्यः किंकरेण रामकृष्णाख्यविदुषाविरचितानाटकदीपव्याख्या समाप्ता॥

चित्रध्याननाटकदीप पाण्डुलिपि का चित्र

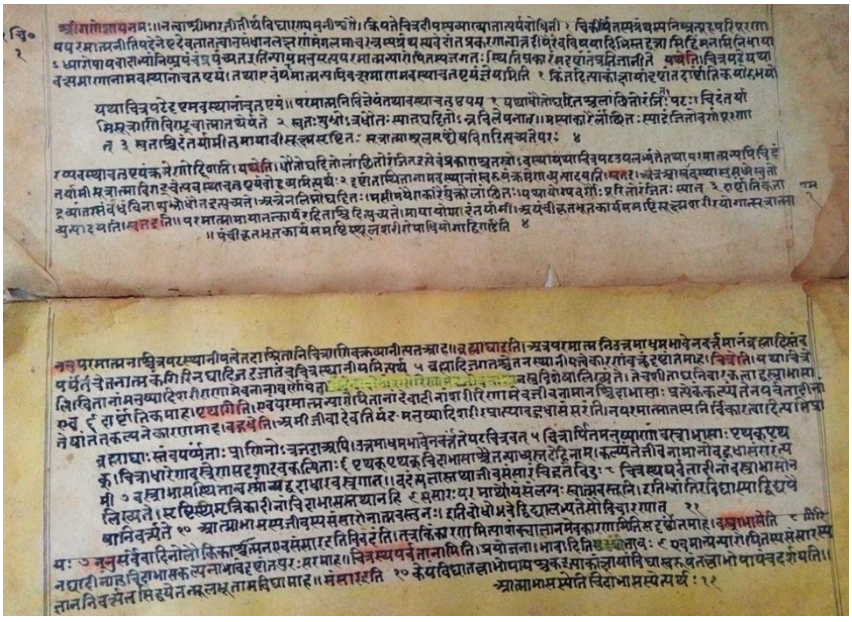

6. **जीवितक्रिया पाण्डुलिपि का सामान्य विवरण-**

- पाण्डुलिपि प्राप्ति स्थान- पाण्डुलिपि मिशन, जवाहर लाल नेहरु पुस्तकालय, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय कुरुक्षेत्र।
- पाण्डुलिपि का रचयिता- श्री बुलाकी राम।
- पाण्डुलिपि क्रमांक- 50654
- बण्ड़ल संख्या-161
- रैक संख्या-16
- पत्र सामग्री- कागज, काली एवं लाल स्याही।
- पाण्डुलिपि का रचनाकाल- संवत् 1967।
- भाषा- संस्कृत।
- लिपि- देवनागरी।
- पत्र संख्या- 16
- पाण्डुलिपि की अवस्था- इस पाण्डुलिपि के पत्र अच्छी स्थिति में हैं। पाण्डुलिपि का रंग लाल हो गया है।
- पत्र की लम्बाई एवं चौडाई- 21.6X 17
- पत्र पर रेखाओं की संख्या- एक पृष्ठ दो भागों में विभक्त है एवं प्रत्येक पृष्ठ पर 14 रेखाएँ प्राप्त होती है।
- अक्षरों की संख्या- सामान्यतः अनिश्चित है।

- हाशिया- पृष्ठ के चारों ओर हाशिए दिया गया है एवं किसी भी पृष्ठ पर पृष्ठक्रमांक नहीं दिया गया है। हाशिये के लिए लाल स्याही का प्रयोग किया गया है तथा मंगलाचरण एवं ग्रन्थ के प्रारम्भ के लिए भी लाल स्याही का प्रयोग किया गया है।
- पाण्डुलिपि के सन्दर्भ में विशेष- इस पाण्डुलिपि में लाल स्याही से मंगलाचरण किया गया है। इस ग्रन्थ में हाशिये में भी लिखा गया है। इस ग्रन्थ का उपजीव्य ग्रन्थ लिंगपुराण है।

- पाण्डुलिपि का मंगलाचरण-

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

अथ जीवितक्रिया लिख्यते।। जगदिदं सकलं यद विद्यया महमरीचि च यो वदबोधितं यदनुसस्मृति हेतुकविद्यया गुणभुजं अवदृच्छति तन्नुमः॥१॥ संवादमुच्यते खगेश्वरयोर्विलोक्य पारस्करप्रभृतिः सूत्रकृतं मत्तं च संतन्यते स्मृतिनिबंधकृतैकरत्नस्वोर्द्धं क्रियास्वकरकृत्य महार्णवोयम्॥२॥ सतीह यद्यपि विपश्चिदनेकबुद्धिभावप्रकाशनपराः शत्तसोनिबंधाः वागर्पि प्रतप्रवचनं प्रथानं तथा च सर्वं करोति तदुपासनबद्धयत्नः॥३॥ प्रथमोत्र समुल्लासो गायत्र्यादि जपाकृयः विधिः नारायणबलेरपरो बैह्मवादिकः॥४॥ श्राद्धीय वर्गस्तार्तीयस्तुरीयोदानसंज्ञकः सर्वान्नश्राद्धनामात्तु पंचमःसमुदाहृत्तः॥५॥

- पाण्डुलिपि की पुष्पिका-

अथ जीवश्राद्धोत्तरकालीनविशेषः हेमाद्रि धृत्तलिंगपुराणाल्लिख्यते जीवश्राद्धं मृत्युकाले कर्त्तव्यं तदुत्तरं जीवो जीवन्मुक्तः नित्यनैमित्तककर्माकरणेन प्रत्यवायः तस्मिन्मत्ते पुत्रादीनामुक्तं पूर्वमध्यक्रियाकरणकरणयोर्विकल्पः सपिंडजननमरणे तस्य सद्यशौचं पुत्रे जाते जातकर्मादिकं तेन सर्वं कर्त्तव्यं पुत्रस्तत्सकाशात् जातो ब्रह्मविद्भवेत् कन्याचेज्जाता ता सुद्धता भवन्ति मरणे दहना हृदनयोः विकल्पः काम्यकर्मणि त्वा गण्वकार्यः बौधाय नीकृत्यद शाहाशौचमुक्तं तद्विषयश्चिंत्यः करणयोरनुष्ठानं कल्पतरु बाधपरिग्रहात् न बिम्बे चिंततयोः प्रयोगो हेमाद्रि तोरवगंतव्यं इत्यलम् हेमाद्रि धृत् लिंगपुराणात् बोधाय

नीययम्॥ इति जीवितक्रियापद्धती संपूर्णम् श्री।। लिपिकृतं बुलाकीरामेण कपिस्थलमध्ये मितिश्रावणे मासे कृष्णपक्षे १० रविदिने संवत् १९६७ ॥

जीवितक्रिया पद्धति का चित्र

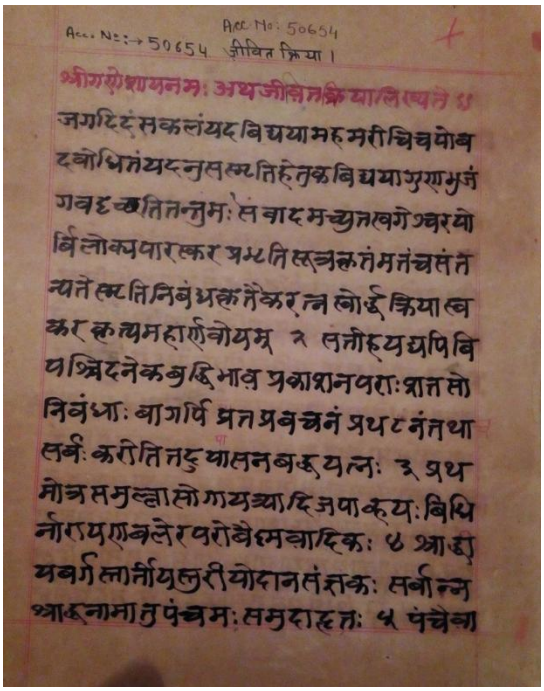

7. **शितिकण्ठविबोध पाण्डुलिपि का सामान्य परिचय-**

- पाण्डुलिपि का रचयिता- अज्ञात।
- पाण्डुलिपि क्रमांक- 50407
- बण्ड़ल संख्या-143
- रैक संख्या-14
- पाण्डुलिपि का रचनाकाल- निर्धारित किया नहीं जा सकता।
- पाण्डुलिपि का प्राप्ति स्थान- पा.मि., ज.ल, ने.पु., कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय कुरुक्षेत्र।
- भाषा- संस्कृत।

- लिपि- देवनागरी।
- कुल पत्र संख्या-11
- पत्र सामग्री- कागज एवं काली स्याही।
- पाण्डुलिपि की अवस्था- इस पाण्डुलिपि के पत्रों की अवस्था अच्छी है।
- पाण्डुलिपि की लम्बाई एवं चौडाई- 33.1 X 14.9
- पृष्ठ पर रेखाओं की संख्या- एक पृष्ठ दो भागों में विभक्त है एवं प्रत्येक पृष्ठ पर 13 एवं अन्तिम पृष्ठ पर 5 रेखाएँ प्राप्त होती है।
- अक्षरों की संख्या-अक्षरों की संख्या अनिश्चित है।
- हाशिया- इस ग्रन्थ के किसी भी पृष्ठ पर हाशिया नहीं दिया गया है। इस ग्रन्थ के बाएँ एवं दाएँ ओर पृष्ठक्रमांक दिया गया है।
- पाण्डुलिपि के सन्दर्भ में विशेष- यह पाण्डुलिपि अपूर्ण है। यह ग्रन्थ काव्यप्रकाश से सम्बन्धित है। शोधार्थी को केवल प्रथम उल्लास पर ही टीका प्राप्त हुई है। इसमें ग्रन्थकार ने हाशिये में भी कहीं-कहीं लिखा है।
- पाण्डुलिपि का मंगलाचरण-

॥ श्रीगणेशाय नमः॥ ॥श्रीहनूमते नमः॥

प्रणम्यं शारदां काव्यं प्रकाशो बोधसिद्धये पदार्थविवृत्तिद्वाराशितिकण्ठस्य दृश्यते।। अत्र शिवशक्ति

सदाशिवेश्वरशुद्धविद्यामायाकलाविद्यारागकालनियतिपुरुषप्रकृतिमनोहंकारश्रोत्रत्वक्च क्षुःजिह्वाघ्राणवाक्पाणिपादपायूपस्थशब्दस्पर्शरूपरसगंधाकाशवायुवह्निसलिलभूमयः षडत्रिंशत्तत्त्वानि वेद्यभूमिपतितानि संविद्रूपं तु सप्तत्रिंशं तदप्युपदेशादौ वेद्यमुचारेणेति सर्वथा पदवेद्यं तदष्टावत्रिंशं तान्येतानि सर्वतत्वानि सर्वत्र स्थितानि तथाहि देहे यत्

कठिनं तद्वयं १. यद्रूपं तदापः २. यदुष्णं तत्तेजः ३. यत् स्यंदनं तत्मरुत् ४. यत्सावकाशं तन्नभः ५.

- पाण्डुलिपि की पुष्पिका-

विनिर्गतं मानदमात्ममंदिराद्भ्रवत्युपश्रुत्य दृच्छयापि यं ससंभ्रमेद्रंद्रुत्तपाति अर्गला निमीलिताक्षीव भियामरावती इति काव्यप्रकाशे प्रथमोल्लासः कमेणशब्दार्थयोः स्वरुपमाह स्याद्वाचको लाक्षणिकः शब्दोव्यंजकस्तथा अत्रेति काव्ये तेषां स्वरूपं वक्ष्यते॥

प्राधान्यमित्यर्थचित्रदाहरणमिति सिद्धं तथैव कविभावस्य एवालंभनं तद्दीर्यातिशयुद्दीपनम् इति श्री काव्यदर्शने शितिकंठविबोधने काव्योद्देशदर्शनं प्रथमोल्लोसः ॥

अथ काव्यलक्षणोद्दिष्टौ शब्दार्थौ विलक्षणिषुरुल्लासांतरमारभते क्रमेण प्रथमं शब्दस्य ततोऽर्थस्य इत्यर्थः स्वरूपमसाधारणो धर्मः तमाह लक्षणमीत्यर्थः शब्दविभागानंतरमर्थः विभागः अर्थज्ञानानंतरं शब्दलक्षणं सुज्ञेयमिति।। तदनुशब्दानां लक्षणमस्मिन्नेव उल्लासे कथ्यत इत्यर्थः॥ एवं शब्दविभागमुद्दिस्थार्थविभागमुद्दिशति वाच्यादयरिति।। तेषां वाचकादीनामर्था अभिधेयाः मतांतरसिद्धः चतुर्थोपस्तीति तमुपद्दिशति तात्पर्यार्थः इति केषुचित् केषांचिन्मते न पुनः सर्वेषां सर्वत्र तु वाचकः त्रयस्य वाच्यत्रयमित्येव प्रसिद्धिः आकांक्षासमभिव्यादृतपदार्थगोचरजिज्ञासेति कुसुमांजलौ दर्शनात् सहोच्चारितानां बहूनां पदानामन्वयबोधनार्थं अन्योन्यपेक्षाकांक्षा सा च श्रोतुः जिज्ञासारूपाप्रतीतेरपर्यवसानमिति।। यावत् एकबुधविच्छेदेन निरंतरमुच्चारणं संनिधिः योग्यता पदार्थानां परस्परान्वये बाधाभावः एतत् त्रयवशाद् वक्ष्यमाणरूपाणां 'देवदत्त गामानय' इत्यादि वाक्ये गवादीनां सामान्यरूपाणां परस्परं संसर्गे तात्पर्यार्थः विशेषवपुः .....(यह पाण्डुलिपि शोधार्थी को यही तक प्राप्त हुई है)॥

शितिकण्ठविबोध पाण्डुलिपि का चित्र

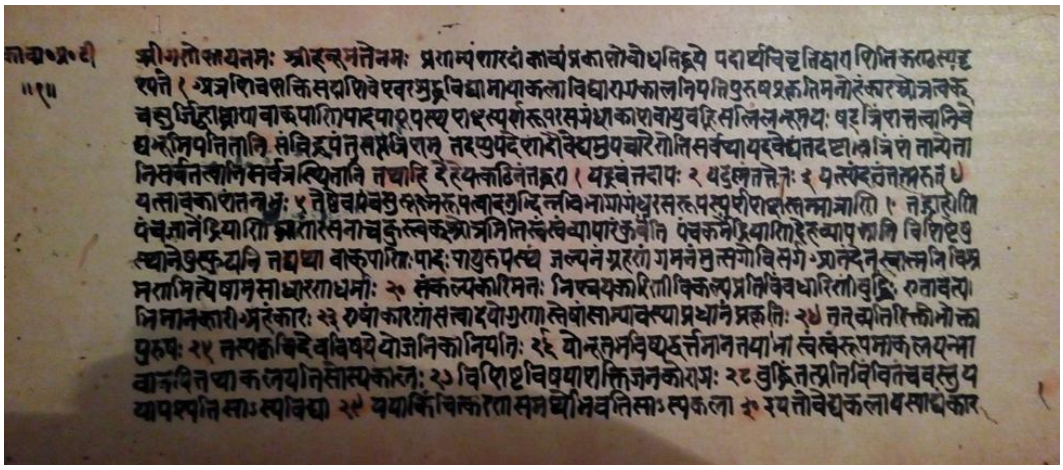

इस प्रकार सर्वेक्षण के दौरान साहित्यशास्त्र की पाण्डुलिपियाँ उपलब्ध हुई। इन पाण्डुलिपियों का सम्पादन करवाना ही संस्कृति का संरक्षण करना है। अतः इनको शोधप्रबन्ध में संकलित करके शोधार्थी ने लघुप्रयास किया।

चतुर्थ अध्याय

4.1 दर्शन का अर्थ एवं परिचय-

भारतीय दर्शन सम्पूर्ण संसार का प्रतिष्ठित दर्शन है, जिसका इतिहास भारतीय वाङ्गमय का आधार स्तम्भ ऋग्वेद से प्रारम्भ होकर वर्तमान समय तक सततरूप से चला आ रहा है। इस दर्शन की चिन्तनधारा जीवन्त एवं गतिशील होने के कारण सामाजिक, धार्मिक एवं दार्शनिक परिवेश के अनुरूप विविध रूपों एवं आयामों में परिवर्तित होती आ रही है।

दर्शन शब्द का अर्थ 'दृश्' धातु से निष्पन्न हुआ है। दर्शन शब्द की व्युत्पत्ति दो प्रकार से की जा सकती है।

- **दृश्यतेऽनेन इति दर्शनम्**[49] अर्थात् जिसके द्वारा तत्त्व का बोध हो या जिसके द्वारा देखा जाए।
- **दृश्यते इति दर्शनम्**[50] अर्थात् जिसका साक्षात्कार हो।

दर्शन शब्द को अर्थ अग्रेंजी भाषा में "फिलॉसफी" कहा जाता है। फिलॉसफी शब्द ग्रीक भाषा के दो शब्द 'फिलॉस्' और 'सोफिया' से बना है जिनका अर्थ है 'प्रेम' और 'विद्या देवी'। इस प्रकार फिलॉसफी का अर्थ हुआ ज्ञान के प्रति अनुराग।[51]

भारतीय दर्शन को दो भागों में विभक्त किया जाता है- आस्तिक दर्शन एवं नास्तिक दर्शन। वेद एवं ईश्वर में विश्वास रखने वाले दर्शन आस्तिक दर्शन हैं और जो वेद एवं ईश्वर में विश्वास नहीं रखते हैं वे नास्तिक दर्शन हैं। भारतीय दर्शन की समायानुसार अनेक शाखाएं एवं प्रशाखाएँ प्रस्फुटित हुई है। मुख्यतः षड् दर्शन आस्तिक एवं तीन दर्शन नास्तिक स्वीकार किए जाते हैं-

---

[49] . *भारतीय दर्शन*, पृ.- 10

[50] . *भारतीय दर्शन*, पृ.- 10

[51] . *भारतीय दर्शन*, पृ.- 32

आस्तिक दर्शन	नास्तिक दर्शन
सांख्य, योग,न्याय, वैशेषिक,पूर्वमींमासा, उत्तरमींमासा(वेदान्त)।	बौद्ध दर्शन, जैन दर्शन, चार्वाक दर्शन।

4.2.1 दर्शन की पाण्डुलिपियाँ-

प्रस्तुत शोधप्रबन्ध में सर्वेक्षण के दौरान दर्शन की अधोलिखित पाण्डुलिपियाँ प्राप्त हुई हैं। जिनका सामान्य विवरण नीचे दिया गया है।

1. **ब्रह्मात्मबोध पाण्डुलिपि का सामान्य परिचय-**

- पाण्डुलिपि का रचयिता- श्री सदानन्द सरस्वती।
- पाण्डुलिपि क्रमांक- D-708
- पाण्डुलिपि का रचनाकाल- निर्धारित नहीं किया जा सकता।
- पाण्डुलिपि का प्राप्ति स्थान- पा.मि., ज.ल, ने.पु., कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय कुरुक्षेत्र।
- भाषा- संस्कृत।
- लिपि- देवनागरी।
- कुल पत्र संख्या-18
- पाण्डुलिपि की अवस्था- इस पाण्डुलिपि के पत्रों की अवस्था अच्छी है।
- पाण्डुलिपि की लम्बाई एवं चौडाई- 27 X 11.2

- पृष्ठ पर रेखाओं की संख्या- एक पृष्ठ दो भागों में विभक्त है एवं प्रत्येक पृष्ठ पर 7 एवं 8 रेखाएँ प्राप्त होती है।

- अक्षरों की संख्या- अक्षरों की संख्या अनिश्चित है।

- हाशिया- इस ग्रन्थ में किसी भी पृष्ठ हाशिया नहीं दिया गया है। पृष्ठ के दाएँ एवं बाएँ ओर पृष्ठक्रमांक दिया गया है।

- पाण्डुलिपि के सन्दर्भ में विशेष- इस ग्रन्थ का प्रथम पृष्ठ दाएँ एवं बाएँ ओर से फटा हुआ है। इसमें ग्रन्थकार ने ऊपर की ओर बारीक अक्षरों में भी लिखा है। इसमें अक्षर के छूट जाने पर `^' चिह्न का प्रयोग किया है। इस ग्रन्थ को पाठक द्वारा आसानी से पढ़ा जा सकता है।

- पाण्डुलिपि का मंगलाचरण-

॥ ऊं तत्ब्रह्मात्मने नमः॥

ऊंतत्सद्ब्रह्मात्मा चेति मंगलत्रिविधवस्त्वात्मकम्॥ सत्यं ज्ञानमनंतं ब्रह्मात्मानंदपरिपूर्णम्॥१॥ शुद्धबुद्धनित्यपरन्निर्विकारं कूटस्थं शिवं वै॥ यत्साक्षादपरोक्षाद् ब्रह्ममयात्मा सर्वं तिरोभाति॥२॥ अपूर्वमनंतरं बाह्यमकार्य्यमेकरसनिरंतरं वै॥ इति परमार्थं कथितं सत्वरजस्तमो गुणात्मकम्॥३॥ आवर्णविक्षेपकक्रियाशक्त्यात्मकमज्ञानम् असीत्॥ ज्ञानबलस्वभावकिञ्चिदाश्रयं चिद्विषयं भवेत्॥४॥ न सन्नासन्नसदन्नभिन्नं नाभिन्नं भिन्नाभिन्नम्॥ न न सावयवं न निर्वयवं न सावयव निर्वयवम्॥५॥ अनिर्वचनीयभावरूपमनाद्यज्ञानं ज्ञानेन नाशम्।। प्रागभावादि शान्तं परमते तद्वज्जीवाः॥६॥ परस्परभेदैशजीवानां भेदः चिदचिद्वै॥ भेदं जडानां हि वै परस्परभेदाः निवर्तन्ते॥७॥

- पाण्डुलिपि की पुष्पिका-

अज्ञानमोहशोककामलोभनामरूपक्रियादयो वै॥ मयि सच्चिदानन्दपूर्णाब्रह्मात्मनि पूर्वमासीदधुना हि॥१०॥ क्व गतोऽहनं ज्ञाने चास्ति भातिप्रियरूपमेकत्व ब्रह्म॥ अनुपश्यत आर्या चोक्ताद्विद्वङ्भिः स्वस्वरूपमनुभवत्॥११॥ शुद्धबुद्धनित्यमुक्तरामकृष्णः वा मनो जनार्दनो हि विबुधा मता सदा च वैभवाम्यहं हरो हरिः शिवोविधीरविः कविः कलिर्मनोमतिः मतिर्भगेश॥ त्वं पदं हि तत्पदं सदाविचारतो भवेच्च्व वाच्यलक्ष्यता तयोः द्वयोर्वाच्यहेयदूरतः च मेयतो मुमुक्षुभिः विवेकिभिः तु लक्ष्यतः परः सदो विभुश्च॥१२॥

पुनरुक्तिः न मंतव्यः सूक्ष्मब्रह्मविचारणे॥ सारग्राहिर्भवेद्ज्ञानी वा चिदोषं चतुष्टयम्॥१३॥ सर्वशास्त्रेषु दोषं वै परस्परं हि दोषतः॥ वेदानां दोषसाहित्यं तं मुमुक्षुः समाश्रयेत्॥१४॥ प्रज्ञानं ब्रह्मकूटस्थं ब्रह्माहमस्मि बोधतः॥ अयमात्मा परंब्रह्मतत्वमसि विचारतः॥१५॥ इति श्री सच्चिदानन्दसरस्वतीविरचितमार्या ब्रह्मात्मबोधप्रकरणं समाप्तम्॥ ऊं तत्सद्ब्रह्मात्म स्मरणं कुर्य्यात्॥

ब्रह्मात्मबोध पाण्डुलिपि का चित्र

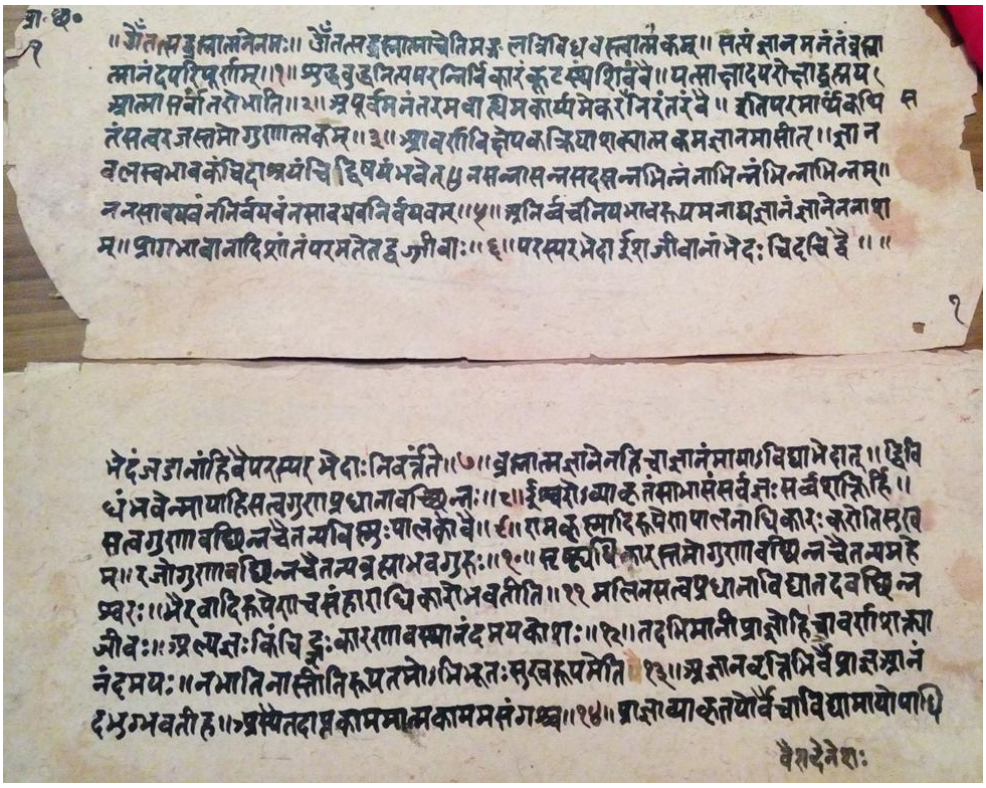

2. **माथुरी पाण्डुलिपि का सामान्य विवरण-**

- पाण्डुलिपि प्राप्ति स्थान- पाण्डुलिपि मिशन, जवाहर लाल नेहरु पुस्तकालय, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय कुरुक्षेत्र।
- पाण्डुलिपि का रचयिता- कुबेर दत्त।
- पाण्डुलिपि क्रमांक- 50985
- रैक संख्या-17
- पत्र सामग्री- कागज, काली स्याही।
- पाण्डुलिपि का रचनाकाल- निर्धारित नहीं किया जा सकता।
- भाषा- संस्कृत।
- लिपि- देवनागरी।
- पत्र संख्या- 08
- पाण्डुलिपि की अवस्था- इस पाण्डुलिपि के पत्र अच्छी स्थिति में हैं।
- पत्र की लम्बाई एवं चौडाई- 54.4 X 11.6
- पत्र पर रेखाओं की संख्या- एक पृष्ठ दो भागों में विभक्त है एवं प्रत्येक पृष्ठ पर 09 रेखाएँ प्राप्त होती है।
- अक्षरों की संख्या- सामान्यतः अनिश्चित है।
- हाशिया- इस ग्रन्थ के किसी भी पृष्ठ पर हाशिया नहीं दिया गया है। इसमें दाएँ ओर बीच में पृष्ठक्रमांक दिया गया है।
- पाण्डुलिपि के सन्दर्भ में विशेष- इस ग्रन्थ का प्रथम पृष्ठ बीच में से थोड़ा फटा हुआ है।

- पाण्डुलिपि का मंगलाचरण-

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

स व्याप्य वृर्त्ति साध्यकसद्धे ताविकपि संयोगीगणादित्यादाव व्याप्तिविरहाद्विर्त्तिमद्धेताव बाह्यर्थं सत्पदम्॥ अथैवमपि कपिसंयोगाभाववान् गुणत्वादित्यादावव्याप्तिः न संभवति इति कथमव्याप्य वृत्ति साध्यकसद्धे तु वद्देदेनाव्याप्तिः॥ न च व्याप्यसाध्ये यत्रेति व्युत्पत्या तत्र सनवत् न मानो हेतुस्तत्राव्याप्तिरिति नासं कतिविति वाच्यमव्याप्य वृत्तिसाध्यके हेतुरिति समासेनैव गगर्णेव हेतुनिवारणे सत्यद् वै यद्यापत्तेः अपि च संयोगाभावसाध्यके द्रव्यत्वादि हेता च व्याप्ति संभवेपि द्वितीय लक्षणे तद्वारणा योगात्॥ तस्मात् केवलान्वयिनि वा वाप्य वृत्तिसाध्यकसद् हेतुत्वाव छेदेन नाव्याप्ति वारणाय द्वितीयलक्षणमिति युक्तमुत्पश्यामः॥ १॥

- पाण्डुलिपि की पुष्पिका-

न च सर्वत्रासम्भवस्येव संभवे अव्याप्तिदानमसंगतमिति वाच्यं शद्धवान् गगणत्वादित्यत्र लक्षणगमनात् तत्र साध्यवदत्यन्नाभावस्य केवलान्वयि तया तदवछिन्नाभावाप्रसिद्धेः स्वभिन्नभेदस्य अपि स्वस्वरुपत्वा नभ्युपगमात् तस्य स्ववृत्य साधारणस्वरूपत्वादि ध्येयम्॥साध्यवत्वञ्च साध्यतावच्छेदकसम्बन्धेन बोध्यं तेन साध्यवद्धेदाधिकरणे हेतो वृत्तावपि नाव्याप्तिरिति मथुरानाथः॥ न च सम्बन्धान्तरेण साध्यवद्धेदमादाय असंभवैव सम्भवतीति वाच्यं तादात्म्येन गगंणसाध्यके विशेषरुपेण विशेषरुपेण संसर्गत्वानभ्युपगमे समवायेन प्रमेयसाध्यके घटत्वादौव लक्षणगमनात् तत्र केनापि सम्बन्धेन सध्यवद्धेदस्य हेत्वधिकरणे सत्वाद्विषयित्वादेश्च संसर्गत्वे मानात्॥ प्रवृत्तिर्गगणादेर्लक्षत्वे तन्नासम्भवसंकार्पिति ध्येयम्॥समाप्ता माथुरी॥रामः॥हरिः॥

माथुरी पाण्डुलिपि का चित्र

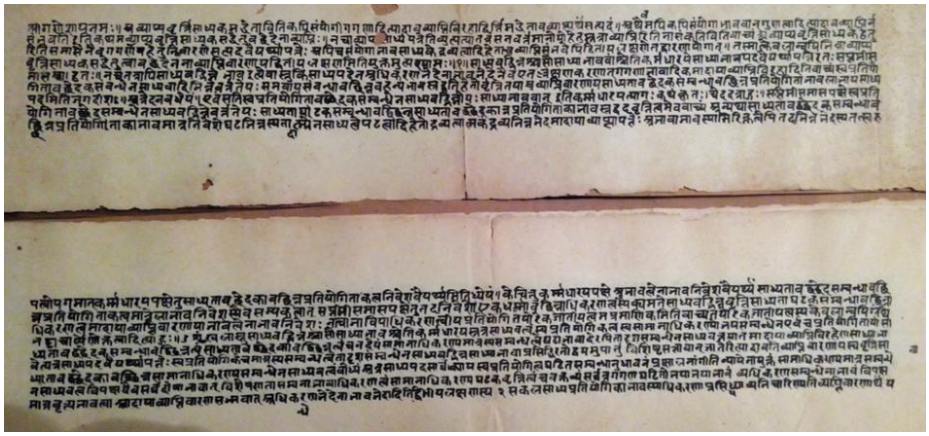

4.3.3.**विविध विषयक पाण्डुलिपियाँ-** प्रस्तुत शोधप्रबन्ध में स्तोत्र, पूजा विधि, विभिन्न प्रकार की गीता आदि पाण्डुलिपियों का सर्वेक्षण करके अधोलिखित पाण्डुलिपियों का संकलन किया है-

3. **उपदेशविषयानन्द पाण्डुलिपि का सामान्य विवरण-**

- पाण्डुलिपि प्राप्ति स्थान- धरोहर संग्रहालय, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय कुरुक्षेत्र।
- पाण्डुलिपि का रचयिता- श्री रामकृष्ण।
- पाण्डुलिपि क्रमांक- 208
- पत्र सामग्री- कागज, काली स्याही।
- पाण्डुलिपि का रचनाकाल- निर्धारित नहीं किया जा सकता, क्योंकि पुष्पिका में रचनाकाल नहीं दिया गया है।
- भाषा- संस्कृत।
- लिपि- देवनागरी।
- पत्र संख्या- 44

- पाण्डुलिपि की अवस्था-इस पाण्डुलिपि के पत्र अच्छी स्थिति में हैं। पाण्डुलिपि के पत्र नमी के कारण किनारों से काले दिखाई से रहे हैं परन्तु फिर भी पत्र पर लिखे शब्दों को समझा जा सकता है। इस ग्रन्थ का प्रथम पृष्ठ किनारों से पीला किया गया है।

- पत्र की लम्बाई एवं चौडाई- 37 X 14

- पत्र पर रेखाओं की संख्या- एक पृष्ठ दो भागों में विभक्त है एवं प्रत्येक पृष्ठ पर 11 एवं अन्तिम पृष्ठ पर 12 रेखाएँ प्राप्त होती है।

- अक्षरों की संख्या- सामान्यतः अनिश्चित है।

- हाशिया- पृष्ठ के दोनों ओर हाशिया दिया गया है एवं पृष्ठ पर दोनों ओर पृष्ठक्रमांक दिया गया है। पृष्ठ के दाएँ हाशिये पर 'राम' लिखा गया है।

- पाण्डुलिपि के सन्दर्भ में विशेष- इस ग्रन्थ का प्रथम पृष्ठ चारों ओर से पीला किया गया है तथा बीच-बीच में भी कई पृष्ठ पीले किए गए हैं। इसमें गलत अक्षर को मिटाने ले लिए पीला किया गया है। इसमें हाशिये में भी लिखा गया है।

- पाण्डुलिपि का मंगलाचरण-

॥ श्री गुरवे नमः ॥

नत्वा श्रीभारतीतीर्थविद्यारण्य मुनीश्वरौ ब्रह्मानन्दाभिद्रं ग्रंथं व्याकुर्वे बोधसिद्धये ।।१॥ चिकीर्षितस्य ग्रंथस्य निष्यन्दूहपरिपूरणाय परिपंथिकल्मषनिवृत्तये अभिमतदेवता तत्त्वानुसंधानलक्षणं मंगलमाचरन् श्रोतृप्रवृत्तिसिद्धये सप्रयोजनमभिधेयमाविः कुर्वन् ग्रंथारंभं प्रतिजानीते ब्रह्मानंदेति॥ सविशेषब्रह्मरूपाणां देवतानां तत्त्वस्य निर्विशेषब्रह्मरूपत्वाभिधानाद् ब्रह्मणः चानंदो ब्रह्मेत्यादि शक्तिभिरानंदरूपताभिधानात् ब्रह्मानंदमित्यानंदरूपस्य ब्रह्मणो वाचकशब्दप्रयोगेण यद्विमनसाध्यायति तद्वा च वदतीति शक्तिप्रोक्तन्यायेन ब्रह्मानुसंधानलक्षणं मंगलाचरणं सिद्धं ब्रह्मणश्च

सर्ववेदांतप्रतिपाद्यत्वात् तत् करणरूपस्य अस्य ग्रंथस्यापि तदेव विषय इति ब्रह्मशब्दप्रयोगेण विषयः च सूचितः॥ऐहिकेति॥

ब्रह्मानंदं प्रवक्ष्यामि ज्ञाते तस्मिन्न शेषतः ॥ ऐहिकामुष्मिकानर्ष्यव्रातं हित्वा सुखायते २ निर्विशेषं परं ब्रह्मसाक्षात् कर्त्तु मुनीश्वराः पेमंदास्ते नु कंप्यंते सविशेषनिरुपणैः ॥२॥

॥ राम राम॥ ॥राम राम॥ ॥राम राम॥

- पाण्डुलिपि की पुष्पिका-

अयं ध्यानावांतरभेदः किं नेत्याह नाध्यानमिति । तर्हि किमेतदित्याशंकाह ब्रह्मविधेति॥ इयं ब्रह्मविद्याकष्यमुत्पन्नेत्याशंकाह व्यानेनेति॥३०॥ अस्याविद्यात्वे हेतुमाह– विद्यायामिति ॥३१॥ भेदकोपाधिवर्जनादित्युक्तं तानेवभेदं कोपाधीनाहाशांतेति। एतेषां परिहारः केन उपायेन इत्याशंकाह- योगादिति ॥३२॥ फलितामाह ॥ निरुपाधीतिः त्रिपुटीभावाऽभावाद्भूमानंद इत्युच्यतइत्यर्थः ॥३३॥ ग्रंथमुपसंहरति ब्रह्मानंदेति ॥३४॥ ॥३५॥ इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यं श्रीभारती तीर्थविद्यारण्य मुनिकिंरेण श्रीरामकृष्णाख्यविदुषो विरचितमुपदेशग्रंथविषयानंदः पंचमोध्यायः॥

उपदेशविषयानन्द पाण्डुलिपि का चित्र

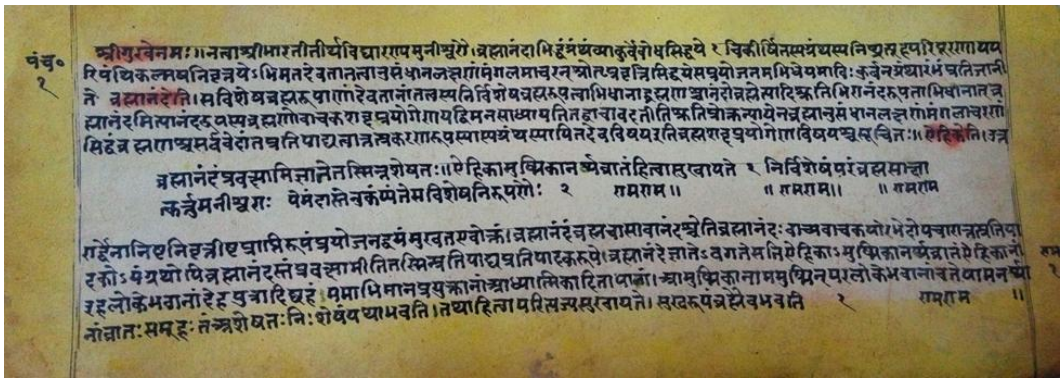

4. **सौभाग्यार्चन पाण्डुलिपि का सामान्य विवरण-**

- पाण्डुलिपि प्राप्ति स्थान- पाण्डुलिपि मिशन, जवाहर लाल नेहरु पुस्तकालय, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय कुरुक्षेत्र।

- पाण्डुलिपि का रचयिता- कुबेर दत्त।
- पाण्डुलिपि क्रमांक- 50105
- बण्ड़ल संख्या- 96
- रैक संख्या-10
- पत्र सामग्री- कागज, काली स्याही।
- पाण्डुलिपि का रचनाकाल- निर्धारित नहीं किया जा सकता है क्योंकि पुष्पिका में नहीं दिया गया है।
- भाषा- संस्कृत।
- लिपि- देवनागरी।
- पत्र संख्या- 30
- पाण्डुलिपि की अवस्था- इस पाण्डुलिपि के पत्र अच्छी स्थिति में हैं। पाण्डुलिपि के पृष्ठ किनारों से थोडे-थोडे फटे हुए हैं।
- पत्र की लम्बाई एवं चौडाई- 26.68 X 12.6
- पत्र पर रेखाओं की संख्या- एक पृष्ठ दो भागों में विभक्त है एवं प्रत्येक पृष्ठ पर 11, 12 एवं 13 रेखाएँ प्राप्त होती है।
- अक्षरों की संख्या- सामान्यतः अनिश्चित है।
- हाशिया- पृष्ठ के हाशिए में बाएँ एवं दाएँ दोनों ओर ऊपर एवं नीचे पृष्ठक्रमांक दिया गया है। हाशिये के लिए लाल स्याही का प्रयोग किया गया है एवं हाशिए में तीन रेखाएँ दोनों ओर खींची गई है। पृष्ठ के एक तरफ दाएं ओर ऊपर 'शिवाय नमः' लिखा हुआ है।

- पाण्डुलिपि के सन्दर्भ में विशेष- इस ग्रन्थ में हाशिया के बाहर भी लिखा गया है।इसमें दाएँ हाशिये में 'शिवाय नमः' लिखा गया है। इस पाण्डुलिपि में गलत शब्द या अक्षर को मिटाने के लिए पीला किया गया है।

- पाण्डुलिपि का मंगलाचरण-

॥ श्री गणेशाय नमः ॥ ॥ श्रीविमर्शानन्दाय नमः ॥

श्रीकुच्यां भोजयुगजे कस्तुरीपंकसकुले।। नखैर्विलिखितं चित्रं विलासिंहमहं भजे॥ श्री शर्वाणी शंशिशे व्यासे श्री करार्चितमन्वहम्॥ श्री चक्रमयचिद्गुपवंदे त्रैकोलमन्दिरे॥२॥ वांमाचारपरे वामे कामना हि मुनिस्तुते।। वरदे सर्वरुपिणैः वन्दे त्रैकौलमन्दिरे।। वसु प्रदेव सरोहे वसुर्वसुमये शिवे।। वसुरष्टमये देवि वंदं त्रैलोकमन्दिरे॥४॥

इश्वर उवाच ॥ अस्ति गुह्यतमं देवी कौलाचारः कुलेश्वरि।। पूजासौभाग्यनान्मायात्रिषु लोकेषु दुर्लभा॥८॥

- पाण्डुलिपि का पुष्पिका-

कृत्वा चोदपादये छीक्षां दृष्टवा चऽऽनंददायकः कृत्वा दारी ह्यरोगी च भ्रांतचित्तो भवे फ्रवम्॥१६॥ पंचेन्द्रियसमायुक्तं देहीनां देहमेव च तद् व्यापारं च सत्यत्कार्चनमं भुवि दुर्लभम्॥१७॥ भेदाद्भेदो भ्रमं चक्रकां तासु कनकेषु च तासु तेषु सौभाग्यार्चनं समाचरेत्॥१८॥ धतुरभक्षणाद् देवि उन्मादोद्भवमादरात् सुंदरी दर्शनाद्देविना ना भ्रमसमाकुलः॥१९॥ नारीं दृष्टवा प्रगिरिजे न भवे चितः च सौभाग्यार्चनाद् विकृत्वा सिद्दिं वाप्नुयात्॥२०॥ स्ववसिकृत्य यो मत्यं इन्द्रियाण्यापि सर्वशः न कुर्यान्नग्नपूजां च तस्य सिद्दिं वाप्नुयात् धिः॥२२॥ इति श्री गर्भकौलागमे रतिरहस्यसारे सौभाग्यार्चनं नाम चतुर्विंशतितमः पटलः॥

श्रावणे धवले पक्षे भूतचन्द्रं समन्वितं तदा कुबेरदत्तेन लिखितं गर्भकौलिकम्॥१॥नपविक्रमके काले तदातीतेश्व वेदके वसुचंद्रमिते मुख्यं विहीतं

वीरवह्न्यभम्॥ २॥ खेटकस्य पुरश्र्य यदि वरणीयाः प्रकारिता तदा तत्सकेनैव शिवोक्तं लिखितं मया॥ ३॥

अन्तिम पृष्ठ के पीछे- ॥निष्कलंकानंदनाथाय नमः भवतु तस्मै॥

॥इदं पुस्तकं श्री बालब्रह्मानंदनाथास्वामिनः॥

॥श्री अखंडपरिपूर्णश्रीमहात्रिपुरसुंदर्यैः॥

सौभाग्यार्चन पाण्डुलिपि का चित्र

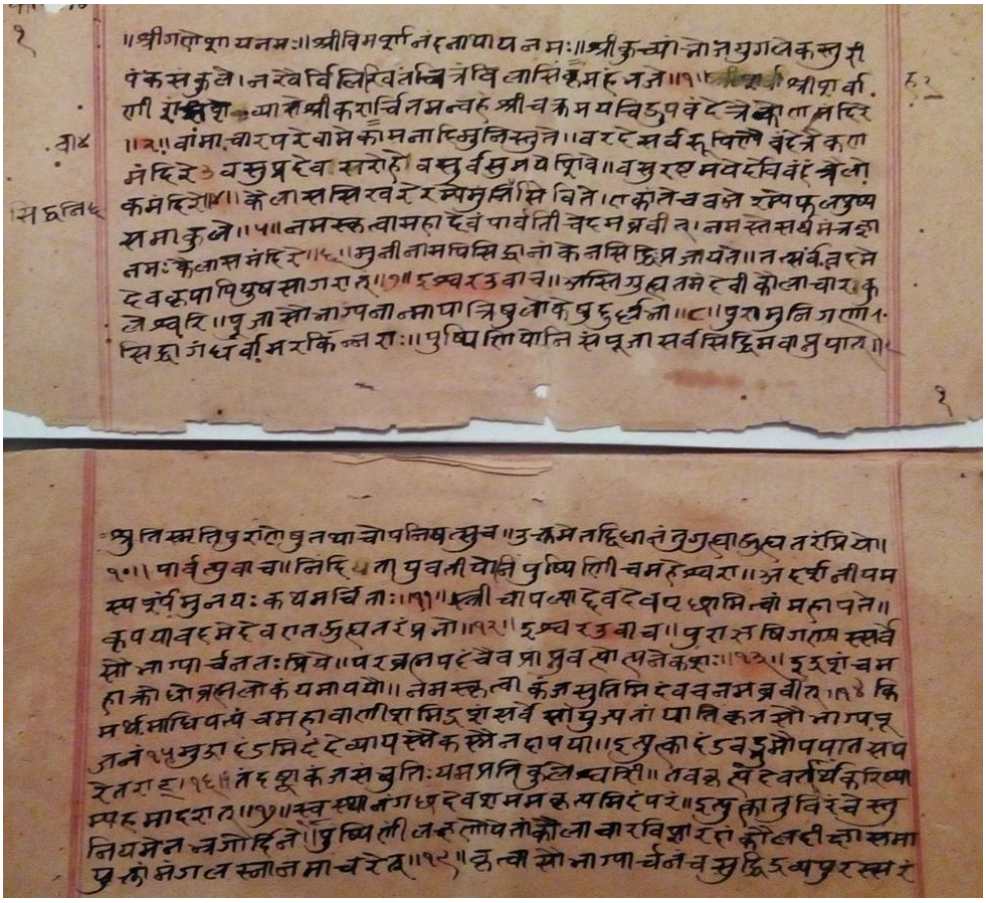

5. **कुमारीपूजनविधि पाण्डुलिपि का सामान्य विवरण-**

- पाण्डुलिपि प्राप्ति स्थान- पाण्डुलिपि मिशन, जवाहर लाल नेहरु पुस्तकालय, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय कुरुक्षेत्र।
- पाण्डुलिपि का रचयिता- अज्ञात।

- पाण्डुलिपि क्रमांक- 50726
- बण्ड़ल संख्या- अप्राप्त।
- रैक संख्या- अप्राप्त।
- पत्र सामग्री- कागज, काली स्याही।
- पाण्डुलिपि का रचनाकाल- निर्धारित नहीं किया जा सकता,क्योंकि पुष्पिका में समय नहीं दिया गया है।
- भाषा- संस्कृत।
- लिपि- देवनागरी।
- पत्र संख्या- 02
- पाण्डुलिपि की अवस्था- इस पाण्डुलिपि के पत्र अच्छी स्थिति में हैं।
- पत्र की लम्बाई एवं चौडाई- अप्राप्त।
- पत्र पर रेखाओं की संख्या- इस ग्रन्थ के पृष्ठ दो भागों में विभक्त हैं एवं प्रत्येक पृष्ठ पर 12 एवं अन्तिम पृष्ठ पर 08 रेखाएँ प्राप्त होती हैं।
- अक्षरों की संख्या- सामान्यतः अनिश्चित है।
- हाशिया- पृष्ठ के दोनों ओर हाशिया दिया गया है एवं पृष्ठ पर दाएँ ओर पृष्ठक्रमांक दिया गया है।
- पाण्डुलिपि के सन्दर्भ में विशेष- इस पाण्डुलिपि में हाशिया में भी लिखा गया है।

- पाण्डुलिपि का मंगलाचरण-

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ कुमारीपूजनविधिमाह तत्र ज्ञानार्णवे होमादिकन्तु सकलं कुमारीपूजनं विना परिपूर्णफलन्नैव सफलं पूजनाद्भवेत्॥१॥ कुमारीपूजनाद्देवि पूजाकोटिफलं लभेत् पुष्पङ्कुमार्यैः यद्दत्तन्तन्मेरु सह शम्भवेत्॥२॥ कुमारीभोजिता येन त्रैलोक्यन्ते न भोजितं कुमार्यै यज्जलं दत्तं तज्जलं सागरो यमम् ॥३॥

- पाण्डुलिपि की पुष्पिका-

ततो भुक्तवत्यां तस्यां तस्यै करक्षालनं करोति गरुडषा चमनानि दत्त्वा सकर्पूरं तांबूलं समर्प्यारार्त्तिकं कृत्वा क्षत्रचामरादि राजोपचारैराध्य यथा शक्तिदक्षिणं दत्वा प्रणम्य विसृजेदित्ति यथा अत्र पूज्यापूज्यकुमारीलक्षणानि तत्रादौ पूज्यालक्षणनिस्कांदे अरोगिणीसु पुष्टांगीसु रुपां व्रणवर्जितामेकवंशः सुलक्षणमिति॥

कुमारीपूजन विधि पाण्डुलिपि का चित्र

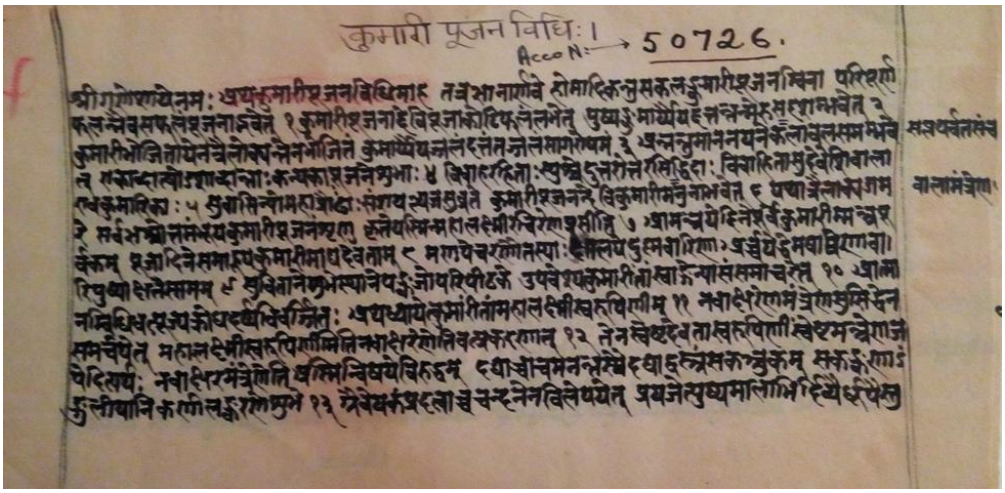

6. **दुर्गादीप दान विधि का सामान्य विवरण-**

- पाण्डुलिपि प्राप्ति स्थान- पाण्डुलिपि मिशन, जवाहर लाल नेहरु पुस्तकालय, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय कुरुक्षेत्र।

- पाण्डुलिपि का रचयिता- अज्ञात।
- पाण्डुलिपि क्रमांक- 50727
- बण्ड़ल संख्या- अप्राप्त।
- रैक संख्या- अप्राप्त।
- पत्र सामग्री- कागज, काली स्याही।
- पाण्डुलिपि का रचनाकाल- निर्धारित नहीं किया जा सकता है क्योंकि पुष्पिका में नहीं दिया गया है।
- भाषा- संस्कृत।
- लिपि- देवनागरी।
- पत्र संख्या- 02
- पाण्डुलिपि की अवस्था- इस पाण्डुलिपि के पत्र अच्छी स्थिति में हैं।
- पत्र की लम्बाई एवं चौडाई- अप्राप्त।
- पत्र पर रेखाओं की संख्या- एक पृष्ठ दो भागों में विभक्त है एवं प्रत्येक पृष्ठ पर 10 एवं अन्तिम पृष्ठ पर 09 रेखाएँ प्राप्त होती है।
- अक्षरों की संख्या- सामान्यतः अनिश्चित है।
- हाशिया- पृष्ठ को दो भागों में विभक्त किया गया है। पृष्ठ के दाएँ एवं बाएँ ओर हाशिया दिया गया है तथा दाएँ ओर नीचे पृष्ठांक लिखा गया है। हाशिये के लिए काली स्याही का प्रयोग किया गया है।
- पाण्डुलिपि का मंगलाचरण-

॥श्रीगणेशाय नमः॥

अथ दुर्गादीपदानविधिः देव्युवाच देवदेवजगन्नाथभक्तानुग्रहकारकप्रसन्नो यदि देवेश दुर्गादीपविधिं वद॥१॥ दीपभेदोश्च विविधान्वर्त्ति भेदास्तथैव च मन्त्रभेदां स्थानभेदान्यात्र भेदास्तथैव च ॥२॥ वक्तव्यं चापि देवेशमानभाज्यं च भोपते पात्रमानं च शकुनं षडकर्माणि मे वद ॥३॥ ईश्वर उवाच साधुसाधुमहाशसे भक्तानां हितकाम्यया यन्न कस्यचिद् आख्यातं तद्वक्ष्यामि श्रृणु प्रिये ॥४॥

पाण्डुलिपि की पुष्पिका-

तारां वाणीं तथा मायां कामबीजमनुस्मरेत् चामुण्डे चेत्यनुच्चर्य्यि मन्दीयं पुनरुचरेत् गृहयुग्मपदं पश्चान्मम कार्याणि साधय साधयेति समुचार्य चामुण्डे लज्जयायुत्तं फट् स्वाहेति समाख्यातो चतुस्त्रिंशतिवर्णकः स्नेहादुक्तो मया देवि सर्वतः येषु गोपितः प्रकाशं ओम् रोहीं ल्कीं चामुण्डे इमं दीपं गृहम्ममकार्याणि साधय।। चामुण्डे हींक स्वाहा शुद्धायां भुवि गोमयेन लिपिते कन्याकरै प्रोक्षिते तोयेनाथ कुशेन कोणतृतयं तद्धृक्तद्रव्यैः लिखेत् प्रोक्तं दीपमलं प्रधार्य्य विदुषा संकल्पन्यासादिकं ध्यानमन्त्रसमन्वितं विधिगतं वर्त्तीस्ततो ज्वालयेत् अष्टोत्तरशतं मंत्रं जपेदेकाग्रमानसः दिनत्रयं कर्त्तव्यं देवागारे विचक्षणैः गुरुं लघुं समालोक्य कार्यं तद्वत्प्रकल्पयेत् गुरो राज्ञां पुरस्कृत्य नान्यथा।।सिद्दिदायिनी इति दुर्गादीपदानविधिः॥ ॥शुभमस्तु ॥ श्रीरस्तु ॥ अविघ्नमस्तु ॥ शमस्तु॥ शिवायै नमः॥

दुर्गादीपदानविधि पाण्डुलिपि का चित्र

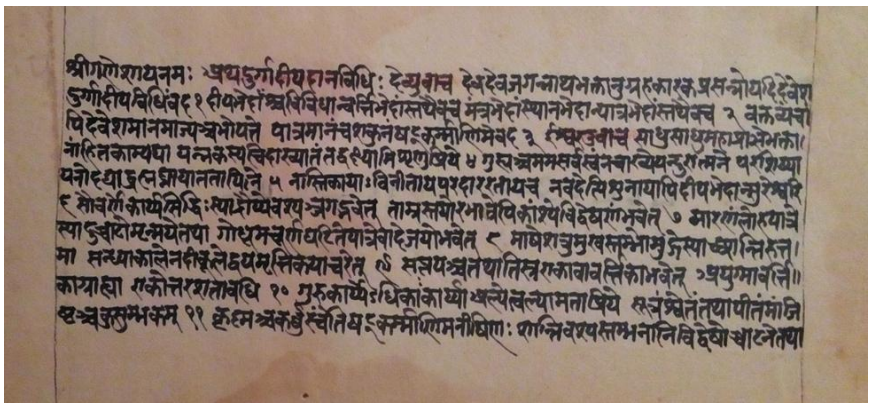

7. **राजनीतिशास्त्र पाण्डुलिपि का सामान्य विवरण-**

- पाण्डुलिपि का रचयिता- वृद्ध चाणक्य।
- पाण्डुलिपि क्रमांक- 50932
- बण्ड़ल संख्या-179
- रैक संख्या-17
- पाण्डुलिपि का रचनाकाल- संवत् 1749, पुष्पिका के आधार पर।
- पाण्डुलिपि का प्राप्ति स्थान- पा.मि., ज.ल, ने.पु., कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय कुरुक्षेत्र।
- भाषा- संस्कृत।
- लिपि- देवनागरी।
- पत्र सामग्री- कागज, काली एवं लाल स्याही।
- कुल पत्र संख्या-10
- पाण्डुलिपि की अवस्था- इस पाण्डुलिपि के पत्रों की अवस्था अच्छी है।
- पाण्डुलिपि की लम्बाई एवं चौडाई- 32.3 X 14.6
- पृष्ठ पर रेखाओं की संख्या- एक पृष्ठ दो भागों में विभक्त है एवं प्रत्येक पृष्ठ पर 13 एवं अन्तिम पृष्ठ पर 11 रेखाएँ प्राप्त होती है।
- अक्षरों की संख्या- अक्षरों की संख्या अनिश्चित है।
- हाशिया- इस पाण्डुलिपि के पृष्ठ पर दाएँ और बाएँ दोनों ओर लाल स्याही से दो-दो रेखाएँ हाशिये के लगाई गई है तथा लाल स्याही से ही पृष्ठक्रमांक लिखा गया है।

- पाण्डुलिपि के सन्दर्भ में विशेष- इस पाण्डुलिपि में काली एवं लाल स्याही का प्रयोग किया गया है। इस ग्रन्थ का मंगलाचरण लाल स्याही से लिखा गया है। इस ग्रन्थ के पृष्ठ हल्के लाल हो गए हैं तथा पत्र मोडने पर टूट रहा है।

- पाण्डुलिपि का मंगलाचरण-

॥ ऊं स्वस्ति श्री गणेशाय नमः॥ ॥ श्री सारस्वत्यै नमः ॥

प्रणम्य शंकरं देवं प्रणामं च जगद्गुरुम्॥ विष्णु प्रणम्य शिरसा वक्षामि शास्त्रमुत्तमम्॥१॥ चाणक्येन स्वयं प्रोक्तं नीतिशास्त्रसमुच्चयम्॥ तदहं संप्रवक्षामि नराणां बुद्धिवर्द्धनम्॥२॥ अतोऽर्थं पठ्यते सम्यक्लोके कीर्तिश्च जायते॥ कीर्तिमान् पूज्यते लोकेश्चेहमानवः॥३॥ वलीपलितकायोपि कर्त्तव्याः श्रुतिसंग्रहैः॥ न तत्र धनिनो यांति यत्र यांति वदुक्ताः॥४॥ शक्ता धर्मं विजानाति शक्ता त्यजति दुर्मतिम्।। शक्ता ज्ञानमवाप्नोति शक्तामोक्ष्यां च गच्छति।॥५॥ शक्तं यन्न विरागाय यद्धर्माय न शांतये॥ किं तेन पद्यते तापि काकवासितमेवतत्॥६॥ षंडषंडेषु पांडित्यं क्रियक्रीतं च मैथुनम्॥ भोजनं च पराधीनं त्रयः पुंसां विडंबनम्॥७॥ पादं पादार्धपादं वा आहारेश्च सुभाषितम्।। मूर्षोपि प्राज्ञतां याति नदीभिः सागरे यथा॥८॥ सेवितव्यो महान् रक्षः फलछायासमन्वितः॥ यदि दैवात् फलं नास्ति छाया केन निर्वायते॥९॥ इति श्रीलघुचाणक्ये राजनीतीशास्त्रे॥ प्रथमोध्यायः॥१॥

- पाण्डुलिपि की पुष्पिका-

अश्वः सुप्तो गजोमत्रोगावः प्रथमो सूतिका।। अन्तः पुरगतो राजा दुरतः परिवर्जयेत्॥११॥ यस्य नास्ति स्वयं प्राज्ञाशास्त्रं तस्य करोति किम्॥ लोचनाभ्यां विहीनस्य दर्पणः किं करिष्यति॥१२॥ गुह्येषु क्रियतां यस्तं किमाटायैः प्रयोजनम्॥ विक्रीयं तेन घंटानि गावः क्षीरविवर्ज्जताः॥१३॥ पंडितेषु गुणः सर्वेमुर्षे दोषास्तकेवलाः॥ तस्मान्मुर्षसहस्त्रषु प्राज्ञमेकोनलल्यते॥१४॥ अर्त्तिशोकमयत्राणां प्रीतिविश्रामभाजनम्॥ केन रत्नमिदं सृष्टं मित्रमित्यक्षरद्वयम्॥१५॥ आज्ञायुक्तशरीरस्य किं करिष्यति शत्रवः॥

धत्रेण नहयुक्तस्य वारि धारातपं यथा॥ १६॥ न राज्ञा सहमित्रवनसर्यो निर्विषः क्वचित्॥ न कुकुलं निर्मलं तच्च स्त्रीजनो यत्र जायते॥ १७॥ इति श्रीवृद्धचाणक्ये राजनीतिशास्त्रम्॥ अष्टमोध्यायः॥ संवत् १७४९ वश्वकसंक्रांते दिने १० सनवासरे मथरशुदि॥लिषतं शुचितराय कुडीररामचंद आत्मजः॥ संपूर्ण शुभं भवति कल्याणम्॥ ६॥

राजनीतिशास्त्र पाण्डुलिपि का चित्र

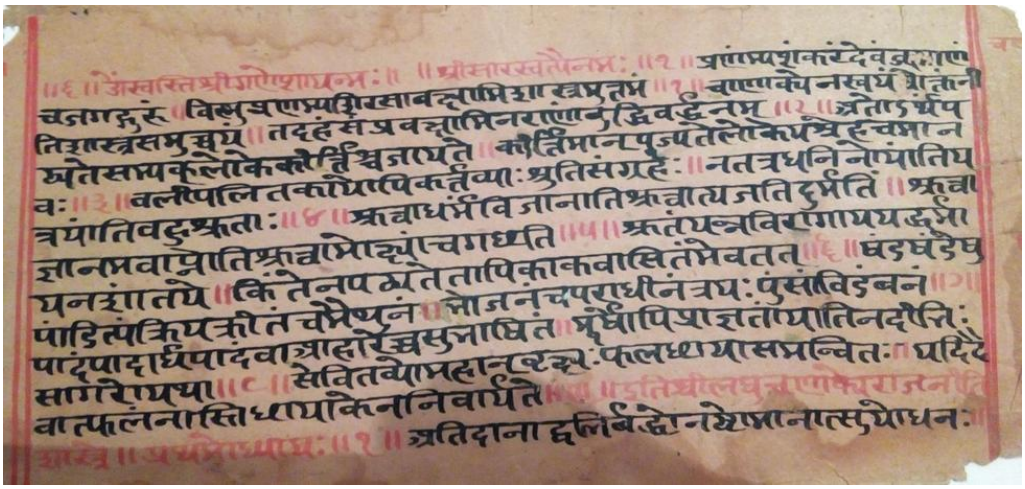

इस प्रकार सर्वेक्षण के दौरान दर्शनशास्त्र की एवं विविधविषयक पाण्डुलिपियाँ उपलब्ध हुई। इनका प्रकाशन करवाना ही संस्कृति का संरक्षण एवं संवर्धन करना है। अतः इनको लघुशोधप्रबन्ध में संकलित करके शोधार्थी ने वामन प्रयास किया है।

उपसंहार

भारतीय ज्ञानपरम्परा की आधारशिला वैदिकसाहित्य की पृष्ठभूमि मानी जाती है। इस साहित्य में ज्ञान का विपुल भण्ड़ार ज्ञान की गंगा में प्रवाहमान होते हुए अनादि काल से अग्रसित है। इनकी शाखाएँ चतुर्विध वेदों से लेकर संहिता-ब्राह्मण-आरण्यक एवं उपनिषद् पर्यन्त वेदाङ्ग सहित प्रस्फुटित हो रही है।

इनकी विविध शाखाओं का पतन काल के ग्रास में चला गया है। अतः इसके संरक्षण में विद्वानों एवं शोधार्थियों ने अपना बहुमूल्य योगदान दिया है। स्वामी दयानन्द सरस्वती जैसे ऋषियों ने ज्ञानपरम्परा को सुरक्षित करने के लिए जीवनपर्यन्त साधना की है। इसकी शाखाओं अधिकतर शाखाएँ लुप्त हो गई हैं। "महर्षि सान्दीपनि वेद-विद्या प्रतिष्ठान" उज्जैन (म.प्र) आदि संस्थाएँ वर्तमान समय में इसके संरक्षण एवं संवर्धन के लिए अपनी भूमिका अदा कर रही हैं। इनके ऊपर आधारित पाण्डुलिपियाँ भारत के संग्रहालयों में कीडों द्वारा नष्ट की जा रही है।

प्रस्तुत लघुशोधप्रबन्ध को चयन करने का औचित्य कुरुक्षेत्र जनपद में उपलब्ध भारतीय ज्ञान परम्परा पर लिखित पाण्डुलिपियों को शोधहेतु प्रकाश में लाने के साथ-साथ इनका संरक्षण एवं संवर्धन करना भी है। कुरुक्षेत्र जनपद में सर्वेक्षण के दौरान मुख्यतः अधोलिखित पाण्डुलिपियाँ उपलब्ध हुई हैं-

1. वैदिक साहित्य की पाण्डुलिपियाँ :-

वेद की पाण्डुलिपियाँ- वेदस्तुति टीका, पितृसंहिता एवं धर्नुविद्या।

वेदाङ्ग की पाण्डुलिपियाँ- प्रस्तावज्ञानबोध, तद्धितोपदेश, भाषानुशासन, प्रत्याख्यात संग्रह, रत्नद्यौत, योगशतक, मञ्जीर, योगमालिका, सप्तनाडीचक्र, हस्तमाला टीका।

आयुर्वेद की पाण्डुलिपियाँ- फिरंग प्रकाश, कल्प वैद्यक, चिकित्सा सागर एवं बेबालचिकित्सा।

2. **लौकिकसाहित्य की पाण्डुलिपियाँ :-** वीरसिंहावलोकन, धनञ्जयविजय, चित्रध्याननाटकदीप, श्लोकव्याख्या, बुधाष्टमी कथा, जीवितक्रिया एवं लाक्षणिक ग्रन्थ- शितिकण्ठ विबोध(काव्यप्रकाश की अपूर्ण पाण्डुलिपि)।

3. **दर्शनशास्त्र एवं विविधविषयक की पाण्डुलिपियाँ** :- ब्रह्मात्मबोध, माथुरी एवं विविध विषय की पाण्डुलिपि- उपदेशविषयानन्द, सौभाग्यार्चन, कुमारी पूजन विधि, दुर्गा दीपदान विधि एवं राजनीतिशास्त्र।

प्रस्तुत लघुशोधप्रबन्ध के संकलन हेतु अधोलिखित विद्याकेन्द्रों पर सर्वेक्षण किया गया-

- पाण्डुलिपि मिशन, जवाहर लाल नेहरु पुस्तकालय

  कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र (हरियाणा)।
- धरोहर संग्रहालय, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र।
- श्रीकृष्ण संग्रहालय, कुरुक्षेत्र, हरियाणा।
- जयन्ती संग्रहालय, जीन्द, हरियाणा।
- महर्षि कपिल संग्रहालय, फतेहपुर-पुंडरी,कैथल, हरियाणा।
- पाण्डुलिपि विभाग, केन्द्रीय पुस्तकालय, पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला (पंजाब) ।
- केन्द्रीय पुस्तकालय, संपूर्णानन्द विश्वविद्यालय, बनारस (उ.प्र.)।

अतः इन विद्याकेन्द्रों में सर्वेक्षण करके उपलब्ध पाण्डुलिपियों को संकलित करके लघुशोधप्रबन्ध प्रस्तुत किया गया है। इनकी सुरक्षा हेतु अधोलिखित उपाय होने चाहिए। सरकार एवं सभी विश्वविद्यालयों के महान् विद्वानों एवं शोधार्थियों को इन नियमों का पालन करने हेतु संकल्पबद्ध होना चाहिए।

सुझाव-

- प्रत्येक विश्वविद्यालय में पाण्डुलिपियों के लिए अलग विभाग होना चाहिए।
- पाण्डुलिपियों के संरक्षण के लिए एक समिति होनी चाहिए।
- इनके लिए लघु-लघु संगोष्ठियों का आयोजन होना चाहिए।
- पाण्डुलिपियों के रख-रखाव के लिए उत्तम व्यवस्था होनी चाहिए।
- केन्द्र सरकार को पाण्डुलिपियों के संरक्षण हेतु धनराशि एवं बिल पास होना चाहिए।
- पाण्डुलिपियों के संरक्षण के लिए विभिन्न लिपियों का ज्ञान विद्यार्थियों को करना चाहिए, जिससे विद्यार्थी पाण्डुलिपि के प्रति रुचि लेगें।

एवं सुस्पष्ट है कि यह ज्ञान संस्कृति हमारी प्राचीन धरोहर है। इसकी सुरक्षा एवं संरक्षण हमारा नैतिक कर्त्तव्य है और यही वेदादेश है-

"कृण्वन्तो विश्वमार्यम्"

सन्दर्भ-ग्रन्थ सूची (Bibliography)

प्राथमिक स्त्रोत :-

अथर्ववेद, व्या. कम्बोज जियालाल, विद्यानिधि प्रकाशन,खजूरी खास, दिल्ली : 2004.

अथर्ववेदसंहिता, सं. सिंह नागशरण, नागपब्लिशर्स,दिल्ली : 1987.

अथर्ववेद भाष्यम्, व्या. सिद्धान्तालंकार हरिशरण, भगवती प्रकाशन, दिल्ली :1999.

अलंकारसर्वस्वम् (राजानक रुय्यकप्रणीत), भारतीय विद्यानिधि प्रकाशन, वाराणसी : 1982.

अग्नि पुराण (वेदव्यासप्रणीत), गीता प्रेस, गोरखपुर (उत्तर प्रदेश) : 2005.

अष्टाध्यायी (पाणिनिप्रणीत), व्या. ईश्वरचन्द्रः,चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान,दिल्ली : 2004.

आपस्तम्बस्मृतिः, मिश्र टी. प्रयाग नारायण, ज्ञानभारती पब्लिकेशन्स, दिल्ली : 2005.

ईशादि नौ उपनिषद्, शाङ्करभाष्यार्थ (हिन्दी अनु.) गीताप्रेस गोरखपुर : वि. 2068.

ईशादि नौ उपनिषद्, शाङ्करभाष्यार्थ (हिन्दी अनु.) गीताप्रेस गोरखपुर : वि. 2060.

ईशोपनिषद्, अनु. झा तारणीश, रामनारायण लाल एण्ड कम्पनी,इलाहाबाद.

उपनिषद्शाङ्करभाष्य, गीताप्रेस,गोरखरपुर.

ऋग्वेद, व्या. कम्बोज जियालाल, विद्यानिधि प्रकाशन, खजूरी खास, दिल्ली : 2004.

ऋग्वेदभाष्य, व्या. सिद्धान्तालंकार हरिशरण, भगवती प्रकाशन, दिल्ली :1997.

ऋग्वेदसंहिता, तिवारी शशि, ओरियण्टल पब्लिशर्स,दिल्ली : 2002.

ऋग्वेदभाष्यभूमिका (सायणाचार्य), सं. पाण्डेय श्रीकान्त, भारतीय विद्या प्रकाशन,दिल्ली : 2003.

औचित्यविचारचर्चा (क्षेमेन्द्रप्रणीत), व्या. मोहन श्रीब्रज, चौखम्बा विद्याभवन,वाराणसी : 1992.

कठोपनिषद्, शर्मा भीमसेन, हरियाणा साहित्य संस्थान,गुरुकुल झज्जर,रोहतक : 2000.

काव्यप्रकाश (मम्मटप्रणीत),व्या. सिद्धान्तशिरोमणि विश्वेश्वर,ज्ञानमण्डल लिमिटेड, वाराणसी : 1960.

काव्यप्रकाश (नागेश्वरी टीका सहित), चौखम्बा संस्कृत पुस्तकालय,बनारस : 1981.

काव्यालंकार (भामहप्रणीत), अनु. शर्मा रमण कुमार, विद्यानिधि प्रकाशन, दिल्ली : 1994.

काव्यादर्श (दण्डीप्रणीत), अनु. शास्त्री शिवनारायण, परिमल पब्लिकेशन्स,दिल्ली.

गरुड पुराण, सं. शास्त्री जे.एल., मोतीलाल बनारसीदास,दिल्ली : 1980.

छान्दोग्योपनिषद्, भा. शर्मा शिवशंकर, हरियाणा साहित्य संस्थान,गुरुकुल झज्जर,रोहतक : 2000.

ध्वन्यालोक (आचार्य आनन्दवर्धनप्रणीत), व्या. पाठक जगन्नाथ, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी : 1997.

नाट्यशास्त्र (भरतमुनिप्रणीत), अनु. केतकर गोदावरी वासुदेव,परिमल पब्लिकेशन्स, दिल्ली : 1998.

न्यायसूत्र (महर्षि गौतमप्रणीत), अनु. विद्याभूषण सतीश चन्द्र (अग्रेंजी भाषा में), न्यू भारतीय बुक कार्पोरेशन,दिल्ली : 2003.

पद्मपुराण, सं. देशपाण्डे एन. ए., मोतीलाल बनारसीदास,दिल्ली : 1988.

पातञ्जलयोगसूत्र (पातञ्जलिप्रणीत), व्या. सिंह अमलधारी, भारतीय विद्या प्रकाशन :2000.

ब्रह्मसूत्र (बादरायणप्रणीत), अनु. शर्मा रामकरण, भारतीय विद्या प्रकाशन : 2004.

ब्रह्मसूत्र, शर्मा राममूर्ति, भारतीय विद्या प्रकाशन, दिल्ली :2004.

ब्रह्मपुराण,सं शास्त्री जे.एल., मोतीलाल बनारसीदास,दिल्ली : 1985.

ब्रह्माण्डपुराण, सं. वासुदेव गणेश, मोतीलाल बनारसीदास,दिल्ली : 1985.

भागवतपुराण, सं. शास्त्री जे.एल., मोतीलाल बनारसीदास,दिल्ली : 1976.

मनुस्मृति (मनुप्रणीत), व्या. कुमार सुरेन्द्र, साहित्य प्रचार ट्रस्ट्, दिल्ली : 2000.

महाभाष्यम् (महर्षि पातञ्जलिप्रणीत), व्या. मीमांसक युधिष्ठिर, रामलालकपूर ट्रस्ट, सोनीपत : 1992.

महाभारत (वेदव्यासप्रणीत), सं. शास्त्री पाण्डे रामनारायण दत्त, गीता प्रेस गोरखपुर :1980.

मीमांसासूत्र (जैमिनिप्रणीत), सन्दल मोहन लाल, मोती लाल बनारसीदास, वाराणसी : 1999.

यजुर्वेद, व्या. कम्बोज जियालाल, विद्यानिधि प्रकाशन,खजूरी खास, दिल्ली : 2004.

यजुर्वेद संहिता, सं. प्रताप सुरेन्द्र , नाग पब्लिशर्स,दिल्ली : 1990.

यजुर्वेद संहिता, सं. आर्य रवि प्रकाश, परिमल पब्लिकेशन्स,दिल्ली : 2002.

यजुर्वेदभाष्य, व्या. सिद्धान्तालंकार हरिशरण, भगवती प्रकाशन, दिल्ली : 1998.

याज्ञवलक्यस्मृति (याज्ञवलक्यप्रणीत), व्या. काव्यतीर्थ रामनारायण, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली : 2002.

रसगंगाधर (पंडितराज जगन्नाथप्रणीत), व्या. शर्मा राममूर्ति, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी : 2000.

वक्रोक्तिजीवितम् (धनञ्जय एवं कुन्तक प्रणीत), व्या. सिद्धान्तशिरोमणि विश्वेश्वर,हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय : 1995.

वाक्यपदीयम् (भर्तहरिप्रणीत),व्या. अवस्थी शिवशंकर, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी : 2006.

वैशेषिकसूत्रम् (महर्षि कणादप्रणीत),सं. मिश्र नारायण, चौखम्बा संस्कृत सीरिज, वाराणसी : 1966.

वामन पुराण, (वेदव्यासप्रणीत),व्या. जोशी कन्हैयालाल, परिमल पब्लिकेशन्स, शक्ति नगर, दिल्ली : 2005.

सामवेद, व्या. कम्बोज जियालाल, विद्यानिधि प्रकाशन, खजूरी खास, दिल्ली : 2004.

सामवेदसंहिता, सं. सामाश्रमी सत्यव्रत, मुंशीराम मनोहर लाल, दिल्ली :1983.

सामवेदभाष्यम्, व्या. सिद्धान्तालंकार हरिशरण, भगवती प्रकाशन, दिल्ली : 1999.

साहित्यदर्पणम् (आचार्य विश्वनाथप्रणीत),व्या. शर्मा पाराशर योगेश्वर दत्त, नाग पब्लिशर्स, जवाहर नगर दिल्ली : 2000.

सर्वदर्शनसंग्रह (माधवाचार्यप्रणीत), अभयंक वासुदेव शास्त्री, पूना भटनागर ओरियन्टल रिसर्च इन्सीट्यूट : 1978.

षडदर्शनसूत्रसंग्रहः, सं. गुप्तचैतन्य जे.एल., चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, दिल्ली :2004.

श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण (महर्षि वाल्मीकिप्रणीत),गीताप्रेस गोरखपुर : 2013.

श्रीमद्भगवद्गीता, भा. भार्गव दयानन्द, हंसा प्रकाशन, जयपुर : 2009.

श्रीमद्भगवद्गीता सारसंग्रह, अनु. अहारनहल्लि कृष्ण,पूर्णप्रज्ञ संशोधन मन्दिरम्, बेङ्गलूरु : 2011.

द्वितीयक स्त्रोत :-

अलंकार, वीरेन्द्र कुमार, *हरियाणा की संस्कृत-साधना*,हरियाणा संस्कृत अकादमी :2009.

आचार्य प्रकाश, *वेदाङ्गपरिचय*, आर्षशोध संस्थान, रंगारेड्डी (आंध्रप्रदेश) : 2000.

ओझा, गौरीशंकर हीराचन्द, *भारतीय प्राचीन लिपिमाला*, मुन्शीराम मनोहरलाल, दिल्ली

कत्रे, डॉ. एम.एस.,तिवारी, उदयनारायण (अनु.), *भारतीय पाठालोचन की भूमिका*, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल.

काणे, म.म. पी.वी., *संस्कृतकाव्य शास्त्र का इतिहास*, मोतीलाल बनारसीदास,दिल्ली,सं : 2000.

कुमारी किरण, *वैदिक साहित्य एवं संस्कृति*, न्यू भारतीय बुक कॉर्पोरेशन, दिल्ली : 2001.

जोन्स, सरविलियम, *कैटेलॉग ऑफ संस्कृत एण्ड अदर ओरियएण्टल मैन्यूस्क्रिप्टस*, लन्दन :1807.

पाठक, जितराम, *भारतीय काव्यशास्त्र की भूमिका*, अनुपम प्रकाशन, पटना :1989.

भट्टाचार्य,विश्वनाथ, *साहित्यविवेक*, मनीषा प्रकाशन,वाराणसी : 1975.

सत्येन्द्र, *पाण्डुलिपिविज्ञान*, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर.

गोस्वामी महाप्रभुलाल, *मीमांसादर्शनम्*, तारा बुक एजेन्सी, वाराणसी : 2000.

दत्त पं. भगवत्, *वैदिक वाङ्मय का इतिहास*, प्रव प्रकाशन, नई दिल्ली : 2001

नगेन्द्र एवं तारकनाथ बाली, *भारतीय काव्यसिद्धान्त*, हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय,दिल्लीविश्वविद्यालय,दिल्ली : 1969.

वैद्य सी. वी., *वैदिक वाङ्मय का इतिहास*, परिमल पब्लिकेशन्स, शक्ति नगर, दिल्ली : 2004.

वाजपेयी कृष्णदत्त, *भारतीय पुरालिपिविद्या*, विद्यानिधि प्रकाशन, खजूरीखास, दिल्ली.

सरस्वती स्वामी जगदीश्वरानन्द, *षडदर्शनम्*, विजय कुमार गोविन्दराम हासानन्द, दिल्ली : 2000.

शर्मा रामदत्त, *संस्कृत साहित्य को हरियाणा का योगदान*, हरियाणा संस्कृत अकादमी, सं : 1990.

शर्मा गणेश दत्त, *ऋग्वेद में दार्शनिक धरातल*, उर्मिला प्रकाशन, गाजियाबाद (उ.प्र.): 2006.

शर्मा गणेश दत्त, *वैदिक चिन्तन की धाराएँ*, उर्मिला प्रकाशन, गाजियाबाद (उ.प्र.) : 2006.

शर्मा दिनेश एवं रामगोपाल, *पाण्डुलिपि सम्पादन कला*, प्रभात प्रकाशन, २०५ चावडी बाजार, दिल्ली.

शास्त्री उदरवीर,*सांख्यदर्शनम्*,विजयकुमार गोविन्दराम हासानन्द, दिल्ली : 2007.

शास्त्री उदरवीर*, न्यायदर्शन*, विजयकुमार गोविन्दराम हासानन्द, दिल्ली : 2003.

शास्त्री उदरवीर, *योगदर्शनम्*, विजयकुमार गोविन्दराम हासानन्द, दिल्ली : 2000.

शास्त्री धर्मेन्द्र, *भारतीय दर्शनशास्त्र*, मोती लाल बनारसीदास,वाराणसी : 1953.

त्रिपाठी राममूर्ति, *भारतीय काव्यविमर्श*, वाणी प्रकाशन,दिल्ली : 2009.

सर्वेक्षण स्थान :-

जवाहर लाल नेहरु पुस्तकालय, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र(हरियाणा)।

धरोहर संग्रहालय,कुरुक्षेत्र(हरियाणा)।

श्रीकृष्ण संग्रहालय, कुरुक्षेत्र (हरियाणा)।

कपिस्थल पुस्तकालय, फतेहपुर पुण्डरी, कैथल (हरियाणा)।

जयन्ती संग्रहालय, जीन्द (हरियाणा)।

पंजाबी पुस्तकालय, पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला (पंजाब)।

सम्पूर्णनन्द विश्वविद्यालय, बनारस (उत्तर प्रदेश)।

कोशग्रन्थ :-

अवस्थी,बच्चूलाल, *भारतीय दर्शनबृहत्कोश*, ज्ञानशारदा पब्लिशिंगहाउस, दिल्ली : 2004.

अवस्थी, बच्चूलाल, *भारतीय दर्शनबृहत्कोश*, शारदा पब्लिशिंगहाउस, सं : 2004.

आप्टे, वामनशिवराम, *संस्कृतहिन्दीकोश*, मोतीलाल बनारसीदास, सं :1989.

झलकीकर, भीमाचार्य, *न्यायकोशः*, भण्डारकर ओरियण्टल रिसर्च इस्टीट्यूट, पूना : 1978.

पाण्डे, उमाप्रसाद, संस्कृत-हिन्दी-अग्रेंजीशब्दकोश, कमल प्रकाशन, नवदेहली.

बुल्के, कामिल, *अग्रेंजी-हिन्दीकोश*, एस.चन्द एन्ड कम्पनी, रामनगर (दिल्ली) :2004.

सिंह, अमरः, *अमरकोशः*,निर्णयसागर प्रेस, बम्बई :1961.

शब्दकल्पद्रुमः (पांच भाग), चौखम्बा संस्कृत ग्रन्थमाला, स : 1967.

शास्त्री,दिनेशचन्द्र, *वैदिक उपमाकोश,* सत्यम् पब्लिशिंगहाऊस,दिल्ली.

शुक्ल, दीनानाथ, *भारतीय दर्शन परिभाषा कोश,* प्रतिभा प्रकाशन, दिल्ली :1993.

वाचस्पत्यम् (छह भाग), चौखम्बा संस्कृत ग्रन्थमाला ग्र. सं. ९४,वाराणसी : 1969.

वर्णेकर,श्रीधर भास्कर, *संस्कृत वाङ्गमय कोश,*भारतीय भाषा परिषद्,कलकत्ता.

हंसराज एवं भगवद्दत्त, *वैदिक कोश,* विश्वभारती अनुसंधान परिषद्,ज्ञानपुर,वाराणसी : 1992.

अन्तर्जालीय स्त्रोत :-

- http://www.namami.com
- http://www.ignca.gov.com
- http://www.jaingranths.com
- http://www.hsa.ac.in
- http://www.kuk.ac.in
- http://www.mdurohtak.ac.in